॥ ॐ भूर्भुवः स्वः तत्सवितुर्वरेण्यं भर्गो देवस्य धीमहि धियो यो नः प्रचोदयात् ॥

May Allmighty Illuminate our intellect and inspire us towards the righteous path

सकारात्मक परिवर्तन का संवाहक

संस्कृति संचार

दीक्षांत-2012 विशेषांक | देव संस्कृति विश्वविद्यालय (हरिद्वार, उत्तराखंड) | दिसंबर 2012 | वर्ष : 04, अंक 11, पृष्ठ : 12 | मूल्य : ₹ 5.00

गंगा तट पर अद्भुत, अनुपम

अद्वितीय दीक्षांत समारोह

देव संस्कृति विश्वविद्यालय का चौथा आयोजन

● पत्रकारिता एवं जनसंचार विभाग

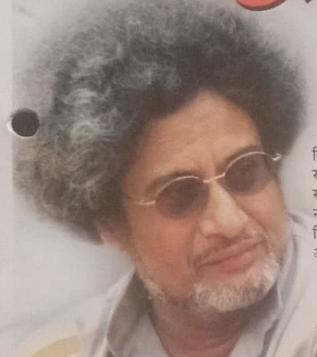

देसंविवि, हरिद्वार : धर्मनगरी हरिद्वार का पावन तट 9 दिसंबर, 2012 रविवार को शिक्षा-विद्या, धर्म-संस्कृति, राजनीति, अध्यात्म एवं विज्ञान के एक साथ अभूतपूर्व संगम का साक्षी होने जा रहा है। युगऋषि के तप से संस्कारित भूमि में एक नई सृष्टि रूपाकार लेने वाली है। अवसर है देवसंस्कृति विश्वविद्यालय के चतुर्थ दीक्षांत समारोह का, जिसके मुख्य अतिथि हैं देश के प्रथम नागरिक माननीय प्रणब मुखर्जी। विवि के कुलाधिपति डॉ. प्रणव पंड्या के अनुसार, राष्ट्रपति के स्वागत की तैयारियां पूरी हैं और विवि में राष्ट्रपति की गरिमामयी उपस्थिति में विचारमंथन के पल एक अविस्मरणीय घटना बनने जा रहे हैं।

उनके विशिष्ट उद्बोधन के श्रवण के लिए जहां 1370 डिग्रीधारी प्रतिभागियों सहित 5000 के लगभग दर्शक होंगे, वहीं इसके लाइव प्रसारण के माध्यम से करोड़ों गायत्री परिजन देश भर के कोने-कोने एवं विश्वभर के लगभग 80 देशों से भागीदार बनने जा रहे हैं। उपाधि प्राप्त करने वालों में पीएचडी छात्र, परास्नातक, स्नातक, डिप्लोमा एवं सर्टिफिकेट विद्यार्थी होंगे। पहली बार दूरस्थ शिक्षा से जुड़े विद्यार्थी भी दीक्षांत में शामिल हो रहे हैं। विगत तीन वर्षों के दौरान विभिन्न पाठ्यक्रमों में अव्वल रहे 37 मेधावी छात्रों को स्वर्ण पदक से सम्मानित किया जाएगा। वहीं 77 विद्यार्थियों को पीएचडी की उपाधियां मिलेंगी। मुख्य अतिथि के रूप में राष्ट्रपति के अतिरिक्त अति विशिष्ट अतिथि के रुप में उत्तराखंड के राज्यपाल माननीय अजीज कुरैशी, मुख्यमंत्री विजय बहुगुणा तथा अन्य मंत्रीगण व देश के गणमान्य व्यक्ति भी इसमें शामिल होंगे। कार्यक्रम विश्वविद्यालय परिसर के आरएंडडी ग्राउंड में सम्पन्न हो रहा है और आ रहे प्रतिभागियों के ठहरने की व्यवस्था शांतिकुंज एवं विवि परिसर में की गई है। प्रशासन की ओर से सुरक्षा की विशेष व्यवस्था की गई है। इस बार के समारोह की एक विशेषता इसमें पास-आउट एल्यूमनी विद्यार्थियों का विशेष मिलन एवं आपसी विचारमंथन है, जिससे आपसी आदान-प्रदान के प्रभावी भावी कार्यक्रमों का निर्धारण होना है।

मानद उपाधियां : समारोह में अपने-अपने क्षेत्रों में विशिष्ट उपलब्धियों एवं योगदान के लिए तीन मानद उपाधियां भी दी जा रही हैं। पहली, नरेन्द्र कोहली, हिंदी साहित्य के क्षेत्र में आध्यात्मिक संस्पर्श लिए मौलिक सृजन के लिए, जो व्यक्ति उत्कर्ष एवं राष्ट्र के उत्थान के लिए अमूल्य है। दूसरी, मार्को फैरिनि-सेंट्रो स्टडी भक्तिवेदांत के संस्थापक एवं अध्यक्ष, एक निस्वार्थ भाव से वैदिक ज्ञान के वैश्विक दूत के रूप में विश्व कल्याण के लिए विशिष्ट योगदान के लिए। तीसरी, मस्तुदा सद्दाक, नारी सशक्तीकरण एवं सामाजिक विकास के क्षेत्र में अभूतपूर्व नेतृत्व के लिए। कुलाधिपति के अनुसार, विश्वविद्यालय प्रशासन राष्ट्रपति प्रणब मुखर्जी के स्वागत के लिए पूरी तरह से तैयार है और आशान्वित है कि उनकी गरिमामयी उपस्थिति में दीक्षांत समारोह एक यादगार घटना साबित होगा।

युगऋषि प. श्रीराम शर्मा के सपनों का यह विश्वविद्यालय देवसंस्कृति के मानकों एवं मूल्यों पर आधारित है। यहां का आध्यात्मिक वातावरण एवं पाठ्यक्रमों से लेकर दैनिक अनुशासन का स्वरुप कुछ ऐसा है कि इसे युवकों को गढ़ने की प्रयोगशाला के रुप में विकसित किया गया है। शिक्षा के क्षेत्र में मूल्यों के समावेश को लेकर कुछ मौलिक प्रयोग यहां चल रहे हैं जो अन्य विश्वविद्यालयों एवं शिक्षण संस्थानों के लिए भी अनुकरणीय हैं। सारा देश इनको अपना सकता है।

डा. प्रणव पंड्या, कुलाधिपति (देसंविवि)

हमें आप पर नाज़ है

पूरे देश को आपके गरिमामयी व्यक्तित्व एवं कुशल नेतृत्व पर पूर्ण आस्था एवं नाज है।

पश्चिमी बंगाल के निरानी गांव, जिला वीरभूमि में जन्में 76 वर्षीय श्री प्रणवदा भारत के 13वें नागरिक एवं 14वें राष्ट्रपति हैं। इतिहास, राजनीति शास्त्र एवं कानून में शिक्षा पारंगत, कुछ वर्ष अधिवक्ता, पत्रकार एवं शिक्षक के रूप में कार्य कर चुके हैं। लेकिन आपकी पहचान एक कुशल राजनैतिज्ञ के रुप में सर्वव्यापी है। विलक्षण स्मरण शक्ति एवं कुशाग्र बुद्धि के लिए मान्य, प्रणवदा की अध्ययन में विशेष रुचि हैं। आप टैगोर दर्शन से प्रभावित एवं डेंग जिओपिंग को अपना आदर्श मानते हैं। एक जिज्ञासु पर्यटक के साथ आप कला और संस्कृति के संरक्षक हैं। दुर्गा पूजा आपके जीवन का अभिन्न अंग है। आप बतौर एक राजनेता विदेश, रक्षा, वाणिज्य, वित्त जैसे महत्वपूर्ण मंत्रालय संभाल चुके हैं। साथ ही सर्वश्रेष्ठ सांसद से लेकर राष्ट्र के दूसरे सर्वोच्च पुरस्कार पदमश्री से सम्मानित हैं। एक गंभीर विचारक के रूप में वियोण्ड सर्वाइवल-इमर्जिंग डायमेंशन्स ऑफ इंडियन इकॉनोमी, ऑफ द ट्रैक, सागा ऑफ स्ट्रग्ल एण्ड सेक्रीफाइज, चैलेन्ज बिफोर द नेशन आपकी महत्वपूर्ण कृतियाँ हैं।

भारत गणराज्य का राष्ट्रपति पद आपके गरिमामयी व्यक्तित्व से सुशोभित है। पूरे राष्ट्र को आपके कुशल नेतृत्व पर पूर्ण आस्था एवं नाज है।

1 नवंबर 2004

स्व. भैरो सिंह शेखावत (तत्कालीन उपराष्ट्रपति)
मुख्य अतिथि (प्रथम दीक्षांत समारोह)

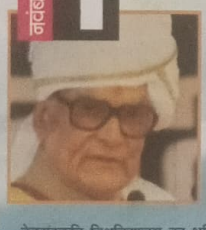

देवसंस्कृति विवि विद्यार्थियों को शिक्षा के साथ संस्कार देने का एक महनीय कार्य कर रहा है। अपनी सांस्कृतिक एवं आध्यात्मिक विरासत से दूर होती पीढ़ी के लिए इसके पाठ्यक्रम एवं कार्यक्रम संजीवनी की तरह हैं। बिना किसी व्यवसायिक बुद्धि के पावन भाव से शिक्षा का प्रसार देवसंस्कृति विश्वविद्यालय को अन्य बाजारु विश्वविद्यालयों से अलग करता है। जब तक यह भाव खंडित नहीं होता, देवसंस्कृति विश्वविद्यालय का भविष्य उज्जवल है। आचार्यश्री से गायत्री दीक्षा की ही फलश्रुति है कि एक गाँव से पला-बढ़ा यह बालक राष्ट्र-सेवा के इस मुकाम तक पहुंच पाया।

2 दिसंबर 2006

डा. एपीजे अेदुल कलाम (तत्कालीन राष्ट्रपति)
मुख्य अतिथि (द्वितीय दीक्षांत समारोह)

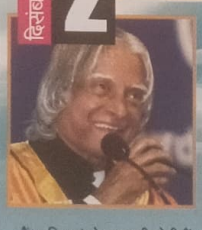

भारत की समृद्ध आध्यात्मिक विरासत ही उसे विश्व के अन्य राष्ट्रों के बीच एक विशिष्ट पहचान देती है। जीवन मूल्यों का यह उर्वर आधार रही है। ऋषियों द्वारा दिया गया ज्ञान पूरी तरह से विज्ञानसम्मत रहा है, जिसका अनावरण आज युग की आवश्यकता है। देवसंस्कृति विवि इस दिशा में महत्वपूर्ण कार्य करता प्रतीत होता है। विज्ञान और अध्यात्म के समन्वय की तेकर यहां चल रहे प्रयास सराहनीय हैं। प्रतिभाएं दो तरह की हैं, एक वे जो अवसर खोजती हैं व दूसरी वे, जो अवसर विनिर्मित करती हैं। आज आवश्यकता ऐसी शिक्षा की है जो अवसर का निर्माण करने में सक्षम प्रतिभाओं को गढ़ सके।

3 दिसंबर 2009

मार्गरेट आल्वा (तत्कालीन राज्यपाल)
मुख्य अतिथि (तृतीय दीक्षांत समारोह)

विवि अपने दिव्य संरक्षक आचार्य श्रीराम शर्मा जी के द्वारा देखे स्वप्न के अनुरुप आगे बढ़ रहा है। देसंविवि अन्य विश्वविद्यालयों से कई मायने में अलग है, क्योंकि यह विद्यार्थियों को एक नई जीवन दृष्टि और शिक्षा जगत को नई-नई राहें प्रदान कर रहा है। निसन्देह रुप से विवि की प्रेरणा शक्ति इसकी मातृसंस्था शांतिकुंज है। दीक्षान्त से पूर्व तीन माह की समाज सेवा का इंटर्नशिप एक अभिनव पहल है, जिसका अनुसरण अन्य शैक्षणिक संस्थानों को करना चाहिए। देश-विदेश से आए विद्यार्थियों को मूल्यपरक शिक्षण देता यह विवि उत्तराखंड का नाम रोशन कर रहा है।

भारत को एकता के सूत्र में पिरोता देव संस्कृति विश्वविद्यालय

डीएसवीवी में मिलती है मिनी इंडिया की झलक, विश्वविद्यालय में अध्ययनरत हैं 22 से अधिक राज्यों के लगभग 822 विद्यार्थी

● पत्रकारिता एवं जनसंचार विभाग

देसंविवि, हरिद्वार : 28 राज्य, 1618 भाषाएं, 6400 जातियां, 6 धर्म, 6 एथनिक ग्रुप और 29 मुख्य पर्व त्यौहार, हमारे देश भारत की मुख्य पहचान हैं। यहां दीवाली में अली और रमजान में राम बसते हैं। हमारी एकता और अखंडता की मिसालों से इतिहास भरा पड़ा है। इसी मिसाल में एक नाम और जुड़ता है उत्तराखंड के हरिद्वार जिले में स्थापित देव संस्कृति विश्वविद्यालय का।

भारतीय परंपराओं को पुनर्जीवंत एवं जाग्रत करने के लिए अखिल विश्व गायत्री परिवार ने इस विश्वविद्यालय की स्थापना की। स्थापना के 10 वर्षों की यात्रा में इस विश्वविद्यालय ने कई आयामों को छुआ। यह विश्वविद्यालय भारत की विविधता में एकता की विशेषता का एक जीता-जागता उदाहरण है।

वर्तमान में यहां 22 से अधिक राज्यों के लगभग 822 विद्यार्थी विभिन्न विषयों के अंतर्गत शिक्षा प्राप्त कर रहे हैं। जिनमें उत्तर प्रदेश के 351, उत्तराखंड के 100, मध्य प्रदेश के 96, बिहार के 84, छत्तीसगढ़ के 63, राजस्थान के 34, झारखंड के 29, दिल्ली के 11, हरियाणा के 9, हिमाचल प्रदेश के 6, उड़ीसा के 5, पंजाब के 5, गुजरात के 5, आंध्रप्रदेश के 4, महाराष्ट्र के 4, जम्मू एवं कश्मीर के 2, अरुणाचल प्रदेश, तमिलनाडु, पश्चिम बंगाल के क्रमशः एक-एक और अन्य राज्यों के 11 विद्यार्थी शामिल हैं।

विविध भाषाओं एवं विविध क्षेत्रीय संस्कृति से होने के बावजूद इन विद्यार्थियों का परस्पर प्रेम, सहयोग एवं समन्वय देखते ही बनता है। इसका श्रेय जहां एक ओर विश्वविद्यालय के आध्यात्मिक वातावरण को जाता है, वहीं दूसरी ओर कुलाधिपति डॉ. प्रणव पण्ड्या एवं स्नेह सलिला जीजी का वात्सल्य एवं यहां के शिक्षकों का कुशल मार्गदर्शन विद्यार्थियों में उत्पन्न स्वःअनुशासन उन्हें प्रेम और सौहार्द से जीना एवं रहना सिखाता है। एकता एवं सदभावना से ओतप्रोत ज्ञान के इस पावन मंदिर में शिक्षा के साथ विद्या का समावेश इसकी विभिन्न विशेषताओं में चार चांद लगाता है।

यहां के हर पल त्यौहारों के रंग सजते हैं और सबको भारतीय रंग में रंग देते हैं। यह एक ऐसा परिवार है जो विविधता लिए हुए है, परंतु इसके हर सदस्य के चेहरे एक ही मुस्कान बिखरती है, वह है एकता की दिव्य मुस्कान। हां अगर आपको इस 'मिनी भारत' के दर्शन करने हैं तो चल दीजिए, गंगा की गोद और हिमालय की छाया में अवस्थित देव संस्कृति विश्वविद्यालय के दिव्य प्रागण की ओर, यहां विविधता में खिले एकता के पुष्प आपका स्वागत करने के लिए सदैव तत्पर हैं।

अमेरिका प्रवास के दौरान वहां का हिमालय माने जाने वाले यशोमाइट पर्वत के समीप श्रद्धेय के सानिध्य में युवा चेतना शिविर संपन्न

देव संस्कृति का दिव्य प्रकाश सारी धरती पर फैलेगा

श्रद्धेय के हृद्योगार

यह मेरे जीवन का एक महत्वपूर्ण प्रवास रहा, जिसमें अमेरिका और कनाडा के उन चुने हुए युवाओं को तराशने का प्रयास किया गया, जो अगले दिनों इन देशों में ऋषि संस्कृति का व्यापक विस्तार करेंगे। बच्चों के व्यक्तित्व में आमूलचूल परिवर्तन दृष्टिगोचर हुए। वे हमसे ऐसे जुड़ गए, जैसे जन्म-जन्मांतरों से हमारे स्नेहीजन रहे हों। हमने भी पूज्यवर से जो सीखा, उसे उड़ेल दिया। उन्होंने ने भी अपने मन की गांठे खोल दी, दिल खोलकर रख दिया। इस प्रकार एक विलक्षण आध्यात्मिक वेल्डिंग हो गई। वस्तुतः देखा जाए तो यह शिविर 1973 में पूज्य गुरुदेव द्वारा शांतिकुंज में चलाए गए प्राण प्रत्यावर्तन साधना शिविर के समकक्ष फलदायी रहा। मैं चाहता हूं कि हर देश में ऐसे शिविर आयोजित किये जाएं, ताकि देव संस्कृति का दिव्य प्रकाश संपूर्ण धरा पर फैल सके।

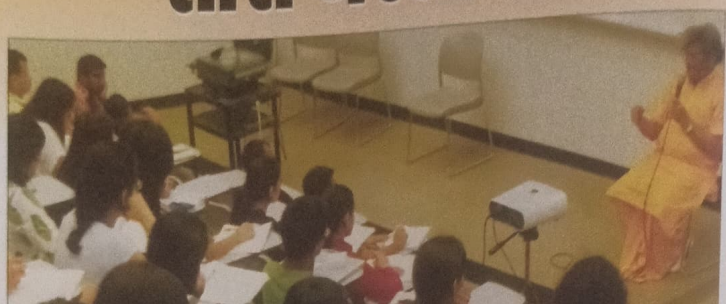

अमेरिका प्रवास के दौरान आयोजित शिविर में छात्रों को उद्बोधित करते देव संस्कृति विश्वविद्यालय के कुलाधिपति डा. प्रणव पंड्या।

● प्रिया मित्तल, जेएमसी

देसंविवि, हरिद्वार : देव संस्कृति की पताका को विश्वपटल पर फहराने के संकल्प को पूरा करने के लिए देसंविवि के कुलाधिपति डॉ. प्रणव पण्ड्या पूर्ण निष्ठा और ईमानदारी के साथ आगे बढ़ रहे हैं।

डॉ. साहब के अमेरिका प्रवास के दौरान वहां का हिमालय माने जाने वाले यशोमाइट पर्वत के समीप कुलाधिपति जी के सानिध्य में युवा चेतना शिवर संपन्न हुआ।

यह अपने आप में एक अनोखा प्रयोग था। इसमें न केवल भारतीय संस्कृति के संस्कारों से युवाओं को अवगत कराया गया बल्कि व्यवहारिक जीवन में अपनाने का महत्व भी बताया गया। आज की शारीरिक परेशानियों के लिए प्रज्ञायोग व्यायाम को वैदिक मंत्रों के साथ कराया गया। मानसिक तनाव एवं चिंताओं को दूर करने के लिए ध्यान और मधुर संगीत की सरल विधि बताई। सात दिवसीय इस शिविर में सकारात्मक चिंतन के साथ अपने कार्य को कैसे करें-इसके स्वर्णिम सूत्रों को भी दिया गया। सद्ग्रंथों को पढ़कर वैचारिक परिवर्तन संभव है। वहां युवाओं को भारतीय संस्कृति काफी रास आई। देसंविवि में चल रहे वैज्ञानिक अध्यात्मवाद और लाइफ मैनेजमेंट को जीवन में उतारने के रहस्य को भी बताया गया।

साधकों की हृद्यानुभूतियां

शिकागो के रहने वाले पूजन पटेल ने बताया कि डॉ. साहब के सान्निध्य में हमें बहुत कुछ सीखने को मिला। अब हमें पता है कि हम पहले स्वयं को और फिर इस संसार को किस प्रकार बदल सकते हैं। हमारी अगणित समस्यों का समाधान यहां में ही हो गया। न्यूजर्सी में रहने वाली मनीषा ने बताया कि श्रद्धेय से मुलाकात के बाद मुझे अंततः एक दिशा मिल गई है। जिसके माध्यम से मैं साधना कर सकती हूं एवं मिशन और अपने परिवार के लिए खुद को परिष्कृत कर सकती हूँ। मैं आशा करती हूं कि मुझे समय-समय पर मार्गदर्शन प्राप्त करने का अवसर मिलता रहेगा। न्यूजर्सी की अश्का ने अपने अनुभव के बारे में बताया कि यह मेरे जीवन के अत्यंत विलक्षण अनुभवों में से एक है। मैं डॉ. साहब की अत्यधिक आभारी हूँ कि आपने मुझे इस शिविर में हिस्सा लेने का अवसर दिया एवं अपने अति व्यस्त कार्यक्रम में से हमसे मिलने के लिए समय निकाला।

शांति और भाईचारे का संदेश देता पीस मार्च

देसंविवि के महाकाल परिसर में पीस मार्च निकालते विभिन्न देशों से आए प्रतिभागी।

● महेंद्र, जेएमसी

देसंविवि, हरिद्वार : देव संस्कृति विश्वविद्यालय के तीसरे अंतरराष्ट्रीय योग, अध्यात्म और संस्कृति महोत्सव के पांचवे दिन विश्व शांति के लिए 18 देशों के 800 प्रतिभागियों ने भाग लिया। विश्व के सभी देशों के 203 ध्वजों के साथ विश्वविद्यालय परिसर में विश्व शांति मार्च निकाला गया। इटली के कुंडलिनी योग शिक्षक व योग धर्म सेंटर के अध्यक्ष भाई हरिसिंह खालसा के नेतृत्व में वर्ल्ड पीस मार्च का आयोजन किया गया। हरिसिंह खालसा ने बताया कि इसका उद्देश्य विश्व के सभी देशों में शांति और भाईचारा की स्थापना करना है। उनकी संस्था विश्व भर में शांति की स्थापना के लिए इस प्रकार के आयोजन करती रहती है। अभी हाल ही में कई आयोजन इटली, जापान, इंडोनेशिया, अमेरिका व अन्य देशों में कराए गए। इस मौके पर देसंविवि के कुलपति, प्रतिकुलपति एवं कुलसचिव आदि मौजूद रहे।

सेंट पीट्सबर्ग में गायत्री चेतना केंद्र की स्थापना

● ऋषभ मिश्रा, जेएमसी

देसंविवि, हरिद्वार : आदरणीय डॉ. प्रणव पण्ड्या जी के 5 से 15 अक्टूबर तक के रुस प्रवास में वे वहाँ के मूल निवासी भारतीयों की संस्कृति से रूबरु हुए। प्रवास के दौरान में सेंट पीटर्सबर्ग में 10 एकड़ भूमि में गायत्री चेतना केन्द्र की स्थापना की गई।

अखिल विश्व गायत्री परिवार के डॉ. पण्ड्या के सेंट पीटर्सबर्ग पहुँचने पर प्रथम कार्यक्रम का आयोजन स्टेट पीडागोगिकल यूनिवर्सिटी में रखा गया। कार्यक्रम का आयोजन 500 की बैठक क्षमता वाले हॉल में किया गया। इस विश्वविद्यालय में डॉ. साहब के दो व्याख्यान हुए। एक सभी विभागाध्यक्षों और प्राध्यापकों के बीच और दूसरा हेल्थ टेक्नोलॉजी एवं मनोविज्ञान के शोधार्थी विद्यार्थियों के बीच। 'मनुष्य के आध्यात्मिक विकास' पर डॉ. साहब का प्रथम उद्बोधन हुआ। विद्यार्थियों में अनेकों जिज्ञासाएँ उभरी और जिनका डॉ. साहब से संतुष्टिपूर्ण समाधान प्राप्त हुआ। द्वितीय व्याख्यान का विषय था 'हेल्थ मैनेजमेंट विथ यू ऑफ ट्रेडिशनल हेल्थ प्रैक्टिस इन इण्ड़िया'। इसमें डॉ. साहब ने आयुर्वेद, प्राकृतिक चिकित्सा, यज्ञ चिकित्सा, प्राणिक हीलिंग, पंचकर्म, योगासन, ध्यान, प्राणायाम, आदि के माध्यम से शारीरिक व मानसिक दोनों प्रकार की बीमारियों के निवारण की पद्धतियों का विस्तार पूर्वक वर्णन किया।

डॉ. साहब के रुस के मास्को पहुँचने पर गायत्री परिवार से दीक्षा ले चुके मिशन के सक्रिय कार्यकर्ताओं द्वारा पावालेम्स्काया में गायत्री महायज्ञ आयोजन किया गया। कार्यक्रम तत्व योग सेंटर में था। डॉ. पण्ड्या ने अध्यात्म के वास्तविक स्वरुप की व्याख्या करते हुए 'आज के समय की आवश्यकता-अध्यात्म' पर उद्बोधन दिया। मास्को में भारतीय राजदूत अजय मल्होत्रा ने भारतीय दूतावास में 'महात्मा गाँधी' पर संगोष्ठी आयोजित की थी। डॉ. साहब इस संगोष्ठी में मुख्य वक्ता थे। उन्होंने कहा गाँधीजी के जीवन की महान सफलताओं का आधार सत्य, अहिंसा, अपरिग्रह जैसी सिद्धियाँ है साथ ही उन्होंने इन मंत्रों को जीवन में उतारने के लिए प्रेरित किया।

कनाडा में गूंजे ऋषि परंपरा के जयकारे

देसंविवि, हरिद्वार : अखिल विश्व गायत्री परिवार के प्रमुख श्रद्धेय डॉ. प्रणव पण्ड्या के नेतृत्व में कनाडा के ऑण्टारियो शहर में युवाओं को समर्पित एक शिविर 22 से 26 जुलाई तक आयोजित किया गया। यूथ ऑफ गायत्री शीर्षक से आयोजित इस शिविर में 8 से 30 वर्ष तक के 194 युवाओं एवं 147 वरिष्ठ परिजनों ने भाग लिया। इसके अलावा महाशिविर सर्वाधिक महत्वपूर्ण 15 से 30 वर्ष के शिविरार्थियों के लिए था जिनकी संख्या लगभग 200 थी।

शिविर में व्यक्तित्व के समग्र विकास हेतु यम, नियम, आसन, प्राणयाम, ध्यान, एवं कर्मयोग, ज्ञानयोग, भक्तियोग आदि का व्यवहारिक प्रशिक्षण दिया गया साथ ही यह बताया गया कि किस तरह इन विद्याओं को अपने दैनिक जीवन में उतारकर हम व्यक्तित्व को शिखर तक ले जा सकते है।

यह शिविर हर शिविरार्थी के लिए अविस्मरणीय क्षण था, जिसमें उन्हें अखिल विश्व गायत्री परिवार के प्रमुख डा. प्रणव पण्ड्या से स्नेह, प्रेम, प्रेरणा और प्रोत्साहन पाने का अद्भुत अवसर मिला। डॉ. साहब प्रत्येक वर्ग को प्रेरणा देने के लिए वहां पहुँचे परन्तु उनका महत्वपूर्ण उद्देश्य किशोरों का उन्नयन था। छोटे बच्चों के लिए शिविर को रोचक बनाने के लिए विभिन्न प्रतियोगिताएं आयोजित की गई और विजेताओं को सम्मानित भी किया गया। किशोरों को ध्यान, प्राणायाम व योगासन आदि का अभ्यास कराया गया। डॉ. साहब ने गुरुदेव के विचारों व गीता के श्लोक को अपने संदेश का आधार बनाया। उनके उद्बोधन के बाद प्रश्नोत्तरी का आयोजन किया जाता था, जिससे शिविरार्थियों की जिज्ञासाओं का निदान हो सके। इस शिविर का संदेश 'व्यक्तित्व का समग्र विकास' और 'आगामी दशक की चुनौतिया' जैसे विषय थे। डॉ. साहब ने कहा कि जीवन की समस्त उपलब्धियाँ व्यक्ति की अपनी क्षमताओं पर आधारित होती है।

शिविर के विदाई सत्र में आदरणीय डॉ. साहब ने परम पूज्य के लेख 'अपने अंग अवयवों से' वाचन करते हुये पुज्य गुरुदेव की नैष्ठिक कार्यकर्ताओं से क्या आकांक्षाएं थी समझायीं। उन्होंने बच्चों को अपने दोष-दुर्गणों के प्रति सचेत रहकर उन्हें दूर करने और व्यकित्व निखारने के लिए प्रेरित किया, वहीं वरिष्ठ कार्यकर्ताओं को उनके गुरु निर्धारित दायित्वों की याद दिलाई।

जापान यात्रा सात दिवसीय प्रवास से लौटे डॉ. प्रणव पण्ड्या ने व्यक्त किए उद्गार

जापान के भारत प्रेम ने अत्यंत प्रभावित किया : डॉ. प्रणव पंड्या

● सुरभि, जेएमसी

देसंविवि, हरिद्वार : जापान देश की स्वच्छता, ईमानदारी, पारिवारिक मूल्यों का सम्मान, राष्ट्रप्रेम, मेहनती व्यक्तित्व, भारत के प्रति अपार प्रेम एवं आतिथ्य सेवा ने मुझको अन्य देशों की तुलना में बहुत अधिक प्रभावित किया है। जापान में भारतीय संस्कृति में ध्यान पद्धति एवं योग की अनंत संभावनायें हैं। भारतीय संस्कृति के अन्यंत निकट टेक्नोलॉजी के क्षेत्र में विश्व में अग्रणी यह देश निश्चित रूप से सूर्य उपासना करने वाला देश है। मैं इस देश के लोगों से अभिभूत हूं। यह विचार है देसंविवि के कुलाधिपति एवं अखिल विश्व गायत्री परिवार डॉ. प्रणव पण्ड्या ने जापान से सात दिवसीय प्रवास से लौटने बाद व्यक्त किए। उनकी इस यात्रा के दौरान विभिन्न कार्यक्रम आयोजित किए गए। डॉ. साहब ने बताया कि निकट भविष्य में जापान में 108 एवं 1008 कुण्डीय गायत्री महायज्ञ की भूमिका बनाई जा रही है।

सात दिवसीय जापान प्रवास के दौरान जापानी गायत्री परिजनों के साथ अखिल विश्व गायत्री परिवार के प्रमुख डा. प्रणव पंड्या।

देव संस्कृति विश्वविद्यालय में संपन्न हुई 12वीं प्रांतीय योग प्रतियोगिता

- विभिन्न आयु वर्गों में हुई योग प्रतियोगिता में 170 प्रतिभागियों ने भाग लिया
- हरियाणा पलवल में विवि की छात्रा ने दिलजीत ने जीता योगिनी सम्राज्ञी खिताब

योग प्रतियोगिताओं में लहराया देसंविवि का परचम

● सौम्या तिवारी, जेएमसी

देसंविवि, हरिद्वार : 28 अक्टूबर 2012 को देव संस्कृति विश्वविद्यालय का आनंदमयी सभागार 12वीं प्रांतीय योग प्रतियोगिता का गवाह बना।

प्रतियोगित में देव संस्कृति विश्वविद्यालय के अलावा उत्तराखंड राज्य के स्कूलों, महाविद्यालयों, विश्वविद्यालयों के विभिन्न आयु वर्ग के योग विषय के लगभग 170 छात्र-छात्राओं ने प्रतिभागिता की।

प्रतियोगिता के 8 से 14 आयु वर्ग में राहुल यादव, प्रकाश अग्रवाल, अमन कुमार, 8 से 12 आयु वर्ग में प्रज्ञा अधिकारी, दिव्या, शांभवी यादव, 15 से 21 आयु वर्ग में अभिषेक कुमार, आदित्य, आशीष कुमार,12 से 18 आयु वर्ग में आकांक्षा, स्वाती, नीलम, 18 से 24 आयु वर्ग में दिलराज कौर, सुमन चौहान, अनुसुइया नरवरे, 21 से 30 आयु में राजेश, श्लोक कुमार तथा धीरज को प्रथम, द्वितीय तथा तृतीय स्थान प्राप्त किया।

इससे पूर्व कार्यक्रम का शुभारंभ विश्वविद्यालय के कुलपति डॉ. एसडी शर्मा ने किया। इस अवसर पर उत्तराखण्ड के योग फेडरेशन के अध्यक्ष प्रो. ईश्वर भारद्वाज, महासचिव डा. एलएन जोशी तथा कार्यक्रम के मुख्य सयोजक डॉ. सुरेश लाल बर्णवाल साथ ही योग विभाग के वरिष्ठ शिक्षकगण उपस्थित रहे। विश्वविद्यालय के कुलसचिव संदीप कुमार ने प्रतिभागियों को पुरस्कार प्रदान किए गए।

गौरतलब है कि देव संस्कृति विश्वविद्यालय के मानव चेतना एवं योग विज्ञान विभाग के तहत पीएचडी, परास्नातक, परास्नातक डिप्लोमा व प्रमाण पत्र पाठ्यक्रम आदि कोर्स पढ़ाये जाते हैं। प्रारंभिक पाठ्यक्रमों में योग के वैदिक, उपनिषदीय, दार्शनिक एवं व्यावहारिक पहलुओं के साथ-साथ भारतीय वैकल्पिक चिकित्सा पद्धतियों का समावेश किया गया।

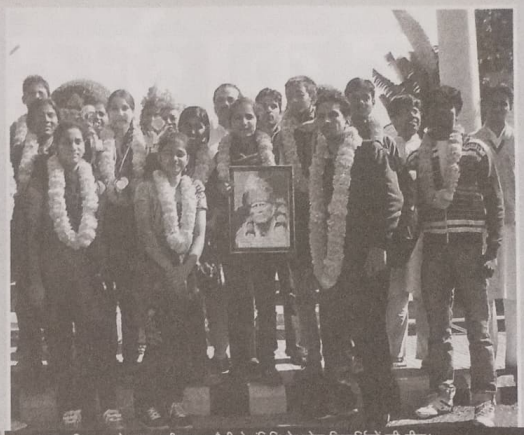

पलवल, हरियाणा से पदक जीतकर लौटी देसंविवि के योग विद्यार्थियों की टीम।

दिलजीत ने जीत लिया दिल

देसंविवि, हरिद्वार : 23 से 31 अक्टूबर के बीच हरियाणा के पलवल में आयोजित हुई भारतीय योगासन प्रतियोगिता में देव सस्कृति विश्वविद्यालय में बी.ए. प्रथम वर्ष की छात्रा दिलजीत कौन ने प्रथम स्थान प्राप्त किया। इस उपलब्धि के लिए उन्हें स्वर्ण पदक और योगिनी सम्राज्ञी पुरस्कार से नवाजा गया। इस प्रतियोगिता में विश्वविद्यालय से 12 प्रतियोगियो ने हिस्सा लिया था। दिलजीत के अलावा, राजेश, अनुसुया, श्लोक कुमार तथा लोकेश कुमार, ओमी ने भी दो स्वर्ण और चार रजत पदक अपने नाम किए। दिलजीत कौर ने बताया कि यह पुरस्कार पाकर वह बहुत गौरवान्वित महसूस कर रही हैं। उन्होंने इस मौके पर गुरुसत्ता एव विभाग के अध्यापकों के प्रति आभार व्यक्त किया। योग विभाग के अध्यक्ष डॉ. सुरेश वर्णवाल ने कहा कि हमें खुशी है कि हमारे विश्वविद्यालय की छात्रा ने प्रथम स्थान प्राप्त किया निश्चित ही यह यहाँ के सुरम्य वातावरण और दिनचर्या का प्रभाव है कि छात्रा ने यह उपलब्धि प्राप्त की।

छात्रों ने सीखे मर्म चिकित्सा के गुर

● सुरभि श्रीवास्तव, जेएमसी

देसंविवि,हरिद्वार। देव संस्कृति विश्वविद्यालय में मर्म चिकित्सा की तीन दिवसीय कार्यशाला का आयोजन 31 अक्टूबर से 2 नवम्बर तक किया गया। कार्यशाला का उद्घाटन विश्वविद्यालय के कुलसचिव संदीप कुमार ने किया। कार्यशाला में करीब 200 प्रतिभागियों ने हिस्सा लिया और मर्म चिकित्सा की बारीकियों से अवगत हुए।

कार्यशाला के मुख्य वक्ता डॉ. सुनील कुमार जोशी ने मर्म चिकित्सा के ऊपर प्रकाश डाला। विद्यार्थियों ने कार्यशाला में उत्साह के साथ भागीदारी की।

योग विभाग के विभागाध्यक्ष डॉ. सुरेश लाल वर्णवाल, एजुकेशन विभाग के निदेशक डॉ. आरपी कर्मयोगी, समग्र स्वास्थ्य प्रबंधन विभाग की विभागाध्यक्ष डॉ. वंदना श्रीवास्तव और विश्वविद्यालय के विभिन्न विभागों के वरिष्ठ शिक्षकों ने भी इस कार्यशाला में बढ़-चढ़कर भाग लिया। मर्म चिकित्सा की इस प्राचीन विधा को सीखने व जानने के बाद सभी प्रतिभागी उत्साहित थे।

नेटवर्किंग कार्यशाला ने दिखाई नई राह

● कपिल, जेएमसी

देसंविवि, हरिद्वार : देव संस्कृति विश्वविद्यालय अपने विद्यार्थियों को हमेशा से ही अध्यात्म के साथ विज्ञान के समन्वय के सूत्र सिखलाता हैं। क्योंकि दोनों के समन्वय से ही जीवन के लक्ष्य को प्राप्त किया जा सकता है।

वर्तमान में टेक्नोलॉजी के क्षेत्र में बढ़ते अवसरों को देखते हुए इसी वर्ष यहां कम्प्यूटर सांइस विभाग में बी.सी.ए की शुरूआत की गई। हाल ही में इस विश्वविद्यालय के कम्प्यूटर सांइस विभाग में 16 सितम्बर को एक दिवसीय कम्प्यूटर नेटवर्क विषय पर कार्यशाला आयोजित की गई। कार्यशाला में कम्प्यूटर सांइस विभाग के सभी छात्रों ने भाग लिया। कार्यशाला का मुख्य उद्देश्य कम्प्यूटर नेटवर्किंग, टोपोलॉजी, आइपी एड्रेस, तथा नेटवर्क केबल टेक्नोलॉजी से सम्बन्धित अन्य गतिविधियों से छात्र-छात्राओं को अवगत कराना था। जिसमें तीनों सत्रों में विभिन्न विषयों पर विधार्थियों को प्रायोगिक प्रशिक्षण दिया गया। शिविर के समापन के साथ सभी प्रतिभागियों को प्रमाण पत्र प्रदान किए गए। कम्प्यूटर का क्षेत्र बहुत ही व्यापक होने के कारण समय-समय पर यहां गेंस्ट लेक्चर और ऐजुकेशनल ट्रिप भी आयोजित किए जाते हैं। जिससे छात्र-छात्राओं को कम्प्यूटर की आधुनिक टेक्नॉलाजी से अपडेट होने व नए सॉफ्टवेयर डेवलप करने में सहायता मिले।

कंप्यूटर साइंस विभाग में नेटवर्किंग विषय पर हुई कार्यशाला में भाग लेते छात्र।

कम्प्यूटर एवं इंटरनेट आज के समय में एक सिक्के के दो पहलू साबित हो रहे हैं, इसलिए दोनों पहलुओं का ज्ञान होना आवश्यक है। हैरानी की बात है कि आज भारत में डिग्री लेकर घूमने वालों की भरमार है, पर रोजगार नहीं। इसी को ध्यान रखते हुए इस विश्वविद्यालय में छात्र-छात्राओं को व्यावहारिक ज्ञान प्रदान करने का प्रयास किया जाता है, ताकि वे अपने कार्यक्षेत्र में अपनी योग्यता साबित कर सकें। और बढ़ती भीड़ में गुम ना हो जाए।

मन के विज्ञान को सिखाता मनोविज्ञान विभाग

● निधी त्यागी, जेएमसी

देसंविवि, हरिद्वार : देव संस्कृति विश्वविद्यालय का मनोविज्ञान विभाग देश का पहला ऐसा केन्द्र है जहां योग व आयुर्वेद आधारित नैदानिक मनोविज्ञान का शिक्षण दिया जाता है। भारतीय ऋषि परंपराओं को पुनर्जीवंत करने के लिए प्रतिबद्ध देसंविवि के इस विभाग में असाध्य रोगों के इलाज के लिए पाश्चात्य मनोविज्ञान व भारतीय ऋषि परंपरा आधारित चिकित्सा पद्धतियों के समन्वय के द्वारा नई कारगर विधियों को खोजने के क्षेत्र महत्वपूर्ण कार्य किए जा रहे हैं।

योग व आयुर्वेद मनोविज्ञान के साथ-साथ भारतीय मनोविज्ञान, सकारात्मक मनोविज्ञान, चिकित्सीय मनोविज्ञान, सामान्य व असामान्य मनोविज्ञान शिक्षा के क्षेत्र में भी विभाग सराहनीय काम कर रहा है। अभी हाल में ही पांडेचेरी विश्वविद्यालय द्वारा सकारात्मक व्यवहार एवं मनोविज्ञान पर आयोजित की गई कान्फ्रेंस की गई जिसमें देव संस्कृति विश्वविद्यालय के करीब दो दर्जन छात्रों ने अपने पेपर प्रस्तुत किए जिन्हें उपस्थित लोगों के द्वारा खूब सराहना मिली। निधि त्यागी

प्रशिक्षण फिल्म इन्स्टीट्यूट पूणे के चन्द्रशेखर जोशी के मार्गदर्शन में सीखे पटकथा लेखन के विभिन्न आयाम

फिल्म एंड सिनेमा विषय पर आयोजित कार्यशाला में भाग लेने वाले पत्रकारिता एवं जनसंचार विभाग के छात्र अध्यापक गणों के साथ।

सिनेमा की बारीकियों से रूबरू हुए पत्रकारिता के विद्यार्थी

● शिवानी सिंह कल्याणवत, जेएमसी

देसंविवि, हरिद्वार : फिल्म एंड टेलीविजन इंस्टीट्यूट ऑफ इंडिया (पुणे) के चन्द्रशेखर जोशी जी ने फिल्म एंड सिनेमा के विषय में देवसंस्कृति विश्वविद्यालय के छात्रों को व्याख्यान दिया। पत्रकारिता विभाग के प्रथम और तृतीय सेमेस्टर के सभी छात्रो ने इसमें भाग लिया। इस वर्कशॉप का मुख्य उद्देश्य छात्र-छात्राओं को पटकथा लेखन में निपुण बनाना एवं सिनेमा की बारीकियों से अवगत करना था।

कार्यशाला के प्रथम दिन सिनेमा के आधारभूत सिद्धान्त, कैमरा हैंडलिंग, साउन्ड सिस्टम, एडिटिंग और शॉट्स के बारे में बताया।

वर्कशॉप के दूसरे दिन फिल्म एंड सिनेमा के इतिहास के बारे में बॉलीवुड, हॉलीवुड और क्षेत्रीय फिल्मों के माध्यम से बताया। तीसरे दिन फिल्मों के प्रकार जैसे-एड फिल्म, प्रमोशन फिल्म, डॉक्यूमेंट्री फिल्म और शॉर्ट फिल्मों के बारे में फिल्मों को दिखाकर बताया गया। वर्कशॉप के चौथे दिन पटकथा लेखन की जानकारी दी गई। पांचवे दिन पटकथा लेखन के उपकरणों के बारे में बताया गया। अंतिम दिन सभी छात्र-छात्राओं द्वारा लिखी गई पटकथा का निरीक्षण किया गया। विश्वविद्यालय के प्रतिकुलपति महोदय डॉ चिन्मय पंड्या की अध्यक्षता में इस वर्कशॉप का समापन किया गया।

इस वर्कशॉप का उद्देश्य पत्रकारिता विभाग के छात्र-छात्राओं को पटकथा लेखन के साथ क्षेत्र से अवगत कराना था, जो दिनों दिन उंचाइयों के नये पैमाने गढ़ रहा है। विद्यार्थियों ने वर्कशॉप के माध्यम से फिल्म एंड सिनेमा क्षेत्र की विविध जानकारियां ली। विद्यार्थियों ने इस वर्कशॉप के माध्यम से इस क्षेत्र की विविध गतिविधियों और कार्यक्षेत्र के अनुभव को सीखा।

40 वर्षों में कागज की खपत 400 फीसदी बढ़ी है, काटे गए पेड़ों का 35 प्रतिशत हिस्सा इतना कागज बनाने में लग

वेस्ट का बेस्ट उपयोग, कागज उद्योग

दुनियाभर में पिछले 40 वर्षों में कागज की खपत 400 फीसदी बढ़ी है, इस दौरान काटे गए पेड़ों का 35 प्रतिशत हिस्सा इतना कागज बनाने में लग गया। कागज के बढ़ती मांग को पूरा करने का एक मात्र विकल्प पुराने रद्दी कागज का उपयोग करना है। बेरोजगारी के इस दौर में रोजगार के अवसर अनायास ही लोगों का ध्यान खींच लेते हैं। और यदि उस रोजगार में स्वावलंबन जुड़ा हो तो सोने पे सुहागा। कुछ ऐसा ही प्रयोग कर रहा है देवसंस्कृति विवि का हस्त निर्मित कागज उघोग। क्योंकि आज दुनिया में बढ़ते कागज की खपत का कोई विकल्प नहीं रह गया। और रद्दी कागज का ढेर दिन-प्रति-दिन बढ़ता ही जा रहा है। ऐसे में कागज निर्माण के लिए ढेरों पेड़-पौधे काटे जा रहे है और पुराने कागज का कोई उपयोग भी नहीं हो पाता।

● कुमार विकास, जेएमसी

देसंविवि, हरिद्वार : पर्यावरण के प्रति अपनी निष्ठा व जिम्मेदारी का वहन करते हुए देव संस्कृति विश्वविद्यालय में कागज की बढ़ती मांग व पुराने रद्दी कागज का उपयोग के लिए हस्त निर्मित कागज उद्योग की स्थापना की गई है। घरेलु तथा कारखानों में से निकला जैविक कचरा इन कारखानों के लिए कच्चा पदार्थ का काम करती है।

साधारण खर्च से शुरू होने वाला यह उद्योग आमदनी का स्रोत ही नहीं नये रोजगार भी उत्पन्न कर रहा है। विश्वविद्यालय के अन्य स्वावलंबन केन्द्र जिसमें गौ उत्पाद, खादी उद्योग, फूड प्रोसेसिंग आदि शामिल है उसमें हस्त निर्मित कागज उत्पादन केन्द्र भी अपना विशेष महत्व रखता है। इस केंन्द्र में लोगों को धरेलु कचरे की मदद से कागज तैयार करना सिखाया जाता है। प्रशिक्षण देने की तर्ज पर चल रहा यह केन्द्र रोजाना 33/26 इंच की 500 शीटें तैयार करता है। इससे लोगों को रोजगार व काम सीखने का मौका दोनों मिल रहा है।

समय समय पर लोगों को इस कारखाने का सेटअप लगाने और कागज के निर्माण की विधि सिखलाई जाती है। इस विधि में एक बार कच्चा पदार्थ यानी कि जैविक कचरा इकठा हो जाने के बाद उसे कुल पाँच प्रोसेसिंग स्टेज से गुजारा जाता है। पहला सेग्रीमेंटिग विधि में कचरे से प्लास्टिक शीशा आदि पदार्थों को हटाया जाता है। फिर चौपर विधि से कचरे को छोटे छोटे टुकडों में इकट्ठा किया जाता है। डाइजेस्टर में कचरे को गलाया जाता है। फिर बिटर चरण में अलग अनुपात में पदार्थों को मिलाया जाता है।

पल्पर चरण, कचरे के कागज के शीट में तब्दील होने के पहले का प्रोसेसिंग है। इसमें कागज कि लुगदी तैयार की जाती है। इसके अलावा अन्य प्रोसेसिंग जैसे ब्लिचिंग कलरिंग आदि से कागज में रंग डाला जाता है। तब जाकर कहीं कागज तैयार होता है। यहां कागज की विभिन्न सामग्री, जैसे कागज की फाइलें, विभिन्न डिजाइन के चार्ट पेपर, थैले, लिफाफा आदि तैयार किए जा रहे हैं।

फिर से लौट रहे हैं खादी के दिन

● पत्रकारिता एवं जनसंचार विभाग

देसंविवि, हरिद्वार : स्वावलम्बन को ध्यान में रखते हुए। देव संस्कृति विश्वविद्यालय ने खादी ग्राम उद्योग स्वावलम्बन प्रशिक्षण केन्द्र की शुरूआत की। विश्वविद्यालय में खादी ग्राम उद्योग चलाने का उदेश्य लोगों को रोजगार देने की कोशिश है। खादी ग्राम उद्योग ग्राम प्रबंधन के अन्तर्गत ही आता है। कई तरह की प्रक्रिया जैसे ऊन से धागा बनाना, फिर उसकी मशीन के द्वारा बुनाई करना और अंत में फिनीशिंग करने के बाद कपड़ा तैयार होता है। यहाँ अमृतसर से ऊन के गत्ते मँगवाए जाते हैं, जिसे बुनकर स्टोल्स, सूटिंग फैब्रिक्स, जैकेट का कपड़ा, शॉल, कालीन, पांवदान, कम्बल आदि वस्तुओं को तैयार किया जाता है। इन वस्तुओं को तैयार करने के लिए लाई सैटेलाइट करघा मशीन एवं न्यू मॉडल अम्बर चरखा मषीनों के द्वारा कॉटन के धागे, कॉटन और पालिस्टर मिक्स धागों का उपयोग किया जाता है। जिसमें लाई सैटेलाइट करघा मशीन पुरुषों द्वारा इस्तेमाल की जाती है और न्यू मॉडल अम्बर चरखा का इस्तेमाल महिलाओं द्वारा होता है। लगभग चालीस महिलाए और बारह पुरुष कताई का काम संभालते है तथा दो महिलाएँ बुनाई का, साथ ही साथ चार इन्स्ट्रक्टर इस उद्योग में कताई एवं बुनाई की तीन माह की ट्रेनिंग भी देते हैं। विश्वविद्यालय के कुलाधिपति श्रद्धेय डॉ. प्रणव पण्ड्या जी का कहना है कि स्वावलम्बन व्यापार नहीं बल्कि एक वृत्ति का नाम है। उन्होंने कहा कि गायत्री परिवार की सारी गतिविधियाँ हमारे सच्चे ब्रह्मणत्व की सिद्धि है। भविष्य में उसी से युग बदलेगा । उन्होंने इसे एक फिक्स डिपाजिट की तरह बताया।

देव संस्कृति विश्वविद्यालय की इस पहल को देखकर निश्चित ही यह लगता है कि फिर से खादी के दिन लौट आयेंगे। घर-घर में सूतों की कताई की गूंज से भारत फिर से सशक्त व समृद्ध होगा। वास्तव में यही होगा राष्ट्रपिता के सपनों का भारत।

स्वावलंबन के द्वार खोलता ग्राम प्रबंधन विभाग

● निधि त्यागी, जेएमसी

देसंविवि, हरिद्वार : स्वावलंबी युवा एवं सम्पन्न राष्ट्र के सिद्धांत को आधार बनाकर ग्राम प्रबन्धन विभाग लोगों को स्वालंबन की राह चला रहा है। देश भर में इसके जरिए 45 रचनात्मक केन्द्रों का संचालन किया जा रहा है। जहां साबुन बनाने से लेकर मधुमक्खी पालन व सूत कताई काम का प्रशिक्षण देकर लोगों को कुशल कारीगर बनाया जाता है। ग्राम प्रबंधन विभागाध्यक्ष का कहना है कि विभाग का मुख्य काम ग्राम विकास व्यवस्था तैयार करना और क्षेत्रिय व संगठनात्मक ढ़ांचा तैयार करना है। स्वावलंबन के पाठ्यक्रम को भी इसी बात को ध्यान में रखकर तैयार किया गया है कि लघु उद्यमों की बारीकियों को सीख अपना कार्य शुरू कर सकें।

उन्होंने बताया कि संगठनात्मक ढ़ांचे के अंतर्गत विभिन्न राज्यों में 45 रचनात्मक केन्द्र स्थापित किए गए हैं। लोगों को प्रशिक्षण देने के लिए उन्हीं के गांव में 5 से 6 दिन की ट्रेनिंग भी दी जाती है। इसके अलावा देश भर में 80 गौशाला का संचालन भी ग्राम प्रबंधन विभाग द्वारा किया जा रहा है, जिनमें गौ उत्पाद बनाए जाते हैं, साथ ही लोगों को इन उत्पादों के बनाने का प्रशिक्षण दिया जाता है। इस विभाग के द्वारा कई कोर्स चलाए जाते हैं, जिसमें एक माह, डेढ़ माह, छह माह व एक वर्ष के कोर्स शामिल हैं। इसके अंतर्गत विभिन्न घरेलू व व्यवसायिक उत्पाद बनाने का प्रशिक्षण दिया जाता है। जैम, कैंडी, मुरब्बा, च्यवनप्राश, अचार, साबुन, डिटर्जेंट, धूपबत्ती, अगरबत्ती, मोमबत्ती, कागज, ग्रीटिंग कार्ड, फाइल कागज, बेकरी उत्पादों में रस्क, बिस्किट, केक, पेस्ट्री आदि बनाने का प्रशिक्षण दिया जाता है। मधुमक्खी पालन, गौ उत्पाद जैसे अर्क, हरड़ चूर्ण, गौमूत्र आसव, कामधेनु नारी संजीवनी आदि बनाना सिखाया जाता है। भविष्य में ग्रामीण फूड प्रोससिंग के तहत बड़ी, पापड़, मूँगफली, सत्तू का उत्पादन शामिल है। पत्ता आधारित उत्पाद में पत्तल, दोना एवं प्लेट बनाने का प्रशिक्षण दिया जाएगा।

स्वावलंबन से कायम की मिसाल

ग्राम प्रबंधन विभाग में प्रशिक्षण प्राप्त कर चुके राजस्थान जिला झालावाड़ के गांव कांदल खेड़ी के रहने वाले सज्जन सिंह बताते हैं कि उन्होंने यहीं से गौ उत्पाद बनाने का प्रशिक्षण प्राप्त किया था। आज वह हरड़ चूर्ण, बुकनू चूर्ण, गौ अर्क बनाने का काम अपने गांव में कर रहे हैं। बताते हैं कि उन्होंने अपने उत्पाद को मार्केट में बेचने के लिए एक खास नाम देने के साथ पैकेजिंग पर विशेष ध्यान दिया। उत्पाद की खासियत व नाम को लोगों के बीच प्रचारित करने के लिए आस-पास के शहरों व कस्बों में प्रचार भी करवाया। उन्होंने अपने उत्पाद को लोगों को आसानी से उपलब्ध कराने के लिए किराना व मेडीकल स्टोरों पर रखवाया। वह अपने लघु उद्यम द्वारा पांच लोगों को रोजगार देने के साथ 50-60 हजार मासिक आसानी से कमा लेते हैं।

गांवों में जाकर रचनात्मकता की इबारत लिखते युवा

● नेहा कंचन, जेएमसी

देसंविवि, हरिद्वार : उड़ान केवल पंखों से नहीं होती बल्कि इसके लिए हौसलों की जरूरत होती है। कुछ ऐसा ही कर गुजरने की तमन्ना लिए हौसलों के जरिए रचनात्मकता की इबारत लिख रहे हैं देव संस्कृति विश्वविद्यालय के ग्राम प्रबंधन विभाग के छात्र।

15 युवाओं ने अपने छह माह के कोर्स के दौरान गांव-गांव घूमकर न केवल अपने पाठ्यक्रम की उपयोगिता को साबित किया बल्कि अन्य युवाओं को राष्ट्र व समाज हित में कुछ सार्थक करने की जीवंत मिसाल पेश की। उन्होंने गांव के लोगों को स्वावलंबन का प्रशिक्षण देने के साथ गांव को आदर्श गांव में तब्दील करने के लिए स्वयं मिलकर प्रयास करवाए। स्थानीय लोगों के साथ मिलकर स्वच्छता अभियान चलाए। स्वास्थ्य के प्रति जागरुकता के लिए योग शिविरों का आयोजन किया। लोगों के प्रति आत्मीयता व उद्देश्य के प्रति समर्पण को देखकर गांव के लोगों ने भी उनका भरपूर सहयोग किया। विश्वविद्यालय में भी उनके इस सार्थक प्रयास को खूब सराहा गया।

बैच 2012 के एक वर्षीय पाठ्यक्रम के 15 छात्रों ने 5-5 के तीन ग्रुप बनाकर तीन गांवों गाजीवली, सज्जनपुर और बाहरपीली को अपने प्रोजेक्ट के लिए चुना। इस प्रोजेक्ट का हिस्सा रहे छात्र विजय पांडेय बताते हैं कि हमारी टीम का मुख्य उद्देश्य गाँव के लोगों को बेहतर जीवन जीने की ओर प्रेरित करना था। छह महीने के पूरे सत्र में हर ग्रुप ने 13-13 दौरे किए।

अपने शुरुआती दौरों में उन्होंने घूम-घूम कर गांवों का मुआयना किया और वहां की स्थानीय परिस्थितियों को समझा। अगले तीन-चार दौरों में छात्रों ने घर-घर घूमकर लोगों से मिलकर उनके बारे में जाना और उनकी सामाजिक, आर्थिक, सांस्कृतिक पृष्ठभूमि को समझा, जिससे गांव के लोग भी उनके साथ सहज हो गए। लोपा मुद्राकार बताती हैं कि उनकी टीम में तीन लड़कियां भी थीं, उन्होंने महिलाओं के साथ सामूहिक मीटिंग करके स्वस्थ रहने की जानकारी दी। शुरुआती प्रक्रिया के बाद आदर्श ग्राम तीर्थ योजना के अंतर्गत गांव वालों के साथ वृक्षारोपण, बाल संस्कारशाला, महिला जागरूकता अभियान, स्वच्छता अभियान, स्वावलंबन आदि अभियानों को पूरा किया गया। सुधा शर्मा बताती है कि उनकी टीमों ने वृक्षारोपण अभियान के तहत स्थानीय लोगों के साथ मिलकर हजारों छायादार व बहुवर्षीय पौधों का रोपण किया। साथ ही बालसंस्कार शाला में छोटे-छोटे बच्चों को खेल-खेल में ही कई नैतिक तथा बौधिक बातें सिखाई गई। स्वावलंबन के तहत गांव वालों को रोजमर्रा की वस्तुएं बनाना सिखाया गया।

प्रोजेक्ट के तहत यज्ञ भी करवाया गया। इस प्रोजेक्ट में रितु शर्मा, बिपिन नारायण शर्मा, विवेक कुमार, अजीत कुमार, रमाकांत गुप्ता, भूषणलाल चंद्रवंशी शामिल थे।

जैविक खेती के आदर्श मॉडल को स्थापित करता देसंविवि

● कपिल यादव, जेएमसी

देसंविवि, हरिद्वार : हरित क्रांति के दौरान कृषि की उर्वरा शक्ति को बढ़ाने के लिए रासायनिक खादों का अंधाधुंध इस्तेमाल किया गया, जिसके दुष्परिणामों को अब पांच दशक बाद साफ तौर पर देखा जा सकता है। कृषि में आयी इन्हीं विसंगतियों को दूर करने के लिए देसंविवि के ग्राम प्रबंधन विभाग ने परिसर में जैविक खेती का आदर्श मॉडल स्थापित किया है। इसके जरिए देश में हरित क्रांति को नए आयाम दिए जा रहे हैं।

ग्राम प्रबंधन विभाग जैविक खाद की खेती को भारत के प्रत्येक हिस्से तक पहुंचाने के लिए संकल्प के साथ प्रयासरत है। इसी क्रम में यहां प्रत्येक माह करीब एक हजार ग्रामीणों को बर्मी कम्पोस्ट खाद बनाने की विधि का प्रशिक्षण दिया जा रहा है, जिसके सकारात्मक परिणाम सामने आ रहे हैं। जिला बुलंदशहर के गांव स्याना के रहने वाले राजेन्द्र त्यागी यहीं से जैविक खेती का प्रशिक्षण प्राप्त कर अपनी करीब 80 एकड़ जमीन में जैविक विधियों से खेती कर रहे हैं। उनका कहना है कि दस वर्ष पहले वह

भी रासायनिक खेती किया करते थे। लेकिन घटती पैदावर व कम होती खेतों की उर्वरा शक्ति को देखते हुए उन्होंने जैविक खेती के विकल्पों को अजमाने के बारे में सोचा। इन दस सालों के दौरान परिणाम बेहद चौकाने वाले व सकारात्मक रहे। वह कहते हैं कि उनके खेतों में आज रसायनिक विधियों के मुकाबले डेढ़ गुना अधिक पैदावार होती है। साथ ही रसायनिक तरीकों से पैदा हुए अनाज व फलों के द्वारा शरीर पर पड़ने वाले दुष्प्रभावों को देखते हुए उनके खेतों में पैदा हुए अनाज व फलों को स्थानीय लोग बाजार भाव से अधिक मूल्य पर खरीदने को तैयार रहते हैं। ऐसे ही सैकड़ों ग्रामीण यहां से प्रशिक्षण प्राप्त कर जैविक खेती के जरिए नई मिशाल पेश कर रहे हैं। ग्राम प्रबंधन के विभागाध्यक्ष डॉ. केएस त्यागी का कहना है जैविक खेती के जरिए एक नई हरित क्रांति को अंजाम दिया जा सकता है। बढ़ते गंभीर शारीरिक रोगों को एक कारण खेती में अंधाधुंध रसायनों का इस्तेमाल करना है। जैविक विधियां खेतों की उर्वरा शक्ति बढ़ाने के साथ स्वास्थ्य के लिए भी लाभदायक है।

इस विधि में केंचुओं और घरों से निकले व्यर्थ पदार्थों का इस्तेमाल किया जाता है। यह बहुत ही सरल विधि है, इसके जरिए व्यर्थ कूड़े-कचड़े की क्यारी बना देते हैं और उसमे केंचुओं को छोड़ देते हैं, जिससे वे मिट्टी व कूड़े को डिकम्पोज कर देते हैं। 35 से 40 दिनों मे यह खाद तैयार हो जाती है। पिछले कई सालो से किसानों को जैविक खेती का प्रशिक्षण दे रहे डीपी सिंह का कहना है कि शहरों के कचड़े को रिसाइक्लिंग करने की यह सबसे अच्छी विधि है। इसके इस्तेमाल से कृषि को रसायनों से प्रदूषित होने से बचाया जा सकता है। साथ ही मंहगी खाद का विकल्प भी किसानों को मिल जाएगा, जिससे कृषि की ओर किसानों का झुकाव फिर से बढ़ेगा।

कैंपस हलचल

धर्म की पताका फहराता धर्म विज्ञान विभाग

देसंविवि, हरिद्वार :धर्म व अध्यात्म से जोड़ने का एक अनूठा प्रयास कर रहा देव संस्कृति विश्वविद्यालय का धर्मविज्ञान विभाग। यहां से शिक्षा प्राप्त विद्यार्थी अलग-अलग क्षेत्रों में अपनी प्रतिभा का परचम लहरा रहे हैं। विश्वविद्यालय में धर्मविज्ञान का छह माह सर्टिफिकेट पाठ्यक्रम चलाया जा रहा है। वैसे तो यह केवल छः माह का कोर्स है परंतु इसकी शिक्षा पद्धति गागर में सागर के समान है। धर्मविज्ञान के पाठ्यक्रम में अनेक विषयों को सम्मलित किया गया है, जिसमें योग चिकित्सा, प्राण चिकित्सा, प्राकृतिक चिकित्सा, आयुर्वेदिक चिकित्सा, मर्म चिकित्सा, यज्ञ चिकित्सा, ज्योतिष, कर्मकांड तथा संगीत का प्रशिक्षण मुख्य है। इन विषयों का अध्ययन कर विद्यार्थी थल सेना में जेसीओ के पद पर भी चयनित होते हैं। इसी बाबत दिनांक 9 नवंबर 2012 को फर्स्ट गार्ड आर्मी कैंट देहरादून के जेसीओ पंकज पाठक गेस्ट के रूप में आए और विद्यार्थियों के कार्यों की काफी सराहना की। साथ ही आर्मी में नौकरी के इच्छुक विद्यार्थियो का मार्गदर्शन किया और फार्म भरने के तरीके भी सिखाए। विभाग के विद्यार्थियों द्वारा समय-समय पर रचनात्मक कार्य भी किए जाते हैं। हाल ही में भोगपुर गांव में जाकर विद्यार्थियों ने सफाई अभियान चलाया और वृक्षारोपण किया। साथ लोगों को नशे होने वाली हानियों के प्रति जागरूक किया। गांव के लोगों ने भी छात्रों के इस कार्य की प्रशंसा की और गांवों को गंदगी रहित रखने संकल्प भी लिया। विद्यार्थियों 11 नवंबर 2012 को रुड़की ले जाया गया और वहां मस्जिद, चर्च, गुरूद्वारा मंदिर तथा मिलिट्री छावनी घुमाया गया।

विज्ञान संचार की बारीकियों के बारे में बताया

देसंविवि, हरिद्वार : देव संस्कृति विश्वविद्यालय के एमजेएसी विभाग में 31 से 4 सितम्बर 2012 के बीच विज्ञान संचार कार्यशाला का आयोजन किया गया। जिसमें संबंधित विषयों के विशेषज्ञों ने छात्रों का विज्ञान संचार की बारीकियों के बारे में बताया। चार दिन तक चली इस वर्कशॉप के पहले दिन छात्र-छात्रों और गेस्ट के बीच परिचय हुआ, जिसमें बच्चों के बीच ओर जानकारी पाने की इच्छा प्रबल हो गई। दूसरे दिन मिस्टर तारिक बदर ने खबर लिखने के तरीके सिखलाए। कार्यशाला के तीसरे दिन जेपी शुक्ला ने विज्ञान संपादन और अनुवाद के बारे में छात्रो को बताया । इसके बाद डॉ. स्मिता वशिष्ट के द्वारा सेव

फुल, सेव एनर्जी, सेव नेचर रिसर्च पर बनी डॉक्यूमेंटरी दिखाई गई। देहरादून से आए जॉन एम गॉडिअन ने लोक कला के द्वारा विज्ञान को प्रसिद्ध करने के तरीकों को बताया। वर्कशाप में अतिथि के रूप विश्वविद्यालय के प्रति कुलपति डॉ चिन्मय पण्ड्या, कुलसचिव संदीप कुमार और पत्रकारिता एवं जनसंचार विभाग के एचओडी डॉ. सुखनंदन सिंह आदि उपस्थित रहे।

अब तक 4000 विद्यार्थियों की 952 टोलियों ने लगाए 17000 योग शिविर

राष्ट्र निर्माण की संदेश जन-जन तक पहुंचाती इंटर्नशिप

● पत्रकारिता विाग, जेएमसी

देसंविवि, हरिद्वार : देव संस्कृति विश्वविद्यालय के जनसम्पर्क एवं सेवायोजन विभाग के माध्यम से इंटर्नशिप कार्यक्रम जुलाई 2003 से सफलता पूर्वक संचालित हो रहा है। इसके जरिए देश के कोने-कोने तक व्यक्तित्व विकास एवं राष्ट्र निर्माण का संदेश जन-जन पहुंचाने का कार्य सम्पन्न हो रहा। इस अवधि में विद्यार्थियों को स्वालम्बन के अवसर भी मिलते हैं, जिससे उसकी रोजगार की समस्या भी हल होती है। इस प्रकार छात्र-छात्राओं को इटर्नशिप में सेवा के साथ आत्मनिर्भरता का अनूठा सुयोग मिलता है।

उल्लेखनीय है कि इंटर्नशिप का प्रारंभ जुलाई 2003 से जून 2012 तक इंटर्नशिप के 18 चरण संपन्न हुए। इनमें लगभग 4000 छात्र-छात्राओं की 952 टोलियों ने 17 हजार से अधिक योग शिविर लगाए, साथ ही 42 हजार से अधिक ससक्रांतियों से जुड़े विविध कार्यक्रम देश के विभिन्न राज्यों में सम्पन्न कारए। शिक्षण संस्थानों के लगभग 5 लाख 75 हजार से अधिक युवाओं को विचार क्रांति का संदेश दिया। इसकी फलश्रुति यह है कि प्रतिवर्ष लगभग 500 से अधिक सुशिक्षित युवाओं का समयदान समाज की सेवा में नियोजित होता है।

विश्वविद्यालय की अनूठी पहल का प्रयोजन विद्यार्थियों की बौद्धिक क्षमता का सुनियोजन, उनके सैद्धान्तिक विषयों के अध्ययन का क्रियात्मक प्रयोग, उनमें आध्यात्मिक जीवन दृष्टि का विकास, समाज सेवा

हेतु देश के विभिन्न क्षेत्रों में प्रवास एवं योग-आरोग्य एवं व्यक्तित्व परिष्कार के शिविरों का आयोजन करना है।

वस्तुतः इंटर्नशिप, विद्यार्थियों द्वारा श्रेष्ठ मूल्यमय जीवन जीने का अनूठा प्रयास है। इसका उद्देश्य समाजोन्मुखी कार्यक्रमों को प्रोत्साहित करना है । इस प्रक्रिया के लक्ष्य तीन हैं- प्रथम, प्रत्येक सिद्धान्त को व्यावहारिक अनुभव से जोड़ना। विद्यार्थी जो ज्ञान प्राप्त करते हैं उसके व्यावहारिक प्रभाव का अनुभव, विश्वविद्यालय से बाहर दूरस्थ क्षेत्र में जाकर व्यापक स्तर पर प्राप्त करना। दूसरा- विद्यार्थियों द्वारा पढ़े हुए विषय के ज्ञान की व्यावसायिक एवं व्यावहारिक कुशलता को अधिकतम स्तर पर संवर्धित करना, ताकि वे अर्जित ज्ञान का कुशलतापूर्वक प्रयोग कर सकें। तीसरा-लोकसेवा के प्रति अभिरुचि उत्पन्न करके, विद्यार्थियों में सामाजिक दायित्व बोध की प्रतिबद्धता उत्पन्न करना। उन्हें यह अनुभव कराना कि विश्वविद्यालय द्वारा प्राप्त ज्ञान की सार्थकता आर्थिक स्वावलम्बन के साथ लोकसेवा का दायित्व निभाना भी है ।

अतः देखा जाये तो प्राचीन काल में लोकसेवा नारद, बुद्धकाल के कुमारजीव एवं संघमित्रा, आधुनिक काल में स्वामी दयानन्द, स्वामी विवेकानन्द और युगऋषि पं. श्रीराम शर्मा आचार्य जी ने जिस परिव्रज्या को अपनाया लोक काल्यण के लिए अपनााया उसी का जीवंत रूप है देसंविवि की अनूठी इंटर्नशिप।

एनीमेशन विभाग से अबतक 50 छात्रों को मिला प्लेसमेंट

● प्रशांत पांडेय, जेएमसी

देसंविवि, हरिद्वार : अधुनिकता के इस युग में विजुअल इफेक्ट्स कंपोजिंग और थ्रीडी कंप्यूटर ग्राफिक्स नित नई ऊंचाईयों को छू रहा है, ऐसे में विश्वविद्यालय का एनीमेशन विभाग से निकली प्रतिभाएं इस क्षेत्र में विशिष्ट पहचान बना रही हैं। इस विभाग से अब तक करीब 50 से अधिक विद्यार्थियों का विभिन्न कम्पनी व संस्थाओं में प्लेसमेंट हो चुका है।

2009 के पहले डिप्लोमा बैच के 22 विद्यार्थियों में से 20 विद्यार्थियों को पिक्सन कंपनी में प्लेसमेंट हुआ। 2010 में एडवांस थ्री डी बेच के 5 विद्यार्थियों का चयन मुम्बई में थ्रीडी जर्नलिस्ट इन पिक्सन में हुआ। 2011 के एडवांस थ्री डी बैच के विद्यार्थी अश्विनी पटेल का चयन बैंगलोर स्थित एमसीपी स्टूडियो में मैच मूवर के रूप में हुआ। इस पहले के सर्टीफिकेट कम्पोज़िटिंग बैच के चार विद्यार्थियों अंकुर, हिमानी, महेन्द्र और जर्नादन का चयन प्राइम फोर्स स्टूडियो के हुआ। जनवरी 2012

से जुलाई 2012 बैच के 7 विद्यार्थियों का चयन हुआ, जिनमें कृष्ण कुमार केशव का चयन जूनियर मॉडलर इन पिक्सन के लिए हुआ। थ्री डी एनीमेशन बैच के विशाल, कुलदीप और दीपांजली का चयन जूनियर डायनेमिक्स आर्टिस्ट और इसी बैच के नितिन शर्मा लाइटिंग आर्टिस्ट रूप में चयनित हुए।

देसंविवि में शोध के क्षेत्र में नई पहल

● पत्रकारिता एवं जनसंचार विभाग

देसंविवि, हरिद्वार :12 मई 2010 को देसंविवि में कुलाधिपति डॉ. प्रणव पण्ड्या के संरक्षण एवं डॉ. चिन्मय पण्ड्या के नेतृत्व में शोध एवं प्रकाशन सेल का शुभारम्भ किया गया था। इसमें अन्य सहयोगी हैं समन्वयक डॉ. हेमाद्रि साव, डॉ. दीपक सिंह, डॉ. किरण सिंह। इसका विभाग उद्देश्य शोधार्थियों को अनुसंधान की सुविधाएं, तकनीकी, मार्गदर्शन प्रदान करना है, तथा साथ ही शोध लेख एवं पुस्तकों का प्रकाशन, स्वदेशी ज्ञान पर शोध करने के लिए प्रोत्साहित करना है। विभाग का दीर्घकालिक उद्देश्य इसको अद्वितीय अनुसंधान एवं विकास केन्द्र के रुप में विकसित करना है।

विभाग से लघुशोधप्रबन्ध, विशेष लेख, पुस्तकें व पत्रिकाएं प्रकाशित की जाती हैं। यह विभाग मनोविज्ञान, योग विज्ञान, भारतीय संस्कृति, पर्यटन, पत्रकारिता एवं जनसंचार, शिक्षा के अंतर्विषयक शोध को प्रोत्साहित करता है। कई शोध छात्रों के वैदिक विज्ञान, वर्तमान समस्याओं एवं उनके समाधान को लेकर चल रहे शोध कार्य विभाग से पंजीकृत हैं। जो 119 छात्र रिसर्च स्कॉलर्स के रुप में यहाँ कार्य कर रहे हैं। दिसम्बर 2012 में प्रकाशित होने वाले डिजर्टेशन शोध पत्र, लेख, पुस्तकों की सूची विभाग द्वारा तैयार की गई है, जो शोधार्थियों के लिए उपयोगी सिद्ध होंगे।

विभाग की नवीनतम पहल है अंतर्विषयक इंटरनेशनल जर्नल-डीएसआईआईजे अर्थात् देवसंस्कृति इंटरनेशनल जर्नल, जिसे चतुर्थ दीक्षान्त समारोह पर विमोचित किया जा रहा है। यह अर्धवार्षिक शोध जर्नल है, जो वर्ष में दो बार प्रकाशित किया जाएगा। पारंपरिक भारतीय ज्ञान पर आधारित शोध को इसमें प्रोत्साहन दिया गया है। यह जर्नल पारंपरिक ज्ञान से सम्बन्धित अनुसंधानों, आविष्कारों एवं ज्ञान को मंच प्रदान करेगा। साथ ही शिक्षकों एवं छात्रों के मौलिक विचारों, शोध वृति को प्रोत्साहित करना इसका प्रमुख उद्देश्य है।

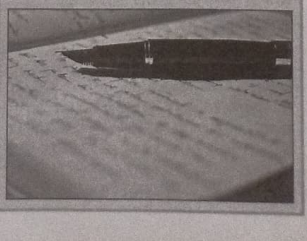

विभाग विद्यार्थियों को दिया जाता है भारतीय संस्कृति व परंपराओं का विशेष शिक्षण

आध्यात्मिकता के साथ पर्यटन की जानकारी

● प्रिया मील, जेएमसी

देसंविवि, हरिद्वार : नित नए ऊंचाईयों को छूता विश्वविद्यालय का पर्यटन विभाग अपनी एक अलग पहचान बना रहा है, यहां से निकले छात्र-छात्राएं देश के विभिन्न क्षेत्रों में कार्य कर रहे हैं। इसके लिए विभाग उन्हें आध्यात्मिक पर्यटन, आयुर्वेदिक पर्यटन, स्वास्थ्य पर्यटन जैसी विधाओ मे पारंगत कर रहा है।

देव संस्कृति विश्वविद्यालय के पर्यटन प्रबधन विभाग का मुख्य उद्देश्य पर्यटन को मानव जीवन का अभिन्न अंग बनाना है। विभाग की प्राथमिकता विद्यार्थियों का समग्र विकास करना है। विभाग के डॉ. उमाकांत इंदौलिया बताते है कि भारत संस्कृतियों का धनी देश है। यहाँ अनेक प्रकार की संस्कृतियां और परंपराएं पायी जाती हैं, जिसकी झलक हमें आसानी से कहीं भी देख सकते हैं। प्रत्येक संस्कृति का अपना अलग अर्थ, महत्व और वर्चस्व है। यह विभिन्न प्रकार की संस्कृति-सभ्यता मनुष्य के घुमक्कड़ी स्वभाव

की परिचायक है। जगह के अनुसार मनुष्य की आवश्यकताएं व रहन-सहन का तरीका भी परिवर्तित होता रहा है। वह बताते हैं कि जगतगुरु ने घूम-घूम कर ज्ञान के उपदेश दिए। वह आध्यात्मिक पर्यटन का आदर्श रूप था। विश्वविद्यालय का पर्यटन विभाग उसी आध्यात्मिक व सांस्कृतिक पर्यटन को जीवंत बनाने का प्रयास कर रहा है। पाठ्यक्रम को भी इन्हीं सब चीजों को ध्यान में रखकर डिजाइन किया गया है। यहां के छात्रों का कई नामी कंपनियां अपने यहां नियुक्ति देने में दिलचस्पी दिखा रही हैं।

हालिया बैच के छात्र रहे रजनीकान्त एवं प्रणव शर्मा का एशियन रूट्स प्राइवेंट लिमिटेड कंपनी में, तपस्वी हरिनखेडे का गोरखा रिसेटेन्मेन्ट पर्यटन यूनिट(इंडियन आर्मी) में, निशांत कुमार का आरडीएम इण्डिया प्राइवेट लिमिटेड में चयन हुआ।

विश्व पर्यटन दिवस मनाया गया

हिमालय एडवेन्चर सोसायटी के सहयोग से 27 अगस्त को विश्वविद्यालय मे विश्व पर्यटन दिवस मनाया गया। इस मौके पर विभिन्न एडवेंचर कार्यक्रम कराए गए साथ ही निबन्ध, प्रश्नोत्तरी प्रतियोगिता कराई गई। संध्या काल में कुलपति व प्रति कुलपति के सानिध्य मे पुरस्कार वितरण समारोह सम्पन्न हुआ। जिसमें विजयी प्रतिभागियों को पुरस्कृत किया गया। इसके अलावा अक्टूबर माह में स्नात्कोत्तर प्रथम वर्ष व द्वितीय वर्ष के विद्यार्थियों का शैक्षणिक टूर दक्षिण भारत के पाण्डिचेरी, रामेश्वरम्, कन्याकुमारी, त्रिवेन्द्रम और ऊटी का गया। स्नातक प्रथम वर्ष के छात्र-छात्राओं को मंसूरी का एक दिवसीय टूर कराया गया और स्नातक द्वितीय वर्ष व तृतीय वर्ष के छात्र-छात्राओं को तीन दिवसीय टूर कराया गया। भविष्य में विभाग एक ट्रेवेल एजेन्सी खोलने की योजना बना रहा है।

अब करना बस ये है...

बहुब्राड खुदरा क्षेत्र में एफडीआई की लड़ाई अब इतिहास की बात बन चुकी है। 7 दिसम्बर 2012 को राज्य सभा से भी एफडीआई को हरी झंडी मिल गई। इस पर निर्णय करने के लिए कुछ भी शेष नहीं है लेकिन कवासों का दौर अब भी जारी है। अमेरिका की वॉलमार्ट, ब्रिटेन की टेस्को, जर्मनी की मेट्रो और फ्रांस की कार्फू जैसी बेरो कंपनियों ने भारत के लिए रास्ते-सफर बाधना शुरू कर दिया होगा। वालमार्ट इस क्षेत्र की सबसे बड़ी कंपनी है। अब चूंकि यह व्यावसायिक कंपनी है तो व्यवसाय का प्रथम नियम होता है मुनाफा कमाना, चहें तक कि देश की सरकार भी यदि दूसरे देश की किसी योजना के लिए धन देती है तो उसका भी उद्देश्य चैरिटी न होकर यह होता है कि वह देश अंतर्राष्ट्रीय मंच पर जरूरत पड़ने पर हमारे हित में वोट करे। तो किसी व्यावसायिक कंपनी से यह अपेक्षा कि वह अपने हितों से ऊपर उपभोक्ताओं के हितों को रखेगी बेमानी होगी।

परिदृश्य

खुदरा क्षेत्र में एफडीआई को हरी झंडी मिलने के बाद उसके फायदे नुकसानों की समीक्षा कर रहे हैं पत्रकारिता के पूर्व छात्र स्वप्नेश चौहान

व्यवसाय करने के दो उद्देश्य होते हैं। एक तो होता है अपने लाभ को अधिकतम करना और दूसरा होता है बाजार पर अधिपत्य जमाना। पहले उद्देश्य के लिए व्यवसायी कम कीमत पर माल खरीदकर अधिक कीमत पर बेचना पसंद करता है। घाटे के बावजूद वह माल बेचता है। यहाँ पर डार्विन का सिद्धांत 'जो सबसे शक्तिशाली होता है वही जीवित रहता है' इस तरह काम करता है कि जो सबसे अधिक घाटा उठा सकता है वही बाजार में टिक सकता है। आँकड़े देखने पर पता चलता है कि वर्ष 2011 का वॉलमार्ट का व्यापार 2094760 करोड़ रुपयों का था जोकि 2012-13 का भारत सरकार के बजट 1490925 करोड़ रुपये से भी ज्यादा है। मतलब साफ है कि घाटा उठाकर बाजार में टिकने से वॉलमार्ट कोई परहेज नहीं करेगा। वर्ष 1992 से लेकर 2008 तक की लंबी अवधि में वॉलमार्ट ने चीन में घाटा उठाया भी है।

बाजार दो प्रकार के होते हैं। एक तो प्रतिस्पर्द्धी बाजार, जिसमें एक चीज को बेचने के लिए कई विक्रेता होते हैं जिनकी आपसी प्रतिस्पर्द्धा के चलते वे उपभोक्ताओं से ज्यादा मुनाफा नहीं वसूल पाते। दूसरी प्रकार के बाजार होते हैं एकाधिकारी बाजार, जिसमें बहुत ही कम विक्रेता या एक ही विक्रेता होता है। ऐसे बाजार में वे उपभोक्ताओं से मन मुताबिक कीमत वसूल सकते हैं। बड़ी-बड़ी कम्पनियों की यह नीति होती है कि शुरुआत में वे खुद घाटा उठाकर प्रतिस्पर्द्धी बाजार को एकाधिकारी बाजार में तब्दील कर देते हैं फिर मनमाफिक कीमत वसूलते हैं।

अगर भारत के परिप्रेक्ष्य में देखा जाए तो देश में छोटे और मझोले स्तर पर खुदरा सामान बेचने वालों की संख्या करीब 1 करोड़ 20 लाख है जिनसे करीब 4 करोड़ 50 लाख लोगों की रोजी और करीब 20 करोड़ लोगों को रोटी नसीब होती है। दुनिया की 700 करोड़ आबादी में से 500 करोड़ उपभोक्ताओं वाली वॉलमार्ट जिस तरीके से 16 साल तक चीन में घाटा उठाकर रह सकती है भारत के व्यापारी नहीं रह सकते। उनको अपनी दुकानें बंद करके या तो किसी और क्षेत्र में जाना पड़ेगा या वे रोजगार दफ्तर के सामने लगी लंबी कतारों की और लंबी करने में सहायक बनेंगे और जावेद अख्तर साहब की ये पंक्ति कह रहे होंगे कि.

ये तसल्ली है कि हैं नाशाद सब,
मैं अकेला ही नहीं बर्बाद सब

खैर, अगर आप चाहें तो भविष्य इससे बेहतर भी हो सकता है। करना बस ये होगा कि अभी जिस भी दुकान से सामान लेते हों वॉलमार्ट के आने के बाद भी उसका साथ नहीं छोड़िएगा, भले ही वो कितने ही ऑफर चलाएं क्योंकि शतरंज के खेल में खिलाड़ी जानबूझकर अपना वजीर तभी मरवाता है जब अगली चाल में सामने वाले का राजा मर होता है।

युग की चुनौतियों के प्रत्युत्तर में हम ऋषियों की सन्तान होने के नाते कौन सी भूमिका निभाने जा रहे हैं? जीवन के हर क्षेत्र में छाए मूल्यों के कुहासे में एक दीप बनकर अपनी भूमिका किस प्रकार अदा करने वाले हैं। इसके सार्थक, सटीक एवं स्पष्ट प्रत्युत्तर तथा रुपरेखा में ही दीक्षान्त समारोह की सफल भागीदारी मानी जा सकती है।

दीक्षांत में सफल भागीदारी की कसौटी

आज हम मूल्य संकट के विप्लवी दौर से गुजर रहे हैं। जीवन का हर क्षेत्र नैतिक पतन और विध्वंस की भयंकर चपेट में है। व्यक्ति हो या परिवार, समाज या समूचा विश्व, मानवता एक चौराहे पर खड़ी है। विज्ञान के चरम विकास के साथ व्यक्ति आज पहले से अधिक साधन संपन्न अवश्य बन गया है, लेकिन आंतरिक विपन्नता की दशा गंभीर बनी हुई है। अपने जीवन सत्य से कटा व्यक्ति, वजूद के अर्थ की तलाश में है, अस्तित्व की सार्थक अभिव्यक्ति चाहता है।

शिक्षा तंत्र का समूचा ताना-बाना इसी उद्देश्य से बुना गया था। गुरुकुल परम्परा में गुरु के सान्निध्य में शिष्य जीवन के आंतरिक एवं बाह्य मर्म को समझ कर इस विश्व के रंगमच पर एक कुशल पात्र की तरह उतरता था और परिवार, समाज में अपने दायित्व का निर्वाह करता हुआ, जीवन के परमलक्ष्य की ओर बढ़ता था। लेकिन शिक्षा के वर्तमान तंत्र पर दृष्टि डालें तो घोर निराशा होती है, ज्यादातर स्कूल-कॉलेज या विश्वविद्यालय सभी डिग्री बटोरने के तंत्र और पैसा कमाने की दुकानें भर बन कर रह गए हैं। जीवन की गहन अंतर्दृष्टि एवं सामाजिक दायित्व बोध का इनमें सर्वथा अभाव दिखता है। परिणाम है जीवन के प्रति समग्र सोच से शून्य, नैतिक मूल्यों से रहित एक दिशाहीन पीढ़ी।

गुणवत्ता की दृष्टि से भी देखें तो भारत में शिक्षा की स्थिति बहुत संतोष जनक नहीं है। विश्वभर के विश्वविद्यालयों की जब रेटिंग होती है तो भारतीय प्रतिभाओं के गढ़ माने जाने वाले तकनीकी संस्थानों का नंबर 200 के बाद ही कहीं आता है। शायद ज्ञान के प्रति वह तीव्र पिपासा का कहीं अभाव है या शोध वृत्ति की लुप्त सी होती परम्परा, ऐसा लगता है मानो विश्व को ज्ञान-विज्ञान, दर्शन अध्यात्म के क्षेत्र में बेजोड़ सम्पदा देने वाले ऋषि-मुनियों के इस देश में प्रतिभाओं का यह अकाल आन पड़ा है। जो इसके सच्चे सपूतों के लिए एक चुनौती से कम नहीं है।

देव संस्कृति विश्वविद्यालय शिक्षा के क्षेत्र में छाए इस कुहासे को हटाने के लिए प्रतिबद्ध है और इस दिशा में कुछ विनम्र किंतु ठोस कदम दृढ़तापूर्वक उठा चुका है। वस्तुतः देव संस्कृति विश्वविद्यालय की स्थापना ही विलुप्त हो रही भारतीय विद्याओं के पुनर्जागरण, इसकी ज्ञान-विज्ञान की धाराओं पर गहन-गंभीर शोध अध्ययन के लिए हुई है। जिससे की इसके विश्वव्यापी प्रसार के साथ आध्यात्मिक पृष्ठभूमि में एक व्यापक सांस्कृतिक पुनर्जागरण का कार्य सिद्ध किया जा सके।

यहां का पाठ्यक्रम अकादमिक क्षेत्र के उत्कृष्टतम मानदंडों पर कसकर तैयार किया गया है और निरंतर उसमें संशोधन होता रहता है। क्षेत्र के नवीनतम विकास को समेटता हुआ, ज्ञान के नवीनतम आयामों की शोध की ओर उन्मुख रहता है। विषय की सामाजिक उपादेयता भी एक महत्वपूर्ण कसौटी रहती है।

गंगा के पावन तट पर और हिमालय की छाया में वसा विश्वविद्यालय का परिसर प्रकृति की गोद में एक गुरुकुल सा अहसास देता है। एक अलिखित से अनुशासन में कसा यहां का वातावरण एक विरल सी सात्विकता लिए है। छात्रावास में नित्य प्रार्थना, ध्यान, यज्ञ, श्रमदान जैसी गतिविधियाँ विद्यार्थी जीवन को एक अनुशासित दिनचर्या में कसकर एक नए साँचे में ढालने का काम करती हैं।

गीता-ध्यान एवं जीवन प्रबन्धन की कक्षाएं व्यक्तित्व के सर्वांगीण विकास का ठोस आधार तैयार करती हैं। स्वयं कुलाधिपति गीता एवं ध्यान की कक्षाओं को लेते हैं और व्यवहारिक अध्यात्म का मर्म उद्घाटित करते हैं। आचारनिष्ठ आचार्यों द्वारा जीवन प्रबंधन कक्षाएं आंतरिक शक्तियों के जागरण एवं विकास की तकनीकों से रूबरू कराती हैं। इस तरह आध्यात्मिक परिवेश में सहज ही श्रेष्ठ संस्कारों का बीजारोपण होता है और जीवन के उच्चतर मूल्य जीवन का अंग बनते जाते हैं।

इसके अतिरिक्त बीच-बीच में शैक्षणिक भ्रमण, सेमीनार, कार्यशालाएं, वर्कशॉप, सांस्कृतिक कार्यक्रम फील्ड ट्रेनिंग आदि विद्यार्थियों की बहुमुखी प्रतिभा को निखारने में मदद करते हैं। इटर्नशिप के माध्यम से सीखें ज्ञान की व्यावहारिक परख और सामाजिक सेवा का भाव विकसित होता है।

देवसंस्कृति में शिक्षा के सम्पन्न हो रहे इन अभिनव प्रयोगों को एक मूल्यपरक शिक्षा के एक मॉडल के रुप में देखा जा सकता है। ज्ञान दीक्षा और दीक्षान्त समारोह जिसके अभिन्न अंग हैं। वेदमंत्रों के मध्य विद्यार्थियों को व्रत-बन्धनों में बाँधने का क्रम दीक्षा समारोह में किया जाता है। विद्यार्थी अपने अध्ययन के दौरान इन व्रतों को अपने श्रम, संयम, मनोयोग पूर्ण स्वाध्याय एवं तप के खाद-पानी द्वारा सींचित करते हैं और इसका पुरस्कार दीक्षान्त समारोह के अवसर पर पाते हैं।दीक्षांत समारोह पल हैं देवसंस्कृति विवि में अपनी यात्रा के अवलोकन का, कि किस भाव-संकल्प के साथ इसमें प्रविष्ट हुए थे और आज किस मुकाम पर खड़े हैं। इसके प्रकाश में आगे का क्या मार्ग तय किया जाना है? हमारी अंतर्निहित शक्तियों के विकास का मार्ग कितना प्रशस्त हो चुका है? अपने चयनित विषय में हम ज्ञान-विज्ञान का कौन सा नया आयाम अनावृत करने जा रहे हैं? युग की चुनौतियों के प्रत्युत्तर में हम ऋषियों की सन्तान होने के नाते कौन सी भूमिका निभाने जा रहे हैं? जीवन के हर क्षेत्र में छाए मूल्यों के कुहासे में एक दीप बनकर अपनी भूमिका किस प्रकार अदा करने वाले हैं? इसके सार्थक, सटीक एवं स्पष्ट प्रत्युत्तर एवं रुपरेखा में ही दीक्षान्त समारोह की सफल भागीदारी मानी जा सकती है।

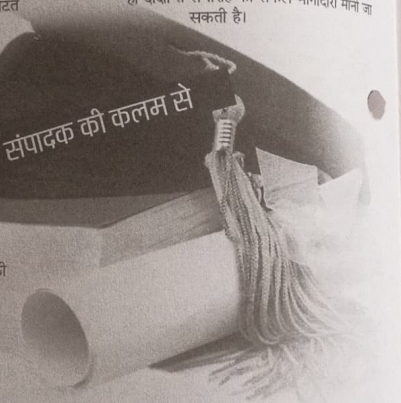

आदमी की खास कीमत

मंच पर एक बुद्धिमान व्यक्ति ने 1000 रुपये का नोट हाथ में लेकर पूछा -यह नोट किसे चाहिए। कई हाथ ऊपर उठने लग, वह बोला-मैं आपमें से किसी एक को यह नोट दूंगा, लेकिन पहले मैं यह कर लूं कह कर उसने नोट को अच्छी तरह से मरोड़ दिया। फिर उसने पूछा अब यह नोट किसे चाहिए। लोगों के हाथ अभी भी हवा में थे। वह बोला-अब में नोट के साथ यह करने वाला हूँ। कहकर उसने नोट को जमीन पर गिरा दिया और फर्श पर पैर से मसल दिया। अब उसने नोट उठाया, नोट मुड़ा-तुड़ा और गन्दा था। क्या आप अभी भी इसे चाहते हैं, उसने पूछा। अब भी बहुत से हाथ ऊपर हवा में थे। इसका अर्थ यह हुआ कि इतना गंदा होने के बाद भी नोट ने अबतक अपनी कीमत नहीं खोई थी। यही हाल हमारी जिंदगी का भी है अक्सर हम खुद को गिरा हुआ समझ कर, किसी काबिल नहीं समझते। परंतु नोट की तरह जिंदगी की कीमत भी कभी नहीं गिरती। क्योंकि हर कोई खास कीमत रखता है।

"तू खुशियों को रिचार्ज कर"

जब उदासियां तेरे पास ठहर जायें,
मन तेरा मायूस हो जाये,
तब तू खुशियों को रिचार्ज कर।
जब जेहन तुम्हारा बेचैन हो जाए,
होंठ मुस्कुराने को तरस जाए,
तब तू खुशियों को रिचार्ज कर।
जब चारों तरफ अंधेरा हो,
न दिखता कहीं सवेरा हो,
तब तू खुशियों को रिचार्ज कर।
जब आसूओं के समंदर में बाढ़ आ जाए,
जज्बातों में तेरे भूचाल आ जाए,
तब तू खुशियों को रिचार्ज कर।
जब मुश्किलों पर तेरा जोर न हो,
खुद की जिंदगी से प्यार न हो,
तब तू खुशियों को रिचार्ज कर ।
जब जिंदगी के अंधेरों में रोशनी मुकम्मल न हो,
गमों से मुक्त हो जिंदगी ऐसा कोई पल न हो,
तब तू खुशियों को रिचार्ज कर।
जब तू आलोचनाओं से घिरा हो,
लोगों की नजरों से घिरा हो,
जब सफलता को चूमने का हौसला न हो,
उलझनों से सुलझाने का कोई फैसला न हो,
तब तू खुशियों को रिचार्ज कर।
खुशियां ही तुझे हर चीज देंगी,
झोली तुम्हारी खुशियों से भर देंगी,
इसीलिए तू खुशियों को रिचार्ज कर।
लेकिन कैसे ?
बाहर से नजर हटा, अपने जेहन में झांकना,
तू खुदा का है बंदा, इस सत्य को पहचानना।
समेट अपनी शक्तियां सारी, कहां खड़ा यह जानना,
दिल की आवाज को सुन, अपने कर्तव्य को जानना।
मिल जाएगी चाबी खुशियों की, बस ठाने पर अडिग रहना,
नहीं कोई शॉर्टकट जिंदगी में खुशियों का, इस सत्य को भी जानना।।

– संदीप जायसवाल, देसंविवि हरिद्वार

आपकी पाती

नैतिक शिक्षा प्रदान करता पत्र

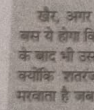

पत्रकारिता एवं जनसंचार द्वारा निकाले जा रहा समाचार पत्र ऐसा पत्र है जो अपने समाचारों के माध्यम से सनसनी न फैलाकर लोगों को सकारात्मक दिशा देता है। भारतीय संस्कृति के मूलभूत तत्वों का विस्तार करता है। पाठकों को नैतिक शिक्षा की ओर प्रेरित करता है।

इस पत्र की सबसे बड़ी विशेषता हमारी नजर में यह है कि इसके सभी लेख प्यारे होते हैं। मैं समस्त सम्पादक-मण्डल को शुभकामनायें देता हूँ कि निरन्तर इसी तरह के विचारों और समाचारों से अवगत कराते रहें।

अगमवीर सिंह, छात्र कल्याण अधिकारी, (देसंविवि)

पर्यावरण का रक्षक है यह पत्र

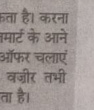

मैं संस्कृति संचार पत्रिका का नियमित पाठक हूँ। आपके संस्कृति संचार के वैसे तो सारे कॉन्टेन्ट अच्छे लगते हैं परन्तु पर्यावरण को समर्पित लेख अत्यंत अच्छे लगते हैं। पिछले अंक में ''गंगा-यमुना को मिली संजीवनी'', ''अब और नहीं मैली होगी गंगा''और ''पौधों एवं आद्रभूमि तकनीक द्वारा गंगा का प्रदूषण प्रबंधन'' लेख पढ़ा तो मन बहुत प्रसन्न हुआ; क्योंकि पर्यावरण की सुरक्षा सर्वोपरि है। संस्कृति संचार निरन्तर इस प्रकार के लेखों के माध्यम से लोगों को जागरुक कर रहा है। इसके लिए संपादक समूह को मैं हृदय से धन्यवाद देता हूँ।

ज्ञान मिश्रा, समन्वयक उद्यान विभाग, (देसंविवि)

आर्टिकल ज्ञानवर्धक होते हैं

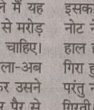

पत्रकारिता विभाग द्वारा निकाले जा रहा समाचारपत्र संस्कृति संचार विवि की तमाम जानकारियों से अवगत कराता है। विद्यार्थियों द्वारा लिखे गये आर्टिकल बड़े अच्छे होते हैं। समसामयिक विषयों को भी पर्याप्त स्थान दिया जाता है। इसमें प्रकाशित खबरें सकारात्मकता को अपने अन्दर समाहित किये होती हैं। समाचार पत्र का ले आउट और डिजाइन आकर्षक लगता है। मेरा एक सुझाव है कि स्टोरी के साथ-साथ ग्राफिक का प्रयोग अधिक किया जाए। मैं समस्त पत्रकारिता के विद्यार्थियों को और सम्पादक समूह को धन्यवाद देती हूँ।

कावेरी बाली, समन्वयक, एनीमेशन वि. (देसंविवि)

समस्याओं का समाधान देता पत्र

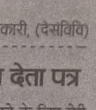

'संस्कृति संचार' पत्र की तारीफ करने के लिए मेरी जुबान छोटी पड़ जाती है। इसके शीर्षक ऐसे पंचदार होते हैं जो सीधे हृदय पर असर करते हैं। खबरों को पेश करने का तरीका अन्य समाचार पत्रों की तुलना में विनम्रता लिए होता है। इस पत्र की सबसे प्रमुख विशेषता यह है कि इसे परिवार के सभी सदस्य एक साथ बैठकर पढ़ सकते हैं। इसमें समस्याओं के साथ-साथ उसको सुलझाने का समाधान भी मिलता है। यह युवाओं को उत्साहित करता है। मेरी इच्छा है कि यह पत्र हर महीने प्रकाशित हो तो अधिक से अधिक ज्ञान से लोग लाभान्वित हो सकेंगे।

अमन वैष्णव, बीए फाइनल

युवाओं का मार्गदर्शक

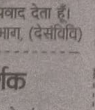

युवा एक ऐसा शब्द है जो हर हृदय को झंकृत कर देता है। इसमें जोश और जुनून बढ़-चढ़कर होता है। ये चुनौतियों को भी चुनौती दे देते हैं परन्तु इस उम्र में इनको मार्गदर्शन की अति आवश्यकता होती है। और यह भूमिका संस्कृति संचार बखूबी निभा रहा है। अपने लेखों में ये ऐसी सामग्री को शामिल करते हैं जो वास्तव में युवाओं के सोच को सकारात्मक दिशा देता है। पिछले कई अंकों में प्रकाशित युवाओं पर आधारित लेख ने हमें काफी प्रभावित किया है। इसके लिए मैं सभी संपादक समूह को धन्यवाद ज्ञापित करती हूँ।

पुष्पांजलि, बीसीए, प्रथम वर्ष

रोचकता से भरपूर

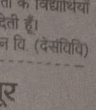

रोचक जानकारी हर किसी को अपनी ओर आकर्षित करती है। ये जानकारी जब अपनी रोचकता के साथ किसी का पथ प्रदर्शन करने लगे तो उसकी रोचकता में और वृद्धि हो जाती है। ऐसी ही जानकारियों का भंडार है संस्कृति संचार। इसके डिजाइन और प्रिन्ट बड़े ही अच्छे लगते हैं और लेख लोगों को मोटीवेट करते हैं। युवाओं के साथ-साथ नारी उत्कर्ष पर लेख भी हमें अच्छे लगते हैं। मै चाहती हूँ कि इस समाचार पत्र को गायत्री परिवार के विभिन्न शाखाओं तक पहुचाया जाये और इसके प्रकाशन की अवधि को कम किया जाये।

साक्षी मिश्राम, बीएससी, फाइनल

अनुभूतियों की सतरंगी छटा

यादों का वो इंद्रधनुष, जीवन के वो पल स्वर्णिम, मिली थी एक दृष्टि नवल, गढ़ रहे अब भविष्य उज्ज्वल।। कुछ ऐसे ही उद्गार हैं पूज्यगुरुदेव के सपनों के विश्वविद्यालय से पढ़कर निकले विद्यार्थियों के। एक सपना लेकर वे यहाँ प्रविष्ट हुए थे, कुंभकार की तरह यहां के वातावरण, यहां के आचार्यों ने उन्हें गढ़ा था। किया था कुछ संस्कार बीजों का रोपण। आज वे किस रुप में अंकुरित हो कर कैसी फसल बनकर लहलहा रहे हैं, दीक्षान्त के पल में विहंगावलोकन का एक अवसर है। प्रस्तुत है कुछ ऐसे ही देसंविवि से दीक्षित छात्र-छात्राओं के अनुभवों, यादों, उपलब्धियों एवं संकल्पों की इंद्रधनुषि छटाएं जो वे इन विशिष्ट पलों में सबके साथ साझा करना चाहते हैं।

यादें जो आज भी हमें बना देती हैं भावुक

जब मैं 2005 में प्रवेश परीक्षा देने शांतिकुज पहुंचा तो ठहरने के लिए कैंटीन के सामने वाले तंबू में मुझे जगह मिली। शुक्र है कि आज वहां टिन शेड है। रात में वहां सोते ही भारी बारिश शुरू हुई और मैं जिधर बिस्तर खींचता, वहीं पानी गिरने लगता। खैर, गुरुजी को कोसते हुए मैंने रात काटी। लेकिन मेरे धैर्य की यह पहली परीक्षा थी। एडमिशन के बाद जब हम पहली बार नोएडा गए तो पूरे बैच को माताजी के चौके में बिठाकर खाना खिलाया गया। यह वैसा ही अनुभव था जैसे हमारा परिवार पढ़ने के लिए हमें कहीं बाहर भेज रहा हो। एक बार मैं विश्वविद्यालय कैंपस में ब्लैक कार्गो और टी-शर्ट पहनकर घूम रहा था? कि जितेंद्र भैय्या सामने टकरा गए। मुझे लगा, डांट पड़ेगी। लेकिन उन्होंने कहा, बहुत स्मार्ट लग रहे हो। यह सुनकर मैं बुरी तरह झेंपा। एक बार मुझसे वहां किसी ने कहा था कि यहां अगर तुम सकारात्मक सोचोगे तो सकारात्मक परिणाम मिलेगा और अगर नकारात्मक सोचोगे तो नकारात्मक। मैं अनुभव के आधार पर कह सकता हूं कि यह बात बिलकुल सही है। सुखनंदन भैय्या का मां एलबम के भजन सुनना, तो अजय भैय्या के जोरदार कमेंट। स्मिता दीदी का मुझे और दोनों भैय्या लोगों को अमर-अकबर-एंथनी कहना। वो यादें आज भी भावुक कर देती हैं। वहां के अनुभवों ने धैर्य रखना सिखाया है। यह आभास दिलो-दिमाग में हमेशा बना रहता है कि कोई सत्ता है जो हमारी रक्षा और मदद के लिए हमारे साथ है।

अमरदीप त्रिपाठी, (2005-07)
एमए पत्रकारिता एवं जनसंचार,
उप-सम्पादक, अमर उजाला,
नोएडा

देसंविवि में आकर सीखा योग का मर्म

वेदमाता माँ गायत्री, गुरुदेव तथा माता जी की लीलामयी अनुकम्पा से मुझे सत्र 2001 से 2004 में विद्या के इस सारस्वत मन्दिर में अध्ययन का सौभाग्य प्राप्त हुआ! आज मैं जब अपनी उस बीते कालखण्ड के विद्यार्थी जीवन पर दृष्टिपात करता हूँ तो स्वंय मैं हर्ष और गौरव की सम्मिलत अनुभूति का अनुभव करता हूँ। इस विद्या केन्द्र के संस्कार आज वर्तमान में मेरी रक्त कणिकाओं के साथ संलग्न होकर मेरी संपूर्ण चेतना में प्रवाहमान है। इस विवि के मनीषी शिक्षकों, गुरुजनों ने मुझे न केवल साक्षरित करने का प्रयत्न किया अपितु मेरे आत्मिक उन्नयन और परा-आध्यात्मिक उन्नति का कार्य भी सहज ही कर दिया। भारतीय मनीषा की सर्वोत्कृष्ट उपलब्धि जिन्हें हमारे ऋषि मुनियों ने अन्तःमन में प्रयोग कर निकाला अर्थात योग का सात्विक समावेश मेरे जीवन में करने का श्रेय भी इसी महान शिक्षा संस्थान तथा गुरुजनों को जाता है। आज जब भी मैं स्वयं अपने विद्यार्थियों को पढ़ाता हूं तो लगता है योग जैसे विषय को मुझे पढ़ाकर मेरे गुरुजनों ने मुझ पर बहुत बड़ा उपकार किया है। मै इस शिक्षा संस्थान की चतुर्मुखी उन्नति एवं विकासमान उज्जवल भविष्य की मांगलिक कामना करता हूँ।

डा. भानु प्रकाश जोशी,
योगविज्ञान, देसंविवि (2002-04)
विभागाध्यक्ष, योग विभाग,
उत्तराखंड मुक्त
विश्वविद्यालय, हल्द्वानी

A place to learn practical Spirituality

"DSVV its not only a university, it is a divine place for making human in real sense , even I have no words to explain its goodness, for me it's just like my father who taught me the real meaning and purpose of life in every aspect. It's a unique place where we learn spirituality in practical sense, that how can we spend a Techno-Spiritual life. DSVV (CS Department) gives opportunity to make our carrier bright and successful."

Shivangi Patel (B.Sc. , DSVV[2008-11])
Junior Technical Associate,
Tech Mahindra, Pune

The most memorable period of my life

During this period I learnt many things both technical and spiritual. My faculties were very good who taught me very well. I worked in PIXION for two years. Then I came back to DSVV in may, 2012 and gave my services for seven months, this was the most memorable period of my life. Teaching was a great experience and I tried to deliver my skills in the best possible manner. I also learned many aspects related to spirituality through the meditation & Gita classes conducted by Honorable Chancellor sir and Jitendra sir. The creative spiritual vibrations can be easily felt here.

-Nikita Sharma, Animation and Visual Effect, (2008 -09). RHYTHM & HUES STUDIO (MUMBAI), as BG PREP ARTIST

The Source of my Energy and Inspiration

DSVV is a University as different not only in India but also in the world committed to inculcate morality and values, which make its students good human beings and responsible citizens. Now I find that those were the golden days in my life when I lived in this environment. I can't forget the lessons & norms whatever I got from the academic classes/ Geeta & Meditation classes and so on here. It's a truth that I work there but I get energy and inspiration continuously for best of my job from my mother university DSVV. Now I can say "Proud to be a Dsvvian." I promise that whenever there will be a need to work in my mother university I would feel it my best fortune to serve it.

Rajani Kant Jayswal,
Travel Consultant & Sales Executive
Asian Routes Pvt. Ltd.,
New Delhi

Proud to be a DSVVian

स्नेह से संस्कारित वह अद्भुत ताना-बाना

प्रभात के समय मैं गौ-शाला से लौटकर, महाकाल को दंडवत कर खड़ा ही हुआ था कि एक छात्रा चंदन की थाली लिए और अन्य मुझको घेरे हुए। ऐसा तो कभी न हुआ। याद किया तो आज मेरा जन्मदिन भी न था। तभी पूरे समूह ने एक स्वर में रक्षाबंधन की बधाई दी। अहा, आज रक्षाबंधन है!' मेरे मुख से निकला। मेरा माथा तिलक और हाथ रंग-बिरंगी राखियों से सज गया। मुझे यह आभाष हुआ, मानो मेरे सिर पर बहुत बड़ा ताज रख दिया गया हो और हाथों में दुनिया की सारी शक्ति! तब मन मे एक संकल्प उभरा कि मात्र-शक्ति की रक्षा के लिए हमेशा आगे रहूंगा। विश्वविद्यालय में मेरा प्रवेश समय, व्यापक और गहन अध्ययन को लेकर हुआ था, लेकिन शिक्षा-दीक्षा के साथ सहपाठियों के भरपूर बंधुत्व और गुरूजनों के स्नेह मे सस्कारित जो ताना-बाना यहां बना, सब अद्भुत था।

दिनेश चंद्र सेमवाल, एमजेएमसी (2006-08)
सम्पादक, सचार निदेशालय कृषि विवि पंतनगर

जीवन का रुपाँतरण हो गया

मैने 2004 में योग एव मानवीय चेतना विभाग से एमए पूर्ण किया। मई 2005 में शांतिकुज की और से योग के प्रचार हेतु रशिया जाने का सौभाग्य प्राप्त हुआ। श्रीरामकृष्ण परमहंस एव आचार्य श्रीराम शर्मा के यौगिक साधना एव धर्म संबंधित अवधारणा के विवेचनात्मक अध्ययन की आवश्यकता बताई। इससे प्रेरित होकर 2004 में पीएचडी शोध हेतु पंजीयन कर दिया। और उनके मार्गदर्शन में यह शोधकार्य 2011 को पूर्ण कर किया। निष्कर्ष रूप में यह कह सकता हूं कि देव संस्कृति विश्वविद्यालय में अध्ययन से मेरे पूरे जीवन का रूपान्तरण हो गया।

डा. नितिन डोमणे, योग विज्ञान, देसंविवि, (2002-05)
योग प्रशिक्षक राजकीय स्नातकोत्तर
महाविद्यालय रामनगर नैनीताल

Perfect blend of Siksha and Vidhya

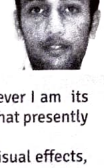

Every moment spent in DSVV gave me lots of unforgetful memories. DSVV is the best place of learning with fun. It not only teaches the subjective knowledge but also how to live life happily and peacefully i.e. a perfect blend of Siksha and Vidhya. And today whatever I am its only because of DSVV. I am fortune that presently I am working on movie Jai Gurudev.

Ashwani Patel, (Animation and Visual effects, 2010-11) Jr. Match movie artist in MPC, Bangalore

Transforming moments of my life

The classes by Prof. Jitendra Tiwari were indeed unique experience of my life . These were really the life transforming moments of my life. DSVV taught us how to surmount over the mountains of difficulties. The classes on the Gita and Meditation by Hon. Dr. Saheb have become the golden chapters of my life which I often go through and get spiritually recharged.

Abhishek Tiwari, M.Sc, Clinical psychology, DSVV, 2010-12
Clinical Psychologist
in New Delhi

कभी भुला न पाएंगे

देव संस्कृति विश्वविद्यालय से बी.एड प्रशिक्षण काल के दौरान मैनें ''मेन मेकिंग'' (मानव निर्माण) कथन को सार्थक होते अनुभव किया। यहां शिक्षण-प्रशिक्षण के दौरान मैने सीखा कि बालकों की शारीरिक एवं मानसिक अवस्था अधिगम को कितना प्रभावित करती है? तथा उचित समायोजन कैसे किया जाता है, यह सूत्र जहा स्वामी नित्यानंद सरस्वती विद्यालय, सप्तऋषि हरिद्वार में अध्यापन कार्य कर रही हू, वहां अपनाया और देखा कि विद्यालय में अनुशासन तो स्थापित हुआ ही, साथ में बालकों का अधिगम स्तर भी बढ़ गया है। यहां जितना प्रत्यक्ष से सीखा उससे अधिक विश्वविद्यालय का समूचा तंत्र परोक्ष में सिखाता रहा है। शिक्षा के साथ-साथ जीवन सूत्रों का अध्ययन-अध्यापन हमारी विशेष उपलब्धि रही है, जिसे मैं हमेशा मिस करती हूं। मैं जीवन भर इस विश्वविद्यालय को कभी भुला नहीं सकती।

गायत्री धाकड़, बी.एड. (2011-12) अध्यापिका, स्वामी नित्यानंद सरस्वती विद्यालय हरिद्वार

राजनीति से धर्म-विज्ञान तक का सफर

देसंविवि से धर्मविज्ञान कोर्स करने से पहले पहले और बाद के जीवन में जमीन आसमान का फर्क था। पहले की सोच क्योंकि मैं राजनैतिक छत्र संगठन में उच्च पद पर था और मेरठ विश्वविद्यालय की छत्र राजनीति में अच्छी पकड़ रखता था। अचानक ही न जाने क्यों उस सब से दूर मेरा प्रवेश धर्मविज्ञान में हो गया उसके बाद मेरे निजी जीवन और सामाजिक सोच में आमूल चूल परिवर्तन हुआ।

जहाँ पहले मेरे अन्दर राजनैतिक वातवरण के कारण केवल मैं और सिर्फ मेरा की भावना रहती थी। कुलाधिपति जी की गीता की क्लास ने समझाया की 'मैं-मैं' करने से ज्यादा फायदा 'हम' को अपनाने में है। उससे सबको आगे बढ़ाने की भावना विकसित हुई जो आजतक है। उसके अलावा धर्मविज्ञान का क्रांतिकारी पाठ्यक्रम और आचार्यों की आचरण द्वारा दी गयी विद्या ने समझाया कि समाज की हर समस्या हल राजनीति से नहीं धर्मनीति से होना है और हम सबको कुमारजीवए विवेकानन्द की तरह समाजोपयोगी प्रयास आजीवन करने है। वही आजतक जीवन का उद्देश्य बना हुआ है। यह वहीं का फल है जो 2007 से आजतक अकेले मेरठ और उसके आसपास के गाँव में 1000 से ज्यादा योग और व्यक्तित्व परिष्कार शिविर आयोजित हो सके है।

रवीश कुमार, धर्म विज्ञान (2006-07) प्रवक्ता, बीएड विभाग, एमआईटी मेरठ

Learnt to be tougher than tough times

Its been a wonderful opportunity to spend 3 years of life in DSVV. With the growing moments I got desired spiritual support. The experience gave me the courage and strength to live in tuff time. Whenever I think about DSVV my heart says: "LIVE LIFE HERE - LEARN LIFE HERE"

Ram Suthar (B.Sc., DSVV, 2006-09) iPhone Software Developer, Octal Info Solution, Jaipur, Rajasthan

Proud to be a DSVVian

अनुभूतियों की सतरंगी छटा

यादों का वो इंद्रधनुष, जीवन के वो पल स्वर्णिम, मिली थी एक दृष्टि नवल, गढ़ रहे अब भविष्य उज्ज्वल।। कुछ ऐसे ही उद्गार हैं पूज्यगुरुदेव के सपनों के विश्वविद्यालय से पढ़कर निकले विद्यार्थियों के। एक सपना लेकर वे यहाँ प्रविष्ट हुए थे, कुंभकार की तरह यहां के वातावरण, यहां के आचार्यों ने उन्हें गढ़ा था। किया था कुछ संस्कार बीजों का रोपण। आज वे किस रुप में अंकुरित हो कर कैसी फसल बनकर लहलहा रहे हैं, दीक्षान्त के पल में विहंगावलोकन का एक अवसर है। प्रस्तुत है कुछ ऐसे ही देसंविवि से दीक्षित छात्र-छात्राओं के अनुभवों, यादों, उपलब्धियों एवं संकल्पों की इंद्रधनुषि छटाएं जो वे इन विशिष्ट पलों में सबके साथ साझा करना चाहते हैं।

A place to learn practical Spirituality

"DSVV its not only a university, it is a divine place for making human in real sense, even I have no words to explain its goodness, for me it's just like my father who taught me the real meaning and purpose of life in every aspect. It's a unique place where we learn spirituality in practical sense, that how can we spend a Techno-Spiritual life. DSVV (CS Department) gives opportunity to make our carrier bright and successful."

Shivangi Patel (B.Sc., DSVV[2008-11])
Junior Technical Associate,
Tech Mahindra, Pune

यादें जो आज भी हमें बना देती हैं भावुक

जब मैं 2005 में प्रवेश परीक्षा देने शांतिकुंज पहुंचा तो ठहरने के लिए कैंटीन के सामने वाले तंबू में मुझे जगह मिली। शुक्र है कि आज वहां टिन शेड है। रात में वहां सोते ही भारी बारिश शुरू हुई और मैं जिधर बिस्तर खींचता, वहीं पानी गिरने लगता। खैर, गुरुजी को कोसते हुए मैंने रात काटी। लेकिन मेरे धैर्य की यह पहली परीक्षा थी। एडमिशन के बाद जब हम पहली बार नोएडा गए तो पूरे बैच को माताजी के चौके में बिठाकर खाना खिलाया गया। यह वैसा ही अनुभव था जैसे हमारा परिवार पढ़ने के लिए हमें कहीं बाहर भेज रहा हो। एक बार मैं विश्वविद्यालय कैंपस में ब्लैक कार्गो और टी-शर्ट पहनकर घूम रहा था? कि जितेंद्र भैय्या सामने टकरा गए। मुझे लगा, डांट पड़ेगी। लेकिन उन्होंने कहा, बहुत स्मार्ट लग रहे हो। यह सुनकर मैं बुरी तरह झेंपा। एक बार मुझसे वहां किसी ने कहा था कि यहां अगर तुम सकारात्मक सोचोगे तो सकारात्मक परिणाम मिलेगा और अगर नकारात्मक सोचोगे तो नकारात्मक। मैं अनुभव के आधार पर कह सकता हूं कि यह बात बिलकुल सही है। सुखनंदन भैय्या का मां एलबम के भजन सुनना, तो अजय भैय्या के जोरदार कमेंट। स्मिता दीदी का मुझे और दोनों भैय्या लोगों को अमर-अकबर-एंथनी कहना। वो यादें आज भी भावुक कर देती हैं। वहां के अनुभवों ने धैर्य रखना सिखाया है। यह आभास दिलो-दिमाग में हमेशा बना रहता है कि कोई सत्ता है जो हमारी रक्षा और मदद के लिए हमारे साथ है।

अमरदीप त्रिपाठी, (2005-07)
एमए पत्रकारिता एवं जनसंचार,
उप-सम्पादक, अमर उजाला,
नोएडा

देसंविवि में आकर सीखा योग का मर्म

वेदमाता माँ गायत्री, गुरुदेव तथा माता जी की लीलामयी अनुकम्पा से मुझे सत्र 2001 से 2004 में विद्या के इस सारस्वत मन्दिर में अध्ययन का सौभाग्य प्राप्त हुआ! आज मैं जब अपनी उस बीते कालखण्ड के विद्यार्थी जीवन पर दृष्टिपात करता हूँ तो स्वंय मैं हर्ष और गौरव की सम्मिलत अनुभूति का अनुभव करता हूँ। इस विद्या केन्द्र के संस्कार आज वर्तमान में मेरी रक्त कणिकाओं के साथ संलग्न होकर मेरी संपूर्ण चेतना में प्रवाहमान है। इस विवि के मनीषी शिक्षकों, गुरुजनों ने मुझे न केवल साक्षरित करने का प्रयत्न किया अपितु मेरे आत्मिक उन्नयन और परा-आध्यात्मिक उन्नति का कार्य भी सहज ही कर दिया। भारतीय मनीषा की सर्वोत्कृष्ट उपलब्धि जिन्हें हमारे ऋषि मुनियों ने अन्तःमन में प्रयोग कर निकाला अर्थात योग का सात्विक समावेश मेरे जीवन में करने का श्रेय भी इसी महान शिक्षा संस्थान तथा गुरुजनों को जाता है। आज जब भी में स्वयं अपने विद्यार्थियों को पढ़ाता हूं तो लगता है योग जैसे विषय को मुझे पढ़ाकर मेरे गुरुजनों ने मुझ पर बहुत बड़ा उपकार किया है। मै इस शिक्षा संस्थान की चतुर्मुखी उन्नति एवं विकासमान उज्जवल भविष्य की मार्गलिक कामना करता हूँ।

डा. भानु प्रकाश जोशी,
योगविज्ञान, देसंविवि (2002-04)
विभागाध्यक्ष, योग विभाग,
उत्तराखंड मुक्त
विश्वविद्यालय, हल्द्वानी

The most memorable period of my life

During this period I learnt many things both technical and spiritual. My faculties were very good who taught me very well. I worked in PIXION for two years. Then I came back to DSVV in may, 2012 and gave my services for seven months, this was the most memorable period of my life. Teaching was a great experience and I tried to deliver my skills in the best possible manner. I also learned many aspects related to spirituality through the meditation & Gita classes conducted by Honorable Chancellor sir and Jitendra sir. The creative spiritual vibrations can be easily felt here.

-Nikita Sharma, Animation and Visual Effect, (2008 -09). RHYTHM & HUES STUDIO (MUMBAI), as BG PREP ARTIST

The Source of my Energy and Inspiration

DSVV is a University as different not only in India but also in the world committed to inculcate morality and values, which make its students good human beings and responsible citizens. Now I find that those were the golden days in my life when I lived in this environment. I can't forget the lessons & norms whatever I got from the academic classes/ Geeta & Meditation classes and so on here. It's a truth that I work there but I get energy and inspiration continuously for best of my job from my mother university DSVV. Now I can say "Proud to be a Dsvvian." I promise that whenever there will be a need to work in my mother university I would feel it my best fortune to serve it.

Rajani Kant Jayswal,
Travel Consultant & Sales Executive
Asian Routes Pvt. Ltd.,
New Delhi

स्नेह से संस्कारित वह अद्भुत ताना-वाना

प्रभात के समय मैं गौ-शाला से लौटकर, महाकाल को दंडवत कर खड़ा ही हुआ था कि एक छात्रा चंदन की थाली लिए और अन्य मुझको घेरे हुए। ऐसा तो कभी न हुआ। याद किया तो आज मेरा जन्मदिन भी न था। तभी पूरे समूह ने एक स्वर में रक्षाबंधन की बधाई दी। अहा, आज रक्षाबंधन है!' मेरे मुख से निकला। मेरा माथा तिलक और हाथ रंग-बिरंगी राखियों से सज गया। मुझे यह आभाष हुआ, मानो मेरे सिर पर बहुत बड़ा ताज रख दिया गया हो और हाथों में दुनिया की सारी शक्ति! तब मन में एक संकल्प उभरा कि मात्र-शक्ति की रक्षा के लिए हमेशा आगे रहूंगा। विश्वविद्यालय में मेरा प्रवेश समग्र, व्यापक और गहन अध्ययन को लेकर हुआ था, लेकिन शिक्षा-दीक्षा के साथ सहपाठियों के भरपूर बंधुत्व और गुरूजनों के स्नेह से संस्कारित जो ताना-बाना यहां बना, सब अद्भुत था।

दिनेश चंद्र सेमवाल, एमजेएमसी (2006-08)
सम्पादक, संचार निदेशालय कृषि विवि पंतनगर

जीवन का रुपाँतरण हो गया

मैने 2004 में योग एव मानवीय चेतना विभाग से एमए पूर्ण किया। मई 2005 में शांतिकुज की और से योग के प्रचार हेंतु रशिया जाने का सौभाग्य प्राप्त हुआ। श्रीरामकृष्ण परमहंस एव आचार्य श्रीराम शर्मा के यौगिक साधना एव धर्म संबंधित अवधारणा के विवेचनात्मक अध्ययन की आवश्यकता बताई। इससे प्ररित होकर 2004 में पीएचडी शोध हेतु पंजीयन कर दिया। और उनके मार्गदर्शन में यह शोधकार्य 2011 को पूर्ण कर किया। निष्कर्ष रूप में यह कह सकता हूं कि देव संस्कृति विश्वविद्यालय में अध्ययन से मेंरे पूरे जीवन का रूपान्तरण हो गया।

डा. नितिन डोमणे, योग विज्ञान, देसंविवि, (2002-05)
योग प्रशिक्षक राजकीय स्नातकोत्तर
महाविद्यालय रामनगर नैनीताल

Transforming moments of my life

The classes by Prof. Jitendra Tiwari were indeed unique experience of my life . These were really the life transforming moments of my life. DSVV taught us how to surmount over the mountains of difficulties. The classes on the Gita and Meditation by Hon. Dr. Saheb have become the golden chapters of my life which I often go through and get spiritually recharged.

Abhishek Tiwari, M.Sc, Clinical psychology, DSVV, 2010-12
Clinical Psychologist
in New Delhi

Perfect blend of Siksha and Vidhya

Every moment spent in DSVV gave me lots of unforgetful memories. DSVV is the best place of learning with fun. It not only teaches the subjective knowledge but also how to live life happily and peacefully i.e. a perfect blend of Siksha and Vidhya. And today whatever I am its only because of DSVV. I am fortune that presently I am working on movie Jai Gurudev.

Ashwani Patel, (Animation and Visual effects, 2010-11) Jr. Match movie artist in MPC, Bangalore

कभी भुला न पाएंगे

देव संस्कृति विश्वविद्यालय से बी.एड. प्रशिक्षण काल के दौरान मैनें ''मेन मेकिंग'' (मानव निर्माण) कथन को सार्थक होते अनुभव किया। यहां शिक्षण-प्रशिक्षण के दौरान मैनें सीखा कि बालकों की शारीरिक एवं मानसिक अवस्था अधिगम को कितना प्रभावित करती है? तथा उचित समायोजन कैसे किया जाता है, यह सूत्र जहां स्वामी नित्यानंद सरस्वती विद्यालय, सप्तऋषि हरिद्वार में अध्यापन कार्य कर रही हू, वहा अपनाया और देखा कि विद्यालय मे अनुशासन तो स्थापित हुआ ही, साथ में बालकों का अधिगम स्तर भी बढ़ गया है। यहां जितना प्रत्यक्ष से सीखा उससे अधिक विश्वविद्यालय का समूचा तंत्र परोक्ष में सिखाता रहा है। शिक्षा के साथ-साथ जीवन सूत्रों का अध्ययन-अध्यापन हमारी विशेष उपलब्धि रही है, जिसे मैं हमेशा मिस करती हूं। मैं जीवन भर इस विश्वविद्यालय को कभी भुला नहीं सकती।

गायत्री धाकड़, बी.एड. (2011-12) अध्यापिका, स्वामी नित्यानंद सरस्वती विद्यालय हरिद्वार

Learnt to be tougher than tough times

Its been a wonderful opportunity to spend 3 years of life in DSVV. With the growing moments I got desired spiritual support. The experience gave me the courage and strength to live in tuff time. Whenever I think about DSVV my heart says: "LIVE LIFE HERE - LEARN LIFE HERE"

Ram Suthar (B.Sc., DSVV, 2006-09) iPhone Software Developer, Octal Info Solution, Jaipur, Rajasthan

राजनीति से धर्म-विज्ञान तक का सफर

देसंविवि से धर्मविज्ञान कोर्स करने से पहले पहले और बाद के जीवन में जमीन आसमान का फर्क था। पहले की सोच क्योंकि मैं राजनैतिक छात्र संगठन में उच्च पद पर था और मेरठ विश्वविद्यालय की छात्र राजनीति में अच्छी पकड़ रखता था। अचानक ही न जाने क्यों उस सब से दूर मेरा प्रवेश धर्मविज्ञान में हो गया उसके बाद मेरे निजी जीवन और सामाजिक सोच में आमूल चूल परिवर्तन हुआ। जहाँ पहले मेरे अन्दर राजनैतिक वातवरण के कारण केवल मैं और सिर्फ मेरा की भावना रहती थी। कुलाधिपति जी की गीता की क्लास ने समझाया की 'मैं-मैं' करने से ज्यादा फायदा 'हम' को अपनाने में है। उससे सबको आगे बढ़ाने की भावना विकसित हुई जो आजतक है। उसके अलावा धर्मविज्ञान का क्रांतिकारी पाठ्यक्रम और आचार्यों की आचरण द्वारा दी गयी विद्या ने समझाया कि समाज की हर समस्या हल राजनीति से नहीं धर्मनीति से होना है और हम सबको कुमारजीवए विवेकानन्द की तरह समाजोपयोगी प्रयास आजीवन करने है। वही आजतक जीवन का उद्देश्य बना हुआ है। यह वहीं का फल है जो 2007 से आजतक अकेले मेरठ और उसके आसपास के गाँव में 1000 से ज्यादा योग और व्यक्तित्व परिष्कार शिविर आयोजित हो सके है।

रवीश कुमार, धर्म विज्ञान, (2006-07) प्रवक्ता, बीएड विभाग, एमआईटी मेरठ

देव संस्कृति विश्वविद्यालय

वैश्विक सांस्कृतिक एवं आध्यात्मिक पुनर्जागरण के लिए समर्पित

गायत्रीकुञ्ज-शान्तिकुञ्ज, हरिद्वार-249411, (उत्तराखण्ड)
info@dsvv.ac.in • www.dsvv.ac.in

संस्कृति संचार

January

Sun	Mon	Tue	Wed	Thu	Fri	Sat
		01	02	03	04	05
06	07	08	09	10	11	12
13	14	15	16	17	18	19
20	21	22	23	24	25	26
27	28	29	30	31		

February

Sun	Mon	Tue	Wed	Thu	Fri	Sat
31					01	02
03	04	05	06	07	08	09
10	11	12	13	14	15	16
17	18	19	20	21	22	23
24	25	26	27	28		

March

Sun	Mon	Tue	Wed	Thu	Fri	Sat
31					01	02
03	04	05	06	07	08	09
10	11	12	13	14	15	16
17	18	19	20	21	22	23
24	25	26	27	28	29	30

July

Sun	Mon	Tue	Wed	Thu	Fri	Sat
	01	02	03	04	05	06
07	08	09	10	11	12	13
14	15	16	17	18	19	20
21	22	23	24	25	26	27
28	29	30	31			

August

Sun	Mon	Tue	Wed	Thu	Fri	Sat
				01	02	03
04	05	06	07	08	09	10
11	12	13	14	15	16	17
18	19	20	21	22	23	24
25	26	27	28	29	30	31

September

Sun	Mon	Tue	Wed	Thu	Fri	Sat
01	02	03	04	05	06	07
08	09	10	11	12	13	14
15	16	17	18	19	20	21
22	23	24	25	26	27	28
29	30					

देव संस्कृति विश्वविद्यालय

वैश्विक सांस्कृतिक एवं आध्यात्मिक पुनर्जागरण के लिए समर्पित

गायत्रीकुञ्ज-शान्तिकुञ्ज, हरिद्वार-249411. (उत्तराखण्ड)
info@dsvv.ac.in • www.dsvv.ac.in

संस्कृति संचार

January

Sun	Mon	Tue	Wed	Thu	Fri	Sat
		01	02	03	04	05
06	07	08	09	10	11	12
13	14	15	16	17	18	19
20	21	22	23	24	25	26
27	28	29	30	31		

February

Sun	Mon	Tue	Wed	Thu	Fri	Sat
31					01	02
03	04	05	06	07	08	09
10	11	12	13	14	15	16
17	18	19	20	21	22	23
24	25	26	27	28		

March

Sun	Mon	Tue	Wed	Thu	Fri	Sat
31					01	02
03	04	05	06	07	08	09
10	11	12	13	14	15	16
17	18	19	20	21	22	23
24	25	26	27	28	29	30

July

Sun	Mon	Tue	Wed	Thu	Fri	Sat
	01	02	03	04	05	06
07	08	09	10	11	12	13
14	15	16	17	18	19	20
21	22	23	24	25	26	27
28	29	30	31			

August

Sun	Mon	Tue	Wed	Thu	Fri	Sat
				01	02	03
04	05	06	07	08	09	10
11	12	13	14	15	16	17
18	19	20	21	22	23	24
25	26	27	28	29	30	31

September

Sun	Mon	Tue	Wed	Thu	Fri	Sat
01	02	03	04	05	06	07
08	09	10	11	12	13	14
15	16	17	18	19	20	21
22	23	24	25	26	27	28
29	30					

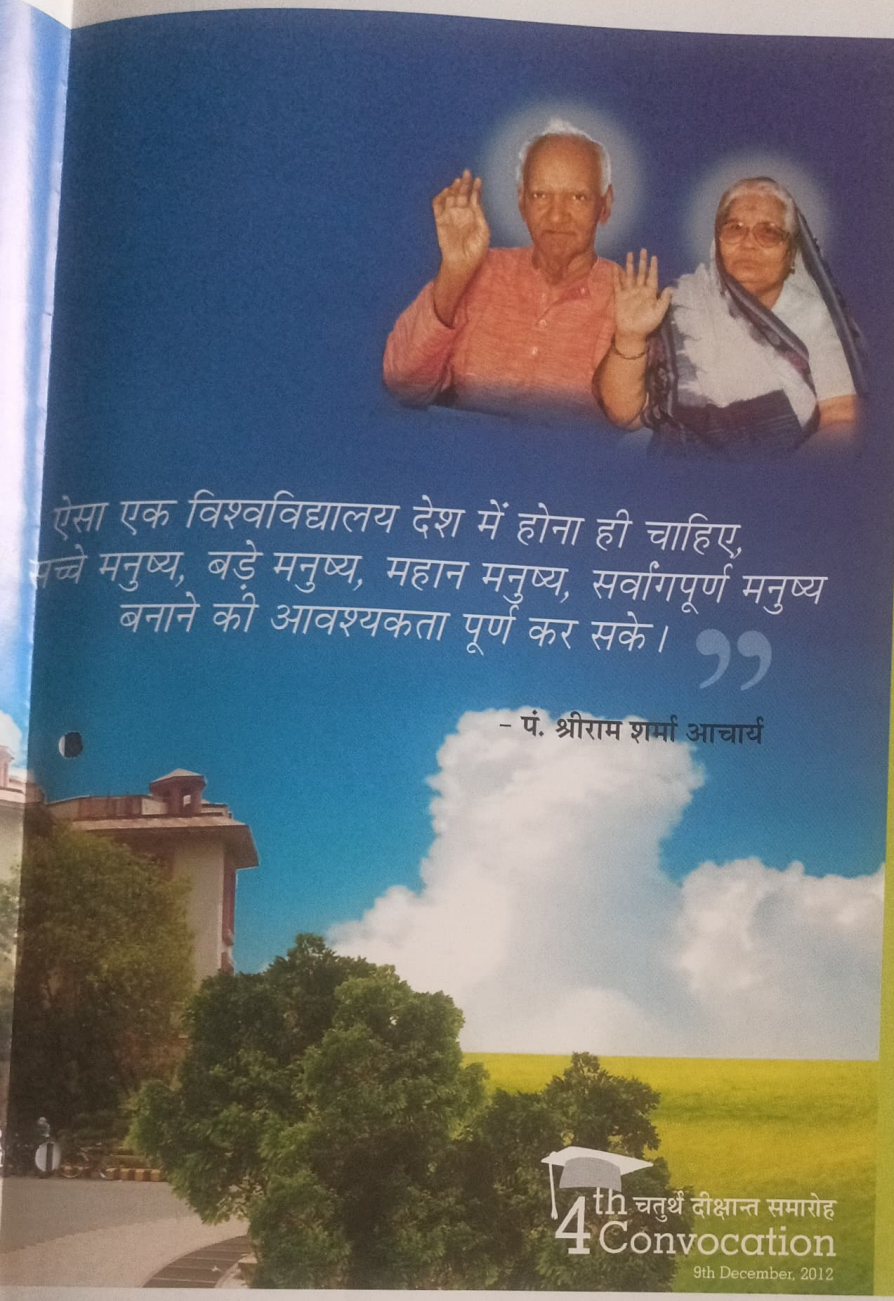

COURSES OFFERED

Master Degree Courses -

1. Master of Arts (M.A.)
   - Clinical Psychology
   - Applied Yog & Human Excellence
   - Applied Education
   - Journalism & Mass Communication
   - Ancient Indian History & Culture
   - Tourism Management
2. Master of Science (M.Sc.)
   - Clinical Psychology
   - Computer Science
   - Yogic Science & Holistic Health

Graduation Courses -

1. Bachelor of Science (B.Sc.)
   - Yogic Science & Human-Consciousness
   - Psychology
   - Computer Application
   - Mathematics
   - Environmental Science
   - Life Management
   - English Communication skills
   - Scientific Spirituality
2. Bachelor of Arts (B.A.)
   - Yogic Science & Human-Consciousness
   - Psychology
   - Indian Culture
   - Tourism Studies
   - English Literature
   - Education
   - Sanskrit
   - Life Management
   - English Communication skills
   - Scientific Spirituality
3. Bachelor of Education (B.Ed.)
4. Bachelor of Computer Application
5. P.G.Diploma Courses
   - Human Consciousness & Yog-Therapy
6. Diploma Courses -
   - Visual Effects: Compositing
   - Advance Diploma in Visual Effects
   - Rural Development
7. Certificate Courses -
   - Holistic Health Management
   - Theology
   - Yog & Alternative Therapy
   - Handloom Technology

April

Sun	Mon	Tue	Wed	Thu	Fri	Sat
	01	02	03	04	05	06
07	08	09	10	11	12	13
14	15	16	17	18	19	20
21	22	23	24	25	26	27
28	29	30				

May

Sun	Mon	Tue	Wed	Thu	Fri	Sat
			01	02	03	04
05	06	07	08	09	10	11
12	13	14	15	16	17	18
19	20	21	22	23	24	25
26	27	28	29	30	31	

June

Sun	Mon	Tue	Wed	Thu	Fri	Sat
30						01
02	03	04	05	06	07	08
09	10	11	12	13	14	15
16	17	18	19	20	21	22
23	24	25	26	27	28	29

October

un	Mon	Tue	Wed	Thu	Fri	Sat
		01	02	03	04	05
07	08	09	10	11	12	
14	15	16	17	18	19	
21	22	23	24	25	26	
28	29	30	31			

November

Sun	Mon	Tue	Wed	Thu	Fri	Sat
					01	02
03	04	05	06	07	08	09
10	11	12	13	14	15	16
17	18	19	20	21	22	23
24	25	26	27	28	29	30

December

Sun	Mon	Tue	Wed	Thu	Fri	Sat
01	02	03	04	05	06	07
08	09	10	11	12	13	14
15	16	17	18	19	20	21
22	23	24	25	26	27	28
29	30	31				

3rd International Yoga Festival at Dev Sanskriti University

Triveni of Yoga, Culture and Spirituality

Master Strokes

Yoga is excellence in action. Yoga teaches us the art of living. Culture is cultivating the divine human virtues within oneself. The self awareness is the another name of spirituality. The Geeta is the classic book on yoga, unveiling the philosophy and science of yoga in the easiest way.

HH Dr. Pranav Pandya
Chancellor, DSVV,Haridwar

Yoga is, in fact, the mirror, looking at which we decorate our soul. By looking at this mirror regularly we can, of course, wash away our inner dirt and enlighten our soul for God realization.

- HH Swami Satyamitrananda Giri
Founder, Patron, Bharat Mata temple

Today the whole world is involved in collecting the weapons of mass destruction but it is spiritually which can solve all the problems of the day. Years ago Sri Ram Sharma Acharya has provided the mantra for universal peace and harmony in the form of slogans like *"Hum Badlenge-Yug Badlega, Hum Sudhrenge-Yug Sudhrega".*

- Padmasri Dr. D.R. Kartikeyan
Ex- C.B.I, Chief

Spirituality is the basic aspect of human being. Yoga is the knowledge transcending all religions. It is eternal and ever flowing from India, the lands of Rishis, for the welfare of the whole humanity.

- HH Emy Blesio, Italy

Through yoga and spirituality we can raise human consciousness and bring peace and harmony in the world and justify our existence as true human beings. India has a lot of yogic and spiritual wisdom to learn. Whatever have I learned here I will take it to Italy for everyone's betterment.

- Bhai Hari Singh Khalsa
Kundalini Yoga Expert

With the practice of yoga comes self - realization. No difference, no veil of illusion remains between the individual soul and god. He just begins to say "I am God, I am That, I am what He is". But how can we attain this supreme state? This is possible only through service, love, compassion and selfless action. This is what the Vedanta teaches us.

- HH Shankara,
Founder, Shankar Yoga Ashrama, Brazil.

We love India as it has taught the whole world to love others. It is the land of yoga. This is what makes India a great nation in the eyes of the world. This is possible because India has enlarged it's heart as deaf as the ocean and as high as the sky due to yoga and spirituality. We are fortunate to have this spiritual gathering on the bank of the holy Ganges.

- Jagad Guru Amrit Suryananda,
president, Yoga confederation, Portuguese

With the chanting of Vedic mantra and lightening of the lamp by his holiness Swami Satyamitrananda Giri and HH Dr Pranav Pandya, the 3rd international festival on Yoga, Culture and Spirituality at DSVV, began on the historic and auspicious day of 2nd of October, the birthday of Mahatma Gandhi and Lal Bahadur Shastri, the two great personalities and role models of the great nation, India.

Over 500 experts from 20 countries took part in the festival that was indeed, the global meet and conglomeration of varied cultures.

The eminent scholars and aspirants felicitating the festival with their spiritual wisdom were his holiness, Dr. Pranav Pandya, his holiness Swami Satyamitrananda Giri, Sri Gaurishankar Sharma, Shantikunj, Dr. S.D. Sharma, V.C. DSVV, Sri Sandeep Kumar- Registrar DSVV, Padmasri Dr. Kartikeyan, Ex CBI chief, Sadhvi Bhagwati Saraswati, Parmarth Niketan, Risikesh, Bhai Hari Singh Khalsa, HH Shankar, Brazil, Emy Blesio, Italy, Prof. Marx Smicky, Italy, Swami Suryanada Saraswati, Portuguese etc.

The experimental and scientific sessions of Holistic Health, Pranic Healing, Ayurveda, Acupressure, Naturopathy, Spiritual Counseling, Meditation, Yoga Nidra under the expert guidance of Dr. Chinmay Pandya were in fact like varied lotuses bloomed in the pond of this festival, impressing, touching and transforming simultaneously body, mind and spirit of the aspirants.

The spiritual session led by his holiness Dr. Pranav Pandya was just showering the drops of spiritual wisdom on the aspirants, washing away the dirts of evil Sanskars and enlightening their soul for self-realization.

The cultural evenings made the festival all the more memorable where, on the one hand the divine culture of India manifested itself through different cultural programmes like Kirtan, Chorus, Drama, Music, Songs, Shiva Tandava, Dances, performances of Yogasana along with the rhythm of vedic songs made the foreign delegates spell bound, on the other hand the foreign delegates from USA, UK, Russia, Portguse, Bhutan, Nepal, Austia, Italy, France, Australia etc. turned the evenings of the festival into a colourful evening in real sense of the term. It was indeed the merging of all the cultures with the divine Indian culture. And finally the day of conclusion approached on oct. 6, with the beautiful demonstration of the world Peace March along with torch and respective flags in the hands of the foreign delegates in the premises of the University. The eyes of the foreign delegates welled up with pearlesome tears of Love, peace and harmony for the global family.

A unique Fair held at DSVV

A crowd at rural shops, obstinate children buying their likes, women purchasing cosmetics, villagers enjoying panipudi, girls tasting chat and golgappe- these are the things which really remind us of a rural market on a market held in a village on the occasion of any big festivals. But very fortunate were the students of DSVV to have visited such a unique fair at their own university premises.

Yes, it was the occasion of the third international yoga Festival held at DSVV on Oct 2-6-12 when a mini market and fair descended in the university premises.

All the shops whether they be panipudi stall, stall having english speaking course books, books on personality development authored by the Yugrishi Pt. Sri Ram Sharma Acharya, the products of Srijna or University's training cell like handkerchief, toys, Dolls, Baskets, pickles, Murabbas, Bhelpudi, Pujathal, Henna, Incence sticks, Shawls or stall having sweets like Rasgulla, Gulab Jamun or Ice Cream- they were well arranged and systematicaly drawing maximum people. The Bhelpuri panipudi and icecream stalls were drawing more and more people. Even the cow based products were in high demand among the local people came from Haripur Kalan and other localities. Not to speak of the stall having Henna, it remained crowded by foreigners and other girls and women throughout the fair.

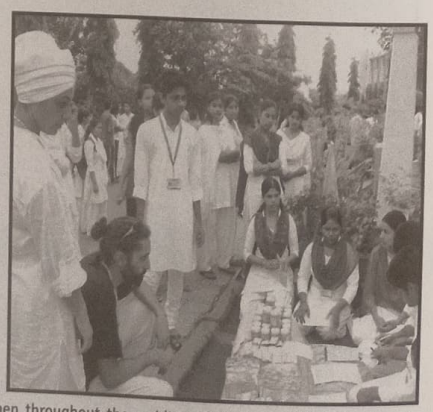

The foreign women's pleasure whole smearing henna on their heads were w orthseing. They were indeed looking Indians in foreign bodies. The whole atmosphere was full of pleasure and merriments. The foreign delegates riding a bullock cart added a new beauty to this fair. They enjoyed it from the bottom of heart.

The whole scenario looked as if the India with her rural culture had manifested herself in the fair. This is what everyone enjoyed and experienced here.

15th India Conference of WAVES on Veda and Thought Revolution in DSVV

Divine light of the Vedas

On March 17, 2012 Dev Sanskriti University felt itself very fortunate to have hosted and concluded a well-attended four day conference on "Veda and Thought Revolution" that featured prominent scholars worldwide and robust youth participation from colleges and Universities, including members of Gayatri Pariwar. For four days, eminent scholars from various institutions and with diverse backgrounds presented the need and importance of "Veda and Thought Revolution". The Conference was hosted by Dev Sanskriti University, Haridwar, India in collaboration with Wider Association for Vedic Studies (WAVES) and World Association for Vedic Studies (WAVES), USA. With the chanting of Vedic mantras and lightening of the lamp the conference was inaugurated by Dr. Pranav Pandya (Chancellor of Dev Sanskriti University).

Dr. Pandya in his inaugural address, remarked, "The Vedas are the divine gift from the God Himself for the whole human being. The Vedas are like the ocean, from which we can attain several precious jems and pearls which are capable of transforming not only the individual but the whole world."

Dr. S.D. Sharma noted that, "In form of thoughts Vedas have the solution to all those problems, the whole human race is suffering from".

Dr. Chinmay Pandya, remarked, "Without adopting Vedic thoughts, we can't imagine of a beautiful individual and without a beautiful individual how can we imagine of a beautiful world."

Sri Gauri Shankar Sharma, noted, "Without Vedic knowledge our life is meaningless. If we want to be a better human being we will, of course, have to go to the Vedas."

Dr. Shashi Tiwari remarked, "Though-Revolution in practice is all about raising higher the foundation of man's character, convictions and beliefs, by turning it away from inferior pull."

Dr. Bal Ram Singh, noted, "Sharpness and strength of thoughts are the foundation of the real power in this flat world".

In his vote of thanks, Sri Sanjiv Kumar remarked, "The Vedas are the treasure house of all knowledge both physical and spiritual. They provide solutions to man's various problems through different textual references and their interpretations".

The conference drew over 500 participants. At the conclusion of the conference, many of the participants voted to adopt a set of resolutions reflecting several of the key points emerging from the conference presentations. The thoughts of Vedic seers, enshrined with universal outlook are indeed relevant for all times and places. Each registered delegates received a precious gift of all the four Vedas. They had daily opportunity to perform Vedic yoga during the conference. The conference, indeed, proved to be an attempt to facilitate a dialogue on the new dimensions of thought revolution in reference to Vedic thinking and tradition.

Just as when the ocean was charmed out by the demons and deities, the nector came out and was kept in a jar called Amrit Kalash. Likewise during this four day conference the ocean of knowledge was charmed out by the eminent scholars and researchers, and as a result of which the nector of knowledge came out which by putting into a jar can be called a Gyan Kalash, going through which we can in essence have the following points of wisdom for our inner, social and global transformation as well:

- In this era of globalization, thoughts do wield grater power than the biggest weapons in the arsenals of superpowers. The tide of collective mind creates the circumstances in its favor. Not weapons, but the force of thoughts alone can counter this tide of collective mind. This is the age in which thoughts are at war with thoughts. Whatever school of thought will have strong sway over collective mind, that will create favorable circumstances in the society.
- Nobody should doubt that, man's falling and falling standards of thoughts are at the root of mankind's individual and collective afflictions. And when we investigate their root causes, analysis would immediately expose a deep seated perversity of thinking.
- Thoughts, alone are the more-sensitive-core that needs total transformation. We must have to bring thought revolution to raise and change man's thinking and outlook, so that it can create a positive experience in the external life, too.
- Thought-Revolution is of such importance and immediate urgency that every individual must take notice, think and act now. Removing the root causes that created the problems in the first place, is the only real solution to the problems the whole human race is facing today.

4th International conference and gathering of the elders

Nourishing the Balance of the Universe

We are passing through historic moments where the pace of change is so fast and furious that the old traditions are losing their ground, the set of ideologies and values shattering and new ones evolving. In fact we are crossing through a Transition phase. A new world order is emerging out of the old one. Scientific progress has made us more affluent and sophisticated but Materialistic view of life and self centered value system has cut us off from our inner truth and the outer reality. It has also put us in a state of grave imbalance, due to which we are passing through an era of crisis at every level. The very Existence of the earth and humanity is at stake. Once again in search of lasting solution humankind is looking at the traditions old in which human being was at harmony with the surrounding world and in tune with the inner self.

With the theme of working out the way and the means to nourish the Balance of the Universe, 4th International Conference and gathering of the elders was held at DevaSanskriti University (DSVV) Haridwar, Uttrakhand, India in Collaboration with the International Centre for Cultural Studies (ICCS).

About 400 participants across the Globe from more than 35 countries gathered here. The inauguration started with the lightening of the lamp by HH Swami Dayananda Sarswaty. Inaugrating the programme Dr. Radheshyam Dwivedi, the organizer of the programme called it as a special event saturated with the feeling of 'Vasudhev kutumbkam'. Prayers of about 20 different religions and traditions were conducted by Shree Ram Vaidya.

The representatives from traditions of Maya, Pagans of Hungary, Kyrgyzstan and Poland, Native Americans from Canada & USA, Maori from New Zealand, Druid from UK, Japies from Japan, Romuva & Ramava from Lithuania and Latvia, Buddhist from Myanmar and Tibet, Cham from Vietnam, and Hindus from Nepal, Bali and South Africa, Adi and Idu Mishmi from Arunanchal Pradesh, native of Ghana presented their respective prayers and charged the audience with a spirit of Devotion and wonder. Language could not be the barrier in transmitting the message of love, devotion and peace.

Expressing the theme of the conference representative of ICCS Mr. Saumitra Gokhale called the conference to be more than an academic one, a family reunion after 3 years.

Distinguished guest Swami Dayanand Saraswati founder of Arsha Vidya Gurukul and the authority on Vedanta called it very inspiring to see so many human expressions of devotion to lord.

In his Presidential address Dr Pranav Pandya, Chancellor DSVV said that there has been much bloodshed during last decade due to various kinds of differences. Conferences like this focused on the unity of various traditions and cultures can be the effective solution in this direction. Described this year to be very special one for Sun worship.

On the occasion VC Dr. SD Sharma, Registrar Sandeep Kumar, Pro VC Dr. Chinmay Pandya, UK Vidhan Sabha Chairman Haribans Kapur, Mr. Vinod Chamoli Mayor Dehradoon, and Suresh Soni were also present. A souvenir was also released on the occasion.

The programme was anchored by Gopal Sharma and Priyanshi Berthwal.

VALIDICTORY SESSION

Valedictory session started with lightning of lamp by Dr. Pranav Pandya and RSS President Mohan Bhagwat as a chief guest. Shyam Parande welcomed all the delegates and said that diversity has impaled the community. He appreciated the divine ambience of Dev Sanskrit Vishwavidyalya, and also emphasize on creating awareness in our self; then only can we nourish the balance of universe. He has expressed the opportunity of organizing the next international gathering in the south India. After that Pragya geet was presented by the student of Dev Sanskrit Vihvawavidyalya.

Inra Chaka said when people ask me that Chaka what you do? Then I reply that I am a dreamer, today I came here in India because I dreamt for India when I was young. When I grew up I started to see society in which we don't treat everyone equally, in India guests are treated as god. Leila from USA recited the poem full of feeling and emotions about the non existence of the different country without boundaries.

Chancellor of DSVV Dr. Pranav Pandya greeted the foreign delegates and said with his Conference at Dev Sanskrit Vishwavidyalya University a new era of Revival of ancient traditions of the World has triggered. It will add a new chapter in the calendar of humanity. And at last the programme was concluded by RSS President Mohanji Bhagwat. He congratulated all for the courage for their tradition. He said that this conference on "Nourishing the Balance of universe" is a new beginning. Today world is suffering from grave misbalance of the nature; therefore world has started looking at the ancient traditions. He also emphasized to know one's tradition and live it.

At last 5 elders were awarded Doctorate of Philosophy for their contribution over the preservation and promotion of the ancient traditions they represent. PhDs were distributed by Mohanji Bhagwat and Dr. Pranav Pandya.

अखिल विश्व गायत्री परिवार के प्रमुख डॉ. प्रणव पंड्या ने किया जयपुर में 'दिया' का शुभारंभ

जयपुर स्थित गायत्री शक्तिपीठ पर डिवाइन इंडिया यूथ एसोसिएशन के शुभारंभ अवसर पर गायत्री परिजनों को संबोधित करते श्रद्धेय।

देशहित को एकजुट हों युवाः डॉ. पंड्या

कुरीति उन्मूलन में युवा निभाएं महत्वपूर्ण भूमिका

कुलाधिपति ने कहा-राजस्थान गायत्री परिवार का मस्तिष्क है

● पूजा सैनी, जेएमसी

देसंविवि, हरिद्वार : ब्रह्मपुरी, जयपुर में स्थित गायत्री शक्तिपीठ पर डिवाइन इंडिया यूथ एसोसिएशन के शुभारंभ अवसर पर अखिल विश्व गायत्री परिवार के प्रमुख एवं देव संस्कृति विश्वविद्यालय के प्रमुख डॉ. प्रणव पण्ड्या, ने देश हित के लिए युवाओं से एकजुटता का आवाहन किया और कहा कि युवा ही समाज में व्याप्त कुरीतियों को दूर करने और सामाजिक बदलाव में महत्वपूर्ण भूमिका निभा सकते हैं।

8 नवंबर को आयोजित इस कार्यक्रम में उन्होंने कहा राजस्थान गायत्री परिवार का मस्तिष्क है। इस अवसर पर उन्होंने जयपुर के युवाओं के कार्यों की सराहना की और उन्हें भविष्य योजनाओं के लिए मार्गदर्शित किया। आइआइटी के प्रोफेसर विवेक विजयवर्गीय ने आगे के कार्यक्रमों की रुपरेखा बताई। सी-स्कीम स्थिति महावीर पब्लिक स्कूल में डॉ. साहब ने विज्ञान एवं अध्यात्म विषय के समन्वय पर महत्वपूर्ण व्याख्यान दिया। इस अवसर पर 100 युवाओं ने नेत्रदान का संकल्प लिया, बनास नदी सफाई पुस्तिका विमोचन एवं वृक्षारोपण एवं रक्तदान शिविर लगाने का संकल्प लिया गया। समापन अवसर पर प्रभारी अम्बिका प्रसाद वाजपेयी व ताराचन्द शर्मा धन्यवाद दिया।

प्रांतीय युवा चेतना शिविर में किया गया युवाओं का आवाहन

देसंविवि, हरिद्वार : मिशन की आत्मा कहे जाने वाले छत्तीसगढ़ में प्रांतीय युवा चेतना शिविर का आयोजन नवम्बर किया गया। 22 नवम्बर को व्यापार विहार स्थित त्रिवेणी भवन में आयोजित शिविर में गायत्री परिवार के प्रमुख डॉ. प्रणव पण्ड्या जी ने युवाओं को जीवन जीने की कला के बहुमूल्य सूत्र प्रदान किये। उन्होंने कहा कि नवसृजन के लिए युवाओं की भागीदारी समय की आवश्यकता हैं। संकल्प शक्ति के बल पर आज के युवाओं को अपने कार्यों में सेवा साधना का समावेश करना चाहिए। कायक्रम में छत्तीसगढ़ की विभिन्न जगहों से आये युवाओं ने हिस्सा लिया। शिविर का मुख्य उद्देश्य नये युवा जोड़ो अभियान के अन्तर्गत भावी सक्रियता के लिए युवा शक्ति का जागरण करना रहा।

कार्यक्रम में देव संस्कृति विद्यालय के संचालक प्रो. डी.आर.साहू जी ने सफलता पाने व सेवा साधना करते रहने के मंत्र दिये। विद्यालय के अरविंद वर्मा, उदल पटेल, टी.एन. साहू, संतोष, मंजु, जानकी, परमेश्वर, के.के., जीतेंद्र तथा यशोदा जी आदि शिक्षक-शिक्षिकाओं का कार्यक्रम हेतु विशेष योगदान रहा। योग प्रदर्शन की प्रस्तुति विश्वविद्यालय के छात्र बृजेश कश्यप के नेतृत्व की गई ईश्वरी तथा नीलकंठ की विशेष भागीदारी रही। अंतिम चरण में विद्यालय के प्राचार्य नरेंद्र साहू ने आभार ज्ञापन कर सभी के उज्ज्वल भविष्य की कामना की।

सफलता के मंत्र

- कैसे हो लक्ष्य का निर्धारण।
- जीवनशैली में हो समय संयम का समावेश।
- जीवंत रूप में दिखे सच्चाई व ईमानदारी।
- स्वाध्याय बनें व्यक्तित्व विकास का आधार।
- समझदारी, ईमानदारी, बहादुरी बनाए रखें।
- सकारात्मक सोच अपनाएं।

लोगों ने लिया संकल्प

- नेत्रदान के लिए भरे फार्म।
- बनास नदी सफाई पुस्तिका का विमोचन।
- पर्यावरण सरक्षण के लिए वृक्ष लगाने का संकल्प।
- मानसरोवर एवं सांगानेर के युवाओं ने लिया रक्तदान शिविर लगाने का संकल्प।

करें ग्रामतीर्थों की परिव्रज्या

● विवेक कुमार, जेएमसी (पूर्व छात्र)

देसंविवि, हरिद्वार :वर्तमान में उपजी सभी समस्याओं का समाधान युगऋषि पं. श्रीराम शर्मा ने 70-80 के दशक में ही ग्रामतीर्थ बनाने की योजना के रूप में दे दिया था। उन्होंने ग्राम-तीर्थयात्राएँ चलाने के लिए बहुत जोर दिया था। इसी आधार पर शांतिकुंज द्वारा मार्च-अप्रैल 2013 में **ग्रामतीर्थ यात्रा परिव्रज्या** योजना की घोषणा की गयी। जिसके लिए देशभर में बने गायत्री प्रज्ञापीठों, शक्तिपीठों में टोलियों को प्रशिक्षण देने का कार्य शुरु कर दिया गया है। गायत्री जयंती तक 200 पीठें सक्रिय होकर लगभग 10,000 गांवों तक पहुँचकर भारतीय संस्कृति के मेरुदंड को स्वस्थ बनाने की दिशा में प्रयास करेंगी। इस कार्य को करने वाले परिव्राजकों में नयी ऊर्जा संचार एवं गतिशीलता की प्रेरणा सूर्य, चन्द्र, पवन, बादल से प्राप्त होती है जो स्वयं ही परिव्राजक बनकर भ्रमण करते और अपनी शक्ति को दूसरों की मदद करने के लिए यह प्रतीक्षा नहीं करते कि कष्ट पीड़ित लोग हमारे दरवाजे पर आकर याचना करेंगे, तब उनकी सहायता करेंगे। उदार लोग स्वंय ही दौड़कर जाते हैं।

> गांवों में विश्वम् पुष्टम् ग्रामे, अस्मिन अनातुरम के स्वरूप को पुनर्जीवित करने के लिए गायत्री तीर्थ मार्च-अप्रैल 2013 में चलाएगा ग्रामतीर्थ परिव्रज्या यात्राएं जिसके तहत संस्कृति के मेरुदंड लगभग दस हजार गांवों को जीवंत एवं जाग्रत बनाने की योजना है।

विश्वम् पुष्टम् ग्रामे, अस्मिन अनातुरम अर्थात गांव अपने में विश्व को पुष्ट करने वाली ऐसी इकाई है। जिस में किसी भी प्रकार की व्यग्रता एवं आतुरता न हो। वास्तव में हमारे गांव इस सूत्र के अनुरुप पूर्णतया स्वावलम्बी हुआ करते थे, उन्हें अपनी आवश्यकता के लिए बाहर की ओर नहीं देखना होता था।

विकास प्रणाली पूर्णतया विकेन्द्रीकृत सामाजिक व्यवस्था आधारित थी। परन्तु आजादी के 65 वर्षों के दौरान राजतंत्रीय व्यवस्थाओं से गुजरते हुए ग्राम्य विकास का वह स्वरुप एवं ढाँचा धीरे-धीरे कर लोप होता गया। जिसके परिणाम स्वरूप गांवों से शहरों की ओर तेजी से हुए पलायन एवं गंदी बस्तियों के रूप में बढ़ती शहरी आबादी की गंभीर समस्याओं से रूबरू होना जैसे नियति बनी गई हो।

इस तीर्थयात्रा का उद्देश्य जनमानस के परिष्कार के लिए प्रणप्राण से प्रयत्न करना तथा बिखराव को एकता में, पिछड़ेपन को प्रगति में,आलस्य को पुरुषार्थ में, अनीति को न्याय में और क्षुद्रता को महानता में परिवर्तित करना है। इसका संपूर्ण एकनिष्ठ लक्ष्य मनुष्य में देवत्व का उदय और धरती पर स्वर्ग का अवतरण है। जिसके लिए नैतिक, बौद्धिक एवं सामाजिक उत्कृष्टता की स्थापना नितांत आवश्यक है। हम व्यक्ति, परिवार और समाज की आदर्शवादी रचना के लिए प्रयत्नशील हैं और यही दृष्टिकोण तीर्थयात्रा में सन्निहित धर्म प्रचार का मुख्य स्वरूप है। इसका प्रतिफल अनेक यज्ञों के समकक्ष होना सुनिश्चित है।

आपदा प्रबंधन कार्यशाला में सीखी बचाव की शैली

● रविता श्रीवास्तव, जेएमसी

देसंविवि, हरिद्वार : आपदाओं के प्रति सजगता लाने के उद्देश्य को शांतिकुंज का आपदा प्रबंधन विभाग, विगत कई वर्षों से सक्रिय है। इसी कार्य को आगे बढ़ाते हुए 5 दिवसीय आपदा प्रबंधन शिविर का आयोजन किया गया। इस शिविर में उत्तरकाशी, टिहरी, नैनीताल, अल्मोड़ा, चपावत, पौड़ी व रूद्रप्रयाग आदि स्थानों से आये राज्य सरकार आपदा प्रबंधन विभाग के 50 प्रतिभागियों ने हिस्सा लिया।

शिविर का मुख्य उद्देश्य रहा सरकारी तंत्र के साथ मिलकर गांवो में स्थाई आपदा के लिए भी लोगों को तैयार करना था। शिविर में शामिल हुए उत्तराखण्ड आपदा प्रबंधन विभाग के टीम सदस्यों ने पूरे उत्साह के साथ शांतिकुंज की दिनचर्या में भी भाग लिया।

शांतिकुंज का आपदा प्रबंधन विभाग समाज सेवा व आध्यात्मिक विकास को लेकर कार्यक्रम चलता है। शिविर में धारचूला ब्लॉक विकास खण्ड बालिंग व पांगु गाँव से आये दो सदस्यों का कहा कि हम जिस गाँव से हैं वहाँ संचार साधनों की कमी हैं पर सेटेलाइट फोन से हमें सूचित किया गया जिससे हमें खुशी है कि हमें यहाँ आकर जीवन का सकारात्मक नजरिया मिला। देहरादून आपदा प्रबंधन विभाग के अनिल सकलानी कार्यक्रम के मुख्य प्रशिक्षक रहे। शिविर के समापन के अवसर पर अखिल विश्व गायत्री परिवार के प्रमुख डॉ. प्रणव पण्ड्या ने सभी प्रतिभागियों को प्रमाण पत्र प्रदान किए।

शांतिकुंज के आध्यात्मिक से परिपूर्ण वातावरण से हमें अपार सकारात्मक ऊर्जा का एहसास हो रहा, हम प्राकृतिक आपदाओं से निपटना तो सीख ही रहे हैं साथ ही स्थायी आपदाओं जैसे बेरोजगारी, अशिक्षा, पर्यावरण प्रदूषण, कुसंस्कार, नशा आदि से मानव जाति को कैसे बचाया जाये इसका प्रशिक्षण भी हमें प्राप्त हो रहा है। यह हमारी टीम के लिए हर्ष का विषय है।-अनिल सकलानी (मुख्य प्रशिक्षक एवं संयोजक)

पांच दिवसीय आपदा शिविर में भाग लेने वाले टीम के सदस्य।

तकनीकी सदस्यों की सुविधा के लिए बनाये गए हैं कई समूह

शांतिकुंज में वेब स्वाध्याय से बह रही ज्ञान सरिता

● पत्रकारिता एवं जनसंचार विभाग

देसंविवि, हरिद्वार : समाज में सद्विचार और सद्ज्ञान फैलाने के लिए अखिल विश्व गायत्री परिवार की मातृ संस्था शांतिकुंज हमेशा से ही तत्पर है। यही से आचार्यश्री पं. श्री राम ने संपूर्ण विश्व में जीवन जीने की कला के सूत्रों को जन-जन तक पहुंचाया। उनके इसी कार्य को गति प्रदान कर रहा है शांतिकुंज का वेब स्वाध्याय। यह ऑनलाइन वॉइस कॉन्फ्रेंसिंग और सामूहिक स्वाध्याय पर आधारित है। मार्च 2008 प्रारंभ हुई इस सुविधा से इंटरनेट उपयोग करने वाला कोई भी व्यक्ति जुड़ सकता है। वेब स्वाध्याय के अन्तर्गत विभिन्न सदस्यों की सुविधा के लिए ग्रुप बनाए गए हैं। इनके नाम है वैस्णवी, मंदाकिनी, ऋतंभरा, आद्यशक्ति आदि।

शांतिकुंज में आयोजित वेब स्वाध्याय शिविर में उद्बोधन देती गायत्री कार्यकत्री।

साप्ताहिक तथा दैनिक ग्रुप डिस्कशन का समय निर्धारित है जो 45 मिनट है। हर दिन अलग विषय पर बात की जाती है जिसमें सभी सदस्य व्यक्तिगत विचार रखते हैं। वेब स्वाध्याय का विशेषता यह है कि सदस्यों के विचार सामूहिक स्वाध्याय के कारण विषय पर प्रगाढ़ होते जाते है। कार्यस्थल पर समय की कमी, पारिवारिक व्यस्तता आदि के चलते गृहणियों व कार्पोरेट व्यक्तियों के लिए अलग से समूह बनाया गया है। गुरुगीता, नवधा भक्ति सीरीज, शिक्षा संजीवनी, पंतजली योग का तत्व दर्शन, स्वर योग का ज्ञान विज्ञान, पर्वों को मनाने परंपरा आदि विभिन्न विषयों पर साप्ताहिक समूहों में चर्चा की जाती है। गायत्री परिवार के वे सदस्य जो स्वाध्याय के लिए समय नहीं निकाल पाते उनके लिए यह श्रेष्ठतम है। इस टीम की कनिष्का का कहना है कि इस माध्यम से हम गुरुदेव के विचारों को दूर-दूर तक फैला रहे है।

हर जिले में 108 बाल संस्कार शालाएं चलाना गायत्री परिवार का संकल्प

समस्त क्रांतियों का आधार बनेगी बाल संस्कारशाला

● भावना रानी भगत, जेएमसी

देवसंविधि, हरिद्वार : हमारी संस्कृति महामानवों के धवल चरित्र से निहाल रही है, हर व्यक्ति का आचरण देवत्व से भरपूर रहा है। इन सब के पीछे था उनका प्रेरणाप्रद बचपन। हम सब जानते हैं कि हमारे व्यक्तित्व का 75 प्रतिशत विकास 5-7 वर्ष की उम्र तक हो जाता है, पारिवारिक पंचशील और आत्मीयता से ओतप्रोत उत्कृष्ट वातावरण से बच्चों के दिव्य संस्कारों का रोपण सहज ही हो जाता था। बालक के बहुआयामी व्यक्तित्व के गढ़ने में माता-पिता-गुरू होते थे, वहीं समाज का भी महत्वपूर्ण योगदान होता था। वर्तमान समस्याओं का एक सही समाधान तथा श्रेष्ठ नागरिक गढ़ने का एक मात्र विकल्प है बालकों को संस्कारवान बनाना।

आज देश में सब कुछ है बस ऐसे व्यक्तित्व नहीं हैं जो देश की गरिमा उजागर कर सकें। दिन प्रतिदिन बढ़ती हुई जनसंख्या। समाज में फैली अराजकता। अराजकता समाज के इर्द-गिर्द घुमती हुई पूरे में फैल चुकी है। इसका मूल कारण है व्यक्तियों में संस्कारों का अभाव। आज हमारे देश में संस्कार हीनता बढ़ती जा रही है। आज देश में न तो गांधी है, न सुभाष, न तिलक और न ही स्वामी विवेकानंद। परंतु ऐसे ही महान व्यक्ति गढ़ने का बीड़ा उठाया है गायत्री परिवार ने। बाल संस्कार शालाओं के माध्यम से देश भर में संस्कारों की खेती का जिम्मा है यह।

इसके अंतर्गत नौनिहालों के शारीरिक, मानसिक, और बौद्धिक विकास की इस योजना में उन्हें मानवीय मूल्यों, सांस्कृतिक विरासत से परिचित कराया जाता है। बच्चों के माध्यम से सांस्कृतिक सामाजिक परिवर्तन किया जा सकता है। बालक गीली मिट्टी की तरह है जिसे किसी भी सांचे में ढाला जा सकता है। अतः बाल संस्कार शाला संचालन के माध्यम से ईश्वरीय विभूतियों से परिपूर्ण परिवार,

समाज व राष्ट्र के उज्ज्वल भविष्य को गढ़ने का गौरव बाल संस्कार शाला मिलेगा।

परमपूज्य गुरुदेव के जन्मशताब्दी वर्ष के पाँच महत्वपूर्ण संकल्पों में से एक है बाल संस्कार शाला। यह एक ऐसा आंदोलन है जिसमें ऐसे आचार्य और शिक्षक गढ़े जाते हैं जो कि नव पीढ़ी में संस्कारों का विस्तार कर सकें। इसी हेतु शांतिकुंज में 30 अक्टूबर से 3 नवम्बर तक एक 5 दिवसीय शिविर का आयोजन किया गया। इसमें आचार्यों, शिक्षकों और परिजनों ने भाग लिया और बाल संस्कार शाला चलाने का प्रशिक्षण प्राप्त किया। इस कार्यक्रम में राजस्थान, गुजरात, मध्यप्रदेश, छत्तीसगढ़, झारखंड, महाराष्ट्र, ओडिशा, पंजाब, हिमाचल आदि राज्यों के लगभग 300 लोगों ने प्रतिभागिता की।

शांतिकुंज व्यवस्थापक गौरीशंकर शर्मा, बृजमोहन गौड़, डॉ. आर. पी. कर्मयोगी, अशरण शरण श्रीवास्तव, दीना बहन, दिनेश पटेल, सुलोचना शर्मा, प्रेरणा बाजपेयी, प्रवीण पांचाल, शीतल पाण्डे, नीलम मोटलानी, अगमवीर सिंह, आशीष सिंह, मंजरी मेहता, सूर्यकांत साहू, बी. आर. सराटकर, कालीचरण शर्मा आदि के द्वारा बाल संस्कार शाला कार्यक्रम में उद्बोधन दिए गए।

शिविर में आचार्यों, शिक्षकों और परिजनों को बाल संस्कार शाला बनाम अश्वमेघ यज्ञ, समग्र क्रांति का आधार बाल संस्कार शाला, बाल मन पर वातावरण का प्रभाव, मीडिया मनोविकारों का जन्मदाता, सीरियलों-फिल्मों का प्रभाव, बाल संस्कार शाला क्यों? संस्कारों की महत्ता एवं विज्ञान, आचार्य गरिमा का बोध, बाल संस्कार का प्राण-वात्सल्य, मनोविकारों से मुक्ति-बाल मनोविज्ञान, सकारात्मक सोंच, प्रेम, प्रेरणा, प्रशंसा एवं प्रोत्साहन, जीवन विद्या, आसन, प्राणायाम, योग, खेल, अभिभावकों की भूमिका एवं श्रेष्ठता, अभिभावकों से संपर्क भव्यता के साथ दिव्यता का संचार, बाल संस्कार शाला का वातावरण, कक्षा के पूर्व की तैयारी, शिक्षण सुझाव व सहायता, डेमो क्लास आदि का प्रशिक्षण दिया गया।

इसके अलावा श्रम, नियमित दिनचर्या, अभिभावकों से जुड़े स्वाध्याय, उपासना का भी प्रशिक्षण दिया गया। आशीष कुमार ने कहा कि इस बाल संस्कार शाला के माध्यम से देश में ऐसी नव पीढ़ी का निर्माण कर सकते हैं जो कि संस्कारवान, आदर्श, राष्ट्रभक्त, चरित्रवान हो। साथ ही देश के हर जिले में 108 बाल संस्कार शालाएं चलना गायत्री परिवार का युग संकल्प है।

प्रखर ने प्रस्तुत की अनोखी मिसाल

● कपिल यादव, जेएमसी

देवसंविधि, हरिद्वार : सपनों से कुछ नहीं होता हौसलों से उड़ान होती है। कुछ ऐसा ही मिसाल प्रस्तुत की है गायत्री विद्यापीठ के 10वीं कक्षा के छात्र प्रखर अग्रवाल ने।

15 वर्षीय प्रखर हमेशा से ही योग, स्पोर्टस व स्कूल की अन्य गतिविधियों में आगे रहा है। कम्प्यूटर में भी रूचि होने के कारण वह अक्सर स्कूल में और बच्चों की

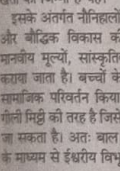

तरह ही गेम खेलता रहता था। एक दिन उसकी इसी आदत के कारण उसे डाँट खानी पड़ी लेकिन उसी डाँट ने उसे एक सही दिशा दिखा दी। तभी से उसने कम्प्यूटर प्रोग्रामिंग सीखने के लिए अपना खाली समय लगाना शुरू कर दिया।

इतनी कम उम्र में कम्प्यूटर लैंग्वेज एवं डाटाबेस कनेक्टिविटी कर उसने गायत्री विद्यापीठ की शानदार वेबसाइट तैयार की है। जिसमें विद्यापीठ के उद्देश्य, सांस्कृतिक कार्यक्रमों की झलक और सराहनीय कार्यों को देखा जा सकता है। इसमें विद्यापीठ के कार्यक्रमों के वीडियो-ऑडियो का यू-ट्यूब पर लिंक दिया गया है। जिसे अब तक 1000 से ज्यादा लोग लाइक कर चुके हैं। प्रखर ने इस कार्य का श्रेय अपने माता - पिता और विद्यालय के प्रधानाचार्य कैलाश माहजन, कम्प्यूटर शिक्षक भूपेन्द्र एवं शांतिकुंज के आई.टी. विभाग को देते हैं। दृढ़ निश्चय के साथ किये गये कार्य को कामयाब होने से कोई नहीं रोक सकता।

प्रखर कहते हैं मुझे कम्प्यूटर की प्रोग्रामिंग के साथ खेलना अच्छा लगता है। और वह क्रिएटिव सॉफ्टवेयर इंजीनियर बनना चाहते हैं।

अपनी आंतरिक शक्तियों को पहचानें

● विष्णु प्रताप मिश्रा, जेएमसी

विख्यात ब्रिटिश लेखक मार्क रदरफोर्ड एक दिन समुद्र के किनारे बैठे थे। दूर सागर में एक जहाज लंगर डाले खड़ा था। वह जहाज तक तैर कर जाने के लिए मचल उठे। मार्क तैरना तो जानते ही थे, कूद पड़े समुद में और तैर कर जहाज तक पहुंच गए। मार्क ने जहाज के कई चक्कर लगाए। मन खुशी से झूम उठा। विजय की खुशी से आत्मविश्वास बढ़ा। लेकिन जैसे ही उन्होंने वापस लौटने को किनारे की तरफ देखा तो निराशा हावी होने लगी, किनारा बहुत दूर लगा। बहुत अधिक दूर।

सफलता के बाद भी निराशा बढ़ रही थी, अपने ऊपर अविश्वास हो रहा था। जैसे-जैसे मार्क के मन में ऐसे विचार आते रहे उनका शरीर वैसा ही शिथिल होने लगा। नौजवान होने के बावजूद बिना वह खुद ही डूबता सा महसूस करने लगे। लेकिन लेकिन जैसे ही उन्होंने संयत होकर अपने विचारों को निराशा से आशा की तरफमोड़ा, क्षण भर में ही चमत्कार सा होने ल गा। वह अपने अंदर परिवर्तन अनुभव करने लगे। शरीर में एक नई शक्ति का संचार हुआ। वह तैरते हुए सोच रहे थे कि किनारे तक नहीं पहुंचने का मतलब है मर जाना और किनारे तक पहुचने का प्रयास है डूब कर मरने से पहले का संघर्ष। इस सोच से जैसे उन्हें संजीवनी मिल गई। उन्होंने सोचा कि जब डूबना ही है तो सफलता के लिए संघष क्यों न करें। उन्होंने किनारे की ओर संकल्प के साथ तैरना शुरू किया। अब भय का स्थान विश्वास ने ले लिया था और हारता मन जीतने की खुशी में झूमने को आतुर था और वह जीत गये।

शिक्षा में आमूलचूल परिवर्तन का संवाहक है विद्यापीठ

प्रश्न : परम् पूज्य गुरुदेव ने गायत्री विद्यापीठ की स्थापना किस उद्देश्य से की थी?

उत्तरः युग ऋषि पं श्रीराम शर्मा आचार्य जी एक अच्छे शिक्षाविद रहे हैं, उनका मानना था कि जब तक शिक्षा के साथ संस्कार नहीं जोड़े जायेंगे तब तक भावी पीढ़ी का नवनिर्माण संभव नहीं हो सकता। शिक्षण में सर्वांगपूर्ण परिवर्तन लाने हेतु आचार्य जी ने शांतिकुंज में एक मंडल के रूप में गायत्री विद्यापीठ की स्थापना की।

प्रश्न : गायत्री विद्यापीठ अन्य सभी विद्यालयों से किस प्रकार अलग हैं?

उत्तरः वर्तमान समय में सभी विद्यालयों में केवल पाठ्यक्रम पर आधारित शिक्षा दी जा रही लेकिन आज आवश्यकता है कि शिक्षा के साथ विद्या का भी समावेश किया जाये वर्तमान समय में यह विद्यालय भारत की प्राचीन गुरुकुल परम्परा को आगे बढ़ा रहा है।

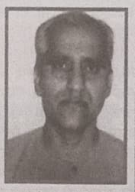

प्रश्न : आपके विद्यालय में विद्यार्थियों के व्यक्तित्व विकास के लिये क्या किया जाता है?

उत्तरः गायत्री विद्यापीठ आज के समय में एक अनोखा विद्यालय है, जहां विद्यार्थियों को शिक्षा के साथ संस्कार देने का प्रयास चल रहा है। उनके व्यक्तित्व विकास के लिये योगासन, व्यायाम, ध्यान, प्रणायाम, यज्ञ आदि के माध्यम से बच्चों को आध्यात्मिक प्रेरणा दी जाती है। साथ ही विभिन्न गतिविधियों के माध्यम से बच्चों में निर्णय क्षमता, नेतृत्व एवं आत्मविश्वास के गुणों का विकास किया जाता है। विद्यार्थियों को वीरता एवं शौर्य के प्रदर्शन हेतु लाठी-संचालन के मार्शल आर्ट, ताईक्वांडो, जूडो-कराटे का अभ्यास भी कराया जाता है।

प्रस्तुत है गायत्री विद्यापीठ शांतिकुंज के प्रधानाचार्य, कैलाश महाजन के साथ हुए अंशुल एवं कपिल के साक्षात्कार के प्रमुख अंशः.

प्रश्न : आपके विद्यालय के शिक्षक अन्य विद्यालयों के शिक्षकों से किस प्रकार अलग हैं?

उत्तरः यहाँ के शिक्षक अपने आप में एक मशाल की तरह हैं वह स्वयं तो प्रकाशित हैं ही, साथ ही वह अपने आचरण से विद्यार्थियों को शिक्षा देते हैं, यहां के सभी शिक्षक आपस में एक परिवार की तरह से रहते हैं। हमारे विद्यालय में शिक्षकों के लिये प्रत्येक वर्ष 21 मई से 29 मई तक शिक्षक पुनर्बोधन शिविरआयोजित किया जाता है, जिसमें शिक्षकों को मूल्यपरक शिक्षा और शिक्षा तकनीकी के बारे में बताया जाता है। विषय का गहराई से ज्ञान देने के लिये बाहर से विशेषज्ञ बुलाए जाते हैं।

प्रश्न : आपके विद्यालय में विद्यार्थियों के लिये मनोरंजन के लिये क्या खास है?

उत्तरः यहाँ के विद्यार्थी जहाँ बोर्ड रिजल्ट में सुर्खियों में रहते हैं, वहीं खेल के मैदान में भी लोगों के छक्के छुड़ा देते हैं उनके ऐसे प्रदर्शन को ध्यान में रखते हुये उनके लिये जिम्नेशियम, टीटी रूम, बैडमिंटन कोर्ट, प्लेग्राउण्ड तथा संगीत व डांस की व्यवस्था की गई है, साथ ही इन्हें सिखाने के लिए विशेष कोच भी नियुक्त किये गये हैं।

प्रश्न : आपके विद्यालय में विद्यार्थियों में समाज सेवा एवं देशभक्ति की भावना जगाने के क्या प्रयास किये जाते हैं?

उत्तरः बच्चों में राष्ट्र भक्ति के बीज अंकुरित करने के लिये राष्ट्र गौरव के बारे बताया जाता है। इसी बात को ध्यान में रखते हुये सभी विद्यार्थियों के लिये स्वतंत्रता का इतिहास विषय अनिवार्य रखा गया है। इस विषय से सम्बंधित प्रश्नोत्तरी का आयोजन समय-समय पर होता है, ताकि उनमें देशप्रेम की भावना का विकास हो।

प्रश्न : वर्तमान समय में शिक्षा का बाजारीकरण हो गया है इस विषय में आपका क्या मानना है?

उत्तरः हजारों वर्षों की गुलामी के कारण हमारा देश ज्ञान एवं विज्ञान के क्षेत्र में पिछड़ गया था। अंग्रेजों ने मैकाले की शिक्षा पद्धति लागू करके देश की भावी पीढ़ी को पतन के गर्त में पहुंचा दिया। आज हर विद्यार्थी चाहता है कि एमबीए,एमसीए, एमटेक आदि करके विदेशी कम्पनियों में अच्छे पैकेज पर नौकरी करें। शिक्षा को पैकेज से ऊपर उठना होगा तभी देश का भविष्य उज्ज्वल हो सकेगा।

रिपोर्ट गायत्री विद्यापीठ की प्रगति के विभिन्न आयामों का लेखा-जोखा

प्रखर प्रतिभाओं की उर्वर भूमि है गायत्री विद्यापीठ

● प्रिया मित्तल, जेएमसी

देवसंविधि, हरिद्वार : गायत्री विद्यापीठ किसी परिचय का मोहताज नहीं, क्योंकि यहां के विद्यार्थी न सिर्फ जिला एवं राज्य स्तर पर बल्कि राष्ट्रीय स्तर पर भी अपनी प्रतिभा का परचम फहरा रहे हैं। फिर चाहे बात बौद्धिक प्रतियोगिता की हो या फिर खेल प्रतियोगिता की, वे हर जगह अपनी प्रतिभा का लोहा मनवा रहे हैं। इस पर आधारित प्रस्तुत एक रिपोर्ट:

भव्य इण्टर कॉलेज में सितम्बर को दो दिवसीय खेल प्रतियोगिता में यहां के कई विद्यार्थियों ने विद्यापीठ का नाम रोशन किया। 100 मीटर दौड़ में मैत्री पंडित ने तीसरा स्थान प्राप्त किया। जूनियर ग्रुप में 100 मीटर दौड़ में गायत्री सैनी ने प्रथम स्थान एवं 200 मीटर दौड़ में साहिल केसरी ने प्रथम स्थान सुरक्षित किया। तीसरे व अन्तिम ग्रुप में 100 मीटर की दौड़ में अंकित ने प्रथम स्थान, लम्बी कूद व ऊँची कूद में सौरभ शुक्ला ने तृतीय स्थान प्राप्त किया।

हिन्दुस्तान द्वारा आयोजित हिमालय बचाओ अभियान, में 5 सितम्बर को 1000 बच्चों को सकल्प कराया गया। 16 सितम्बर को विद्यापीठ मे जिला ताइक्वांडो एसोसिएशन और हरिद्वार स्पोर्टस एकेडमी की ओर से ताइक्वांडो बेल्ट ग्रेडिंग प्रतियोगिता का आयोजन कराया गया। इसमें 35 खिलाड़ियो ने हिस्सा लियाए जिन्हें योग्यता के आधार पर ग्रीन व यलो बेल्ट दिया गया। विद्यापीठ को ताइक्वांडो मे यलो बेल्ट व प्रमाण पत्र दिया गया।

1 नवम्बर को विद्यापीठ के मैदान मे उत्तराखण्ड प्रादेशिक विद्यालय जूडो प्रतियोगिता का आयोजन किया गया। प्रतियोगिता का उद्घाटन शान्तिकुंज के व्यस्थापक गौरी शंकर शर्मा ने किया। प्रतियोगिता मे मुख्य शिक्षाधिकारी आर. के. उनियाल भी मौजूद थे। इसमें 6 जिलों के 95 विद्यार्थियों ने अपनी भागीदारी सुनिश्चित की। छात्रों में हरिद्वार प्रथम व पौड़ी द्वितीय स्थान पर रहा और छात्राओं मे देहरादून प्रथम व हरिद्वार द्वितीय रहा। हरिद्वार ओवर ऑल विजेता घोषित हुआ। विद्यापीठ मे योगा, फुटबॉल, टेबल टेनिस व ताइक्वांडो के राष्ट्रीय स्तर के कोच नियुक्त किये गये हैं और जिला स्तर पर होने वाली योगा व एथलीट प्रतियोगिता मे विद्यापीठ की भागीदारी सुनिश्चित है।

5 नवम्बर को भारत विकास परिषद् द्वारा राष्ट्रीय समूह गान प्रतियोगिता आयोजित की गयी। जिला स्तर पर इसमें 20 स्कूलों के विद्यार्थीयों ने भाग लिया। कार्यक्रम की शुरुआत राष्ट्रीय गीत वन्दे मातरम् से हुई। विद्यापीठ ने जिसने मरना सीख लिया हैप् गीत की प्रस्तुति की और प्रथम स्थान प्राप्त किया।

गायत्री विद्यापीठ ने उत्तराखण्ड राज्य का प्रतिनिधित्व करते हुए हिन्दी व संस्कृत की समूह गान प्रतियोगिता मे प्रथम मिला किया।

दून पब्लिक स्कूल में आयोजित पेंटिंग प्रतिस्पर्धा में 7 विद्यालयों ने भाग लिया जिसमें विद्यापीठ के कक्षा 9 के छात्र विराट सिन्हा ने प्रथम स्थान सुरक्षित किया। पलवल, हरियाणा में राष्ट्रीय स्तर पर आयोजित ओपन योगा टूर्नामेन्ट में विद्यापीठ ने 2 स्वर्ण, 2 रजत व 2 कास्य पदक जीते। कक्षा 10 के प्रखर अग्रवाल व अंजली हिरवानी ने स्वर्ण पदक पर अपनी धाक जमाई। कक्षा 9 के मेधा व प्रकाश सिंह ने रजत और कक्षा 9 व 11 के क्रमशः पार्थ प्रसून जोशी व वसुधा ने कॉस्य पदक अपने नाम किए।

गंगा सफाई अभियान में कक्षा 6 से 12 तक के 400 विद्यार्थियों ने बढ़-चढ़ कर हिस्सा लिया। देव संस्कृति विश्वविद्यालय में आयोजित योगा स्पोर्टस फेडरेशन ऑफ इन्डिया की राज्य स्तरीय योग प्रतियोगिता में गायत्री विद्यापीठ ने 3 पदकों पर अपनी जीत दर्ज कराई। साम्भवी यादव, प्रखर अग्रवाल व राहुल यादव ने स्वर्ण पदक जीत कर विद्यापीठ की शान बढ़ाई। राष्ट्रपति पुरस्कार के लिए फरीदाबाद में आयोजित राष्ट्रपति पूर्वाभ्यास शिविर में यहां के 12 बच्चों की भागीदारी इसके नित बढ़ते कदमों को दर्शाती है।

नव आगंतुक छात्र-छात्राओं का शानदार ढंग से किया गया स्वागत

अनोखा स्वागत समारोह उन्नयन

● लिपि त्यागी, जेएमसी

देसंविवि, हरिद्वार : देव संस्कृति विश्वविद्यालय की हर गतिविधि में विभिन्नताओं का समावेश है। कुछ ऐसी ही विशेषताएं लिए हुए है यहां का नवआगंतुक स्वागत समारोह उन्नयन। उन्नयन का अर्थ है उच्च नवन। उच्च नवन से तात्पर्य है ऊँचे उठने अर्थात आगे बढ़ने की प्रेरणा।

शिक्षा सत्र 2012-13 का उन्नयन समारोह 11 सितम्बर को आयोजित किया गया। उन्नयन 2012 की थीम थी 'नये युवा जोड़ो'। समारोह बेहद रोमांचक एवं भव्य था। समारोह की शुरुआत पारंपरिक रूप में दीप यज्ञ से हुई। नव प्रवेशी छात्र- छात्राओं के उज्ज्वल भविष्य की कामना के उद्देश्य से दीप यज्ञ का आयोजन 10 सितम्बर की शाम 5 बजे प्रज्ञेश्वर महादेव मन्दिर में हुआ। अगली सुबह सभी विद्यार्थियों को यज्ञ के लिए आमंत्रित किया गया। भिन्न-भिन्न स्थानों से आए विद्यार्थियों के लिए यह पारंपरिक स्वागत एक अलग अद्भुत अनुभव था।

11 सितम्बर की शाम मृत्युंजय सभागार में सांस्कृतिक संध्या का आयोजन किया गया। समारोह की आगाज हुआ कुलाधिपति डॉ. प्रणव पण्ड्या एवं शैल जीजी द्वारा दीप प्रज्ज्वलन से। प्रस्तुतियों का आरम्भ स्वागत गीत से हुआ, जिससे पूरा संभागार स्वागतम्-स्वागतम् के मंत्रों से गुंजायमान हो उठा। छात्रावास की दिनचर्या और जीवन शैली पर आधारित एक नृत्य नाटिका ने सभी के हृदयों को छू गया और तालियों की गड़गड़ाहट सभागार में गूंज उठा।

शोले के ठाकुर और गब्बर सिंह पर आधारित एक लघु नाटिका ने सभी के होठों पर मुस्कान बिखेर दी और यहां उपस्थित लोग अपनी खिलखिलाहट को रोक न सके।

देव संस्कृति विश्वविद्यालय की जीवन शैली और बाहरी दुनिया के कॉलेजों की जीवनशैली में अंतर पर आधारित एक नृत्य भी प्रस्तुत किया गया। जिसमें देसंविवि की विशेषताओं से नवआगंतुकों को परिचित कराया गया। बाटल पर पाँव गीत पर नृत्य ने सभी में नए जोश और उमंग का सृजन किया। इस भव्य आयोजन को और भी रोमांचित बनाने के लिए जीजी के लड्डू गौमय फेसपैक जैसी चीज़ों का हास्यप्रद विज्ञापन भी पेश किया गया। विद्यार्थियों को उपहार स्वरूप एक चाबी का छल्ला व कार्ड प्रदान की गया। साथ ही उस शाम भोजन में शामिल स्वादिष्ट खीर ने उन्नयन-2012 को और भी यादगार बना दिया। इस अवसर पर कुलाधिपति महोदय ने विद्यार्थियों को बधाई प्रेषित की।

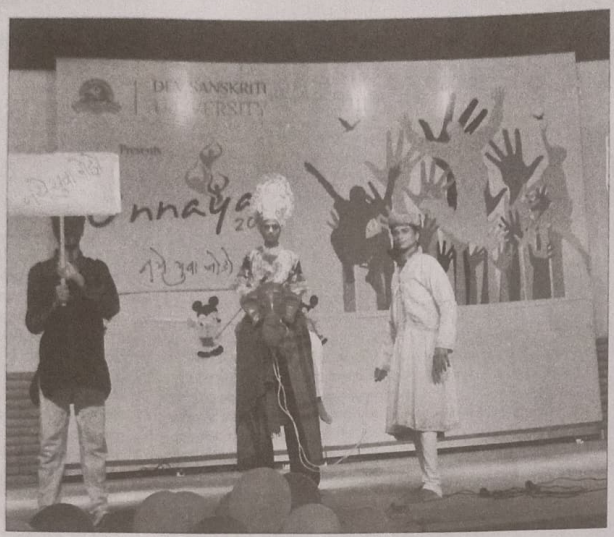

प्राकृतिक जीवन शैली ही है श्रेष्ठ उपचार: डॉ. पंड्या

● अंशुल अनंत, जेएमसी

देसंविवि, हरिद्वार : मेदांता हॉस्पिटल, गुड़गांव एवं देसंविवि के संयुक्त तत्वावधान एवं देसंविवि के प्रांगण में 25 अगस्त को सीएमई सेमिनार का आयोजन किया गया जिसमें उत्तराखण्ड से आए लगभग 1000 चिकित्सकों ने प्रतिभागिता की। सेमिनार में मेदांता हॉस्पिटल, गुड़गांव के प्रख्यात चिकित्सकों ने आधुनिक मेडिकल रिसर्च की महत्वपूर्ण जानकारियों से अवगत कराया।

इस कार्यशाला में विश्वविद्यालय के कुलाधिपति डॉ. प्रणव पाण्डया ने कहा कि मॉडर्न सर्जरी में विज्ञान व अध्यात्म दोनों का समन्वय है। आज लोगों द्वारा अपनाई जाने वाली कृत्रिम जीवन शैली से उपजे कई रोगों का उपचार योग में है और योग को जीवन में लाने के लिये प्राकृतिक जीवन शैली को अपनाना होगा। ईश्वर-स्मरण रखना व रोगों से बचाव ही रोगों का सबसे अच्छा उपचार है। मेदांता हॉस्पिटल में हृदय रोग विभाग के चेयरमेन डॉ. आर.आर. कासलीवाल ने मिशन सेवग्रार्ट विषय पर जानकारी देते हुये कहा कि विश्व के 60 प्रतिशत हृदय रोग के मरीज हैं और इनमें भी युवाओं की संख्या सबसे अधिक है। इस हेतु प्रयास करने की आवश्यकता है। हमारी जीवन शैली की अस्त-व्यस्तता व जंक फूड ने इस रोग को बढ़ाया है इसके लिये आवश्यक सावधानियाँ बरतना अत्यंत जरूरी है। इस अवसर पर डॉ.ए.एन. झा, चेयरमेन, तंत्रिका रोग विज्ञान एवं डॉ. हेमंत सिघल, कैंसर इन्स्टीट्यूट ने अपने अनुभवों शोधों को प्रस्तुत करते हुये उपस्थित लोगों को महत्वपूर्ण जानकारियां दी।

इसी दौरान 25 व 26 अगस्त के दिन शांतिकुंज के शताब्दी चिकित्सालय में दो दिवसीय निःशुल्क स्वास्थ्य परीक्षण शिविर का आयोजन किया गया। जिसमे मुख्यतः कार्डियोलॉजी, न्यूरोलॉजी, ब्रेस्ट कैंसर व आर्थो स्पाइन एवं कई अन्य रोगों से संबंधित 1165 व्यक्तियों ने अपने रोगों की निःशुल्क जांच कराई और उनसे बचाव के उपायों को जाना-समझा।

राष्ट्रभक्ति की भावना से ओतप्रोत रहा रोवर-रेंजर्स शिविर

● ऋषभ मिश्रा, जेएमसी

देसंविवि, हरिद्वार : देव संस्कृति विश्वविद्यालय के प्रांगण में नवम् प्रादेशिक रोवर रेंजर समागम 2012 शिविर का सफलता पूर्वक सम्पन्न हुआ। 4 दिवसीय इस कार्यक्रम में उत्तराखंड के विभिन्न जिलों से लगभग 400 छात्र-छात्राओं ने भाग लिया।

23 नवंबर से 26 नवंबर तक चले इस शिविर में कई प्रतियोगिताओं का आयोजन किया गया। जिनमें नाट्य प्रतियोगिता, निबन्ध, ब्रिज प्रतियोगिता, पोस्टर प्रतियोगिता, झांकी, समुहगान, तम्बू निर्माण, पुल निर्माण, मार्च पास्ट, कलर पार्टी, बी.पी. सिक्स व्यायाम, ईको-रेस्टोरेशन, ध्वज शिष्टाचार, हस्त कौशल प्रदर्शनी आदि सम्मिलित थे। प्रतियोगिता में विजयी प्रतिभागियों को परितोषिक से नवाजा गया। 23 नवंबर को कार्यक्रम का शुभारंभ स्काउट-गाइड ध्वजारोहन के साथ हुआ। इस अवसर पर देव संस्कृति विश्वविद्यालय के कुलपति ने कहा की विद्यार्थियों के संपूर्ण व्यक्तित्व विकास के लिए इस तरह की प्रतियोगिताओं एवं समागमों का आयोजन समय-समय पर जरुरी है। ऐसे आयोजन से विद्यार्थियों में भाई-चारे का विकास होता है और वे एक-दूसरे से बहुत कुछ सीखते भी हैं।

शांतिकुंज व्यवस्थापक गौरीशंकर शर्मा ने शिविर को ज्ञान अर्जन का महत्वपूर्ण साधन बताते हुए कहा कि स्कूलों और विश्वविद्यालयों की शिक्षा से अलग यह राष्ट्रभक्ति और देशभक्ति जगाने वाला ज्ञान है, यहीं ज्ञान आज के दौर के लिए सबसे जरूरी है। शिविर में विश्वविद्यालय के कुलसचिव श्री संदीप कुमार, भारत स्काउट गाइड के राज्य संगठन आयुक्त डॉ. नरेन्द्र शाह, जिला आयुक्त गेंदालाल चैरसिया, विवि के वरिष्ठ शिक्षकगणों, शांतिकुंज के वरिष्ठ कार्यकर्त्ताओं ने भी प्रतिभागिता कर विद्यार्थियों का उत्साहवर्धन किया।

असत्य पर सत्य की विजय का पर्व ही विजयादशमी

● सौम्या तिवारी, जेएमसी

देसंविवि, हरिद्वार : नौ दिनों तक शक्ति के विभिन्न रूपों की पूजा, अर्चना और आराधना करने के बाद दसवें दिन बड़े ही हर्षोल्लास पूर्वक दशहरे का पर्व विश्वविद्यालय में मनाया जाता है। विद्यार्थी दो तीन दिन पहले से ही रावण के विशाल पुतले का निर्माण शुरु कर दिया था और दशहरे के दिन विश्वविद्यालय परिसर में स्थित बास्केट बॉल ग्राउंड में उसे स्थापित किया। यह त्यौहार प्रतीक है बुराई का अच्छाई की जीत का, आसुरी अंतस पर शांति, सौहार्द भरे दैवीय राज्य की स्थापना का। मेघनाथ एवं कुंभकरण सहित रावण के पुतले को दहन के साथ इसे सम्पन्न मनाया जाता है जो कि अहंकार, दंभ, तमस एवं अज्ञानरूपी अहंकार के प्रतीक हैं। व्यक्तिगत जीवन मे इनके संहार-परिष्कार के साथ ऐसे त्यौहारों के सफल आयोजन आयोजन विजयी प्रेरणाओं का संचार होता है।

इस दिन प्रातःकाल से ही छात्र-छात्राएं रावण दहन का बेसब्री से इंतजार करते हैं। शाम 4 बजे छात्रों द्वारा रामलीला का मंचन मृत्युंजय सभागार में किया गया। इसमें प्राचीन घटनाक्रमों को आधुनिकता के रंग में रंगकर वर्तमान समस्याओं से जोड़कर नाटक की प्रस्तुति कर बुराई पर अच्छाई की जीत का संदेश गया।

जिसमें शामिल होता है युग की समस्याओं का समाधान जिसे युगऋषि पं. श्रीराम शर्मा आचार्य द्वारा लिखित 3 हजार से अधिक पुस्तकों से प्राप्त किया जाता है। इन विचारों को अपने जीवन में धारण कर अपने गुण, कर्म व स्वभाव में परिवर्तन करने लिए छात्रों में व्याकुलता स्वतः देखी जा सकती है। शाम 6:15 बजे बुराई का प्रतिक रावण के पुतले को जलाकर विद्यार्थी असत्य पर सत्य की विजय का पर्व मनाया गया। मैदान को चारों तरफ से आकर्षक रौशनी से सजाया गया था जो अंधकार को अपने बाहर व अंदर से दूर करने की प्रेरणा प्रदान कर रही थी।

साथ ही छात्रों के लिए कैंपस में ही मिष्ठान आदि के स्टॉल भी लगे हुये थे भोजनालय में भी स्वादिष्ट व्यंजन बनाये गये। इस दिन सभी विद्यार्थियों ने एक-दूसरे से गले मिलकर अपने बीच के गिले-शिकवों को दूर किया। शाम 8:30 तक कार्यक्रम समापन के पश्चात् सभी अपने आवास को प्रस्थान कर अपने नित्य की दिनचर्या में लग गये।

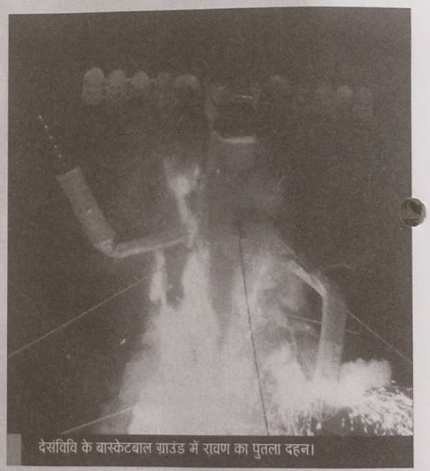

देसंविवि के बास्केटबाल ग्राउंड में रावण का पुतला दहन।

पर्यावरण संरक्षण देव संस्कृति विश्वविद्यालय में मनाई जाती है पटाखा मुक्त दिवाली

ग्रीन दीपावली मनाकर देते हैं पर्यावरण संरक्षण का संदेश

● प्रशांत पांडेय, जेएमसी

विश्वविद्यालय परिसर में वैसे तो हर दिन उत्सव जैसा होता है परन्तु दीपावली के आते ही छात्र-छात्राओं में गजब का उत्साह छा जाता है। उत्साह इसलिए होता है क्योंकि दीपावली के एक दिन पहले छात्र-छात्राओं के प्यारे, अपने श्रद्धेय और विश्वविद्यालय के कुलाधिपति डॉ. प्रणव पण्ड्या जी का जन्म दिन मनाया जाता है।

अपने पिता तुल्य अभिभावक का जन्मदिन छात्रों द्वारा चेतना दिवस के नाम से मनाया जाता है। यह एक ऐसा मौका होता है जब छात्र-छात्राएं अपने भावोद्गार खुलकर अपने श्रद्धेय तक पहुंचाते हैं। तरह-तरह के प्रेरक नृत्य, नाटक और कविताएं प्रस्तुत किये जाते हैं। छात्रों द्वारा श्रद्धेय को फूलों का गुलदस्ता और स्वयं हाथों से बनाये गए कार्डस भेंट किये जाते हैं। श्रद्धेय अपने हाथों से विशेष मिठाई छात्रों को खिलाते हैं। इसके दूसरे दिन दीपावली का पर्व होता है। प्रातः काल सभी छात्र-छात्राएं शांतिकुंज जाते हैं और जीजी एवं डॉ. साहब से लड्डू और दीपावली कार्डस प्राप्त करते हैं।

शांतिकुंज में प्रखर प्रज्ञा और सजल श्रद्धा, अखण्ड दीपक, गायत्री मंदिर का दर्शन व प्रणाम करते हैं। उसके बाद सभी लोग शांतिकुंज में माता भगवती भोजनालय में विशेष पकवान ग्रहण करते हैं। शाम को विश्वविद्यालय रंग-बिरंगी रोशनी से नहाया हुआ प्रतीत होता है ऐसा लगता है मानों आसमान के सारे-तारे देसंविवि में उतर आये हों। यहां की सबसे खास बात यह है कि विद्यार्थी ग्रीन दीपावली मनाते हैं। इस दिन पटाखे न छोड़कर एक पौधा लगाया जाता है तथा दूसरों को भी ऐसा करने के लिए प्रेरित किया जाता है। शाम 6:30 बजे शांतिकुंज में दीपावली पूजन होता है, उस पूजन में सभी छात्र-छात्रायें वहां जाते हैं और वहां पर पूजन के पश्चात् दीपक को प्रज्ज्वलित करते हैं। दीपक प्रतीक है प्रकाश का। अपने अंदर के अंधेरे को दूर कर दूसरों को प्रकाशित करने का मार्गदर्शन देता यह दीपक सभी के मन को नया उत्साह उमंग भर देता है। इसकी छटा शांतिकुंज में सभी को रोमांचित और हर्षोल्लासित करती है।

मन खुशियों से भर जाता है। समाधि स्थल के पास में ही सभी विद्यार्थी अपने साथियों से गले मिलकर उन्हें बधाई देते हैं।

महाकाल परिसर में दीपों के माध्यम से ग्रीन दिवाली मनाते देसंविवि के छात्र व अध्यापकगण।

प्रकृति की गोद में बसा आधुनिक गुरुकुल परिसर

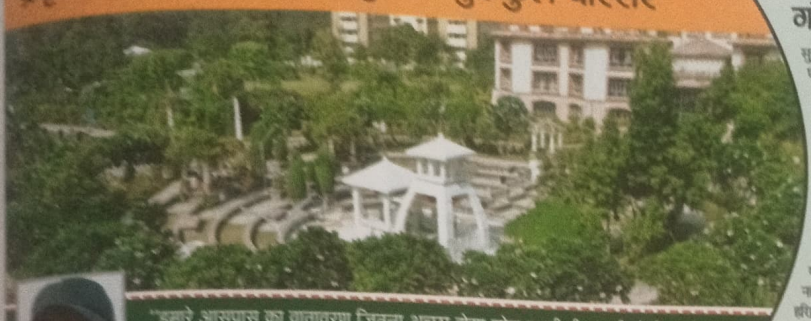

"हमारे आसपास का वातावरण जितना अच्छा होगा सोच उतनी ही अच्छी होगी। जो प्रकृति से जुड़ा होता है वह कहीं न कहीं भगवान से भी जुड़ा रहता है। प्रकृति हमेशा हमें परिवर्तन की प्रेरणा देती है। इसलिए हमें प्रकृति से प्रेम करना चाहिए"

-डॉ. ज्ञान मिश्र, पर्यावरणविद्, देसंविवि

गंगा की गोद, हिमालय की छाया में बसा देसंविवि, प्राकृतिक सुरम्यता और दिव्य वातावरण का एक ऐसा विरल संगम है, जहां शिक्षा के साथ विद्या के अनुपम प्रयोग चल रहे हैं। जहां युगऋषि के संकल्प के अनुरूप युग का नया इंसान गढ़ा जा रहा है। इस मौलिक विशेषता के कारण यहां के वातावरण में एक ऐसा प्राण प्रवाह लहलहा रहा है, जिसका प्रखर अहसास किए बिना आगंतुक रह नहीं सकता। यह मात्र शब्दों में वर्णित तथ्य नहीं, अनुभूतिजन्य सत्य है।

हरिद्वार-ऋषिकेश के कोलाहल भरे मार्ग से विश्वविद्यालय के सामने पहुंचते ही अद्भुत शांति के साम्राज्य का अहसास मिलता है। दोनों ओर हरे भरे वृक्ष मानों आगंतुकों का स्वागत करते प्रतीत होते हैं। मार्ग में सामने सुदूर गढ़वाल की पर्वत श्रृंखलाएं और पीछे शिवालिक की पहाड़ियां हिमालय के आंचल में घिरे होने की दिव्यअनुभूति देती हैं। मार्ग में दोनों ओर अशोक के पेड़ जैसे पथिकों का सारा शोक हरते हुए सीधे महाकाल के मंदिर की चौखट एवं सुन्दर पुलवारियों से घिरा हुआ विश्वविद्यालय का हृदय केन्द्र है। ॐ नमः शिवाय और महामृत्युञ्जय मंत्र की ध्वनियों से गुंजायमान इसका प्रांगण दिव्य ऊर्जा से आप्लावित रहता है, जिसमें पल भर का ध्यान चित्त का असीम शांति देता है।

परिसर का मनोरम दृश्य आगंतुकों के चित्त को आल्हादित करता है। थोड़ा अंदर प्रविष्ट करने पर व्यक्ति यहां की हरियाली के संग सर्वधर्म समभाव की सुगंधी का भी अहसास करता है। यहां विभिन्न धर्मों के नाम से बनी वाटिकाएं, दिव्य औषधियों एवं वृक्षों से अटी हैं। बुद्धवाटिका में पीपल, साखू और जामुन, तीर्थंकरवाटिका के वट, देवदार, साल, कुरानीवाटिका में हीना, जैतून और खजूर, गुरु के बाग में टाली, पीपल और रीठे के पवित्र वृक्ष और धन्वंतरिवाटिका में ब्राह्मी, शतावरी, पुनर्नवा आदि वृक्ष वनस्पतियों में निहित दिव्य भावों का अहसास दिलाते हैं। आश्चर्य नहीं हर आगंतुक यहां के दिव्य वातावरण का स्पर्श पाकर कुछ ऐसी अनुभूति पाता है जो उसे यहां के किसी रूप में जुड़े रहने को सद्प्रेरित करता है।

तकनीक के हाईटेक तारों से लैस विवि

आधुनिक शिक्षा के साथ वैदिक और वैज्ञानिक अध्यात्मवाद का अद्भुत समन्वय देवसंस्कृति विश्वविद्यालय की मौलिक विशेषता है। स्थापना के महज 10 वर्षों में यह देश-विदेश में तेजी से अपनी पहचान बना चुका है। यहां शिक्षा के साथ विद्या भी प्रदान की जाती है। विश्वविद्यालय का उद्देश्य छात्रों को भारतीय संस्कृति का संवाहक- राष्ट्रनिर्माता बनाना है।

वर्तमान स्थितियों को ध्यान में रखते हुये सारे विश्वविद्यालय को टेक्नोलॉजी के तारों के साथ जोड़ दिया गया है। परिसर के सभी विभागों में कम्प्यूटर और इंटरनेट की व्यवस्था की गई है, जिससे कम्प्यूटर के विद्यार्थियों के अलावा अन्य विभागों के विद्यार्थी भी कम्प्यूटर की दुनिया की सैर कर सकें और नवीनतम जानकारियों से रूबरू हो सकें।

यहां की लाइब्रेरी पूरी तरह से टेक्नोलॉजी से लैस है। बार कोडिंग होने के कारण पुस्तकें आसानी से इश्यू एवं डिपॉजिट होती है। पुस्तकों का एक पूरा डाटा बेस तैयार किया गया है। ई-लाइब्रेरी में सभी विषयों की उपयोगी सामग्री राइट कर रखी गई है, जिससे आवश्यक सामग्री आसानी से उपलब्ध से प्राप्त हो सके। पूरा परिसर कम्प्यूटर नेटवर्क द्वारा आपस में जुड़ा है। कम्प्यूटर एवं हार्डवेयर से संबंधित समस्या की त्रुटि के लिए एक सॉफ्टवेयर बनाया गया है जिससे परेशानी का निराकरण जल्दी हो जाता है। वैदिक विज्ञान के साथ कम्प्यूटर के समन्वय को लेकर भी विश्वविद्यालय अपनी उड़ान भर रहा है और आने वाले समय में अध्यात्म और तकनीकी का यह गठजोड़ सुखद आश्चर्य को जन्म देगा।

देव मानवों को गढ़ने की टकसाल के रुप में विकसित देव संस्कृति विश्वविद्यालय की हॉस्टल लाइफ स्वयं में तप एवं अनुशासन की प्रयोगशाला के रुप में मौलिक विल्क्षणता लिए हुए है। विवि पूरी तरह से आवासीय है, जिससे की यहाँ पढ़ रहा हर विद्यार्थी निर्धारित अनुशासन में ढल कर एक सुगढ़ व्यक्तित्व का स्वामी बन सके।

हॉस्टलों के नाम उद्देश्यों के अनुरुप ऋषियों के नाम पर आधारित

अरविंद, पाणिनी, संघमित्रा, निवेदिता हैं छात्रावासों के नाम

आध्यात्मिकता से ओतप्रोत दिनचर्या एवं सुरक्षा के व्यापक इंतजामों से लैस

अद्भुत छात्रावास

देव संस्कृति विश्वविद्यालय की विशेषताओं में से एक है यहां के छात्रावास। छात्रों के सर्वांगीण विकास हेतु समर्पित यहां के 5 छात्रावास सभी प्रकार की सुविधाओं से लैस हैं। इनमें से दो- अरविंद एवं पाणिनि भवन छात्रों के लिए, अन्य दो- संघमित्रा एवं निवेदिता छात्राओं के लिए तथा एक छात्रावास विदेशी छात्रों के लिए हैं। एक तरफ जहां छात्रावास के चारों ओर प्राकृतिक वातावरण गुरुकुल आश्रम का एहसास दिलाता हैं, वहीं भवनो के अंदर की व्यवस्था इसकी अत्याधुनिक भव्यता को दर्शाती है।

यहां श्रद्धेय कुलाधिपति जी के स्नेह-संरक्षण में छात्रों के व्यक्तित्व को कुछ यूं गढ़ा जाता है, जिससे वे आगे चलकर समाज के लिए उपयोगी साबित हों। इन छात्रावासों में छात्र-छात्राओं के लिए निर्धारित दिनचर्या उनके सम्पूर्ण विकास को ध्यान में रखकर बनाया गया हैं।

अध्यात्मिकता के कलेवर में दिनचर्या : यहां पर छात्रों के दिन की शुरुआत प्रातः 4:30 बजे प्रातः कालीन प्रार्थना से होती हैं। इसके पश्चात छात्र-छात्राएं सुबह 5:30 बजे यज्ञ में उपस्थित होकर उसे संपन्न करते हैं। यज्ञ की सकारात्मक ऊर्जा लेकर सभी अपने-अपने कक्षाओं में निर्धारित समय पर जाते हैं। उसके पश्चात् विद्यार्थी दिनभर के अध्ययन की व्यस्त दिनचर्या के बाद जब पुनः हास्टल आते हैं तो चौबीस घंटे बिजली की उपस्थिति में उनके स्वाध्याय में कोई विघ्न नहीं होता। पढ़ाई से होने वाले तनाव को खत्म करने के लिए हास्टल दिनचर्या में विशेष नादयोग को जोड़ा गया है। संध्या छह से लेकर सवा छह बजे के माध्य नादयोग (ध्यान) का ध्यान उनकी दिन भर की थकान दूर कर देता है। तदोपरांत भोजन इत्यादि ग्रहण करके विद्यार्थी रात्रि 8 बजे तक अपने हॉस्टल वापस लौटते हैं। यह दिनचर्या रात्रि प्रार्थना के साथ समाप्त होती है।

ऐसी अदभुत दिनचर्या के अलावा कुछ खास बातें जो यहां के छात्रावास को अलग बनाती है वो है यहां का वातावरण। एक तरफ यहां के छात्रों के बीच सहृदयता और भाईचारा भरा संबंध है साथ ही है व्यसनमुक्त माहौल। आधुनिक दौर मे जहां अन्य होस्टलों मे छात्र-छात्राएं शोर शराबा और डिस्को पार्टी करते हैं वहीं यहां के छात्र-छात्राएं दीप यज्ञ के माध्यम से अपना जन्मदिन मनाते हैं। वहीं अगर बात करें शारीरिक विकास की तो इंडोर स्टेडियम, व्यायामशाला की सुविधा के अलावा सभी छात्रों को योग का विशेष प्रशिक्षण दिया जाता है। छात्राओं के लिए विशेष सुविधाएं जैसे हॉस्टल लाइब्रेरी आदि की व्यवस्था भी की गई है। बच्चों के स्वास्थ्य को ध्यान मे रखते हुए कैंपस चिकित्सालय के साथ-साथ ठंड मे गर्म पानी की भी विशेष व्यवस्था भी हैं।

सुरक्षा के व्यापक इंतजाम : सभी छात्रावासों में सुरक्षा के व्यापक इंतजाम है। खुफिया कैमरों से परिसर की निगरानी के साथ ही चौबीस घंटे विशेष प्रशिक्षित गार्ड छात्रावासों की पहरेदारी करते हैं। परिसर में कोई असमाजिक तत्व प्रवेश न कर पाए इसके लिए पूछताछ के बाद ही बाहरी परिजनों को प्रवेश दिया।

निगरानी 44 सीसीटीवी कैमरों से होती है विवि परिसर की पहरेदारी

आधुनिकतम सुरक्षा व्यवस्था से सुसज्जित विवि परिसर

● पत्रकारिता विभाग

देसंविवि, हरिद्वार : देसंविवि की परिसर की गतिविधियां निरंतर अपने प्रगति पथ पर अग्रसर है। यहाँ नित नई योजनायें बनाई जाती है, जो यहाँ के विकास के लिये सर्वोत्तम हों। इस कारण हर पल यहाँ परिवर्तन एवं हलचल होती रहती है, जो यहाँ के परिसर को गढ़ने के साथ-साथ यहाँ निवास करने वाले परिजनों एवं विद्यार्थियों के जीवन को भी सँवारती हैं।

इस बात को ध्यान में रखते हुये सुरक्षा व्यवस्था में एक नये अध्याय की शुरूआत हुई, जिसमें सुरक्षा को ध्यान में रखते हुये विश्वविद्यालय परिसर में सीसीटीवी कैमरे लगवाये गये, जिसका उदघाट्न चार जुलाई, 2012 को कुलाधिपति डॉ. प्रणव पण्ड्या के करकमलों द्वारा हुआ। इस सुरक्षा नियंत्रण कक्ष द्वारा विश्वविद्यालय के प्रमुख प्रशासनिक कक्षों, शैक्षिक भवनों, छात्रावासों, कैंटीन और प्रवेश द्वारों को सीसीटीवी के अंतर्गत रखा गया है।

इस प्रकार विश्वविद्यालय परिसर मे आने-जाने वाले असामाजिक तत्वों पर नजर रखी जायेगी, वही इसके माध्यम से विद्यार्थियों के अनुशासन पर भी दृष्टि होगी। इन कैमरों के माध्यम से देश-विदेश से आने वाले पर्यटकों की सुरक्षा पर ध्यान दिया जायेगा। सांस्कृतिक कार्यक्रम के दौरान अवंछनीय तत्वों पर भी नजर रखी जायेगी।

विश्वविद्यालय के सुरक्षा अधिकारी कर्नल उदयवीर मिश्रा द्वारा इस दिशा में विशेष प्रयास किए गए हैं। परिसर स्थित आयुर्वेद फार्मेसी, गौशाला एव गायत्री विद्यापीठ की सुरक्षा की विशेष व्यवस्था की गई है। इस तरह 44 सीसीटीवी कैमरों से सुसज्जित परिसर सुरक्षा की दृष्टि से संपन्न है और यह कैमरे गार्डों के साथ एक बेहतर निगरानी व्यवस्था का का नज़ारा पेश कर रह हैं।

यहां पर श्रमदान ही यज्ञ है

● पत्रकारिता विभाग

देसंविवि, हरिद्वार : सामान्य परिस्थिति में लोग दान शब्द का एक ही अर्थ निकालते है, दूसरों को कोई वस्तु या धन देना। परन्तु गायत्री परिवार के संस्थापक और संरक्षक पं. श्रीराम शर्मा आचार्य ने दान शब्द से श्रम, समय तथा अंश को जोड़ कर उसका महत्व कुछ यूँ बढ़ाया कि आज गायत्री परिवार जैसा बड़ा संगठन खड़ा हो गया।

आज गायत्री परिवार के सभी प्रमुख केन्द्रों तथा शाखा संस्थानों में सभी छोटे बड़े कार्यों को समयदानी ही किया करते है। हमारे संस्थान की अलग पहचान श्रमदान और महायज्ञ से होती है। चाहे शान्तिकुंज हो या गायत्रीकुंज कोई भी बड़ा कार्य करने लिए श्रमदान महायज्ञ का आवाहन होता है, और देखते ही देखते असंख्य श्रमदानियों द्वारा वह कार्य चुटकियों में संपन्न हो जाता है।

देव संस्कृति विश्वविद्यालय में ये महायज्ञ गुरुकुल परंपरा को भी दर्शाता है। जिस प्रकार वैदिककाल में शिष्य गुरुकुल आश्रमों में मिल जुलकर आश्रम की देखभाल किया करते थे, वैसे ही इस विश्वविद्यालय में भी छात्रो को स्वेछा से इस महायज्ञ में हिस्सा लेने का अवसर मिलता है। छात्र-छात्राएँ इस मौके का भरपूर फायदा भी उठाते हैं।

इस बारे में एमजेएमसी की छात्रा रचिता श्रीवास्तव का कहना है कि उन्होंने विश्वविद्यालय कैम्पस में आयोजित श्रमदान से काफी कुछ सीखा है, इसके साथ-साथ खूब इन्ज्वॉय भी किया है। यह महायज्ञ हमें श्रमदान के महत्व के साथ-साथ एकता की शक्ति का बोध भी करवाता है।

यह जंग जीतनी है

किसी वस्तु, परिस्थिति या घटना के वास्तविक खतरे से कहीं अधिक भय का एहसास ही फोबिया है।

फोबिया कोई असाध्य रोग नहीं है। इससे आसानी से निजात पाया जा सकता है। बस जरूरत है तो समय रहते इसकी पहचान हो जाने की।

डर एक ऐसा शब्द जो हमारे जीवन के साथ प्रारंभ होता है और जीवन के अन्त तक साथ रहता। हम जीवन भर न जाने कितने जाने या अनजाने डरों से घिरे रहते हैं। बचपन में जब बच्चा शैतानी करता है या कहना नहीं मानता तो माँ या उसके बड़े- बाबा आ जाएगा, जूजू और न जाने किन-किन चीजों से डराते हैं, जिससे बच्चा सही चीज सीखे। परन्तु मानव मन जीवन पर्यन्त न जाने ऐसे कितने जूजुओं से डरता रहता है। हमारी शिक्षा प्रणाली से लेकर हमारे धार्मिक कर्मकाण्ड तक डर के आस पास घूमते रहते हैं। ये नहीं करोगे तो ये हो जाएगा, शनि का दान दो नहीं तो फेल हो जाओगे और भी न जाने क्या-क्या। एक हद तक यह डर ठीक भी है। अच्छा करने या करवाने के लिए डर का होना जरुरी भी है। पर आखिर कैसे पता चले यह डर हद के अन्दर है या हद पार कर चुका है? आइये जानते हैं प्रेक्टिसिंग साइकॉलोजिस्ट श्रद्धा त्रिपाठी के संग कि कहीं हमारा डर फोबिया तो नहीं।

फोबिया सबसे ज्यादा पाया जाने वाला मानसिक रोग है परन्तु दूसरा सत्य यह भी है कि बहुत कम लोग इसका समुचित इलाज करवाते हैं। ये लोग फोबिया के साथ जन्म लेते हैं, जीते हैं और इसी के साथ चले भी जाते हैं। यहां प्रश्न उठता है कि हम कैसे जानें कि हमें फोबिया है या सामान्य डर। तो आइये आपको अवगत कराते हैं फोबिया के कुछ प्रकारों के बारे में।

DSM-IV (डायग्नोस्टिक एण्ड स्टैटिस्किल्स मेनुअल ऑफ मेन्टल डिसऑर्डर) के अनुसार - किसी विशेष वस्तु, घटना या परिस्थिति से होने वाला एक प्रकार का असंगत या अकारण भय है जो मुख्यतः उस विशेष वस्तु, घटना या परिस्थिति के प्रति लगातार एक avoidance के रूप में प्रकट होता है। अर्थात जब यह जानते हुए कि हमें अमुक वस्तु, परिस्थिति या घटना से कोई नुकसान नहीं होने वाला, फिर भी हम भय अनुभव करें या लगातार उसे avoid करते रहें।

इस संसार में जितने भी प्रकार की वस्तु, व्यक्ति, घटना या परिस्थियाँ सम्भव हैं, फोबिया उतने ही प्रकार का हो सकता है परन्तु समझने के लिए DSM-IV & ICD 10 (इन्टरनेशनल क्लासीफिकेशन ऑफ डिजिजेस) में इसे तीन तरह से जाना जाता है-

एगोरा फोबिया : यह परिस्थिति से होने वाले असंगत भय का एक उदाहरण है। यह क्लीनिकल अभ्यास में सबसे ज्यादा पाया जाने वाला फोबिया है जो पुरुषों की अपेक्षा महिलाओं में अधिक पाया जाता है। जैसे घर की परिचित व्यवस्था से दूर जाने, खुले स्थानों, आम जगहों, भीड़-भाड़ वाली जगहों का असंगत भय इसी के अंतर्गत रखे जाते हैं। इस फोबिया से पीड़ित व्यक्ति में जैसे-जैसे इसका प्रभाव बढ़ता है धीरे-धीरे व्यक्ति अपने आप को खुद ही अपने घर में नजरबंद सा कर लेता हैं।

सोशल फोबिया : यह सामाजिक क्रियाकलापों से होने वाला असंगत भय है। किसी व्यक्ति को यदि निरंतर यह भाव बना रहता है कि लोग उसका सतत् मूल्यांकन कर रहे हैं और वह खुद में ही शर्मिंदगी महसूस करता रहता है। इसे कुछ उदाहरणों से समझा जा सकता है-शर्म से चेहरा लाल हो जाने का भय, सामूहिक रूप से खाने पीने से, जनता या समूह में बोलने से, मंचीय प्रस्तुति से, समूहों में भाग लेने में, सबके सामने लिखनें में (जैसे चेक पे हस्ताक्षर करने में), अनजान लोगों से बात करने में, कक्षा या मीटिंग में उत्तर देने आदि में उत्पन्न होने वाला असंगत भय सोशल फोबिया ही है।

विशिष्ट फोबिया : किसी विशिष्ट वस्तु या परिस्थिति से असंगत भय को विशिष्ट फोबिया कहा जाता है। इसमें किसी परिस्थिति से persistent avoidence दिखाई देता है। प्रायः पाये जाने वाले विशिष्ट फोबिया हैं- ऊँचे स्थानों से भय (एक्रोफोबिया), जन्तु से भय (जूफोबिया), अजनबियों से भय (जीनोफोबिया), दर्द से भय (एल्गोफोबिया) एवं बन्द स्थानों से भय (क्लस्ट्रोफोबिया)। यह सूची अंतहीन है।

उपचार या उपाय : यदि आपमें, आपके परिवार या आस पास किसी में ये लक्षण दिखाई पड़ रहे हैं, तो तुरंत ही मनोचिकित्सक या क्लीनिकल साइक्लोजिस्ट से संपर्क करें। इस रोग के उपचार के लिए मनोविज्ञान की कई विधाओं का उपयोग किया जाता है। वर्तमान में हिप्नोथैरेपी के माध्यम से भी इसका इलाज किया जा रहा है। देव संस्कृति विश्वविद्यालय के मानसिक चिकित्सालय में फोबिया के इलाज के साथ-साथ अन्य रोगों के इलाज की भी सुविधा उपलब्ध है। इसके अतिरिक्त अगर आपमें है साहस तो आज से ही **'वह करना शुरू करें जिससे डर लगता है'**। क्योंकि डर के आगे जीत है....।

Side Effect @ facebook

वर्तमान में हर कोई सोशल साइट्स का दीवाना है। चाहें वह जवान हो, बूढ़ा हो या फिर बच्चे या महिलाएं। हों भी क्यों न। इसकी मदद से आप खोज पा रहे हैं अपने बचपन के साथियों को और पुनर्जीवित कर रहे हैं अपने रिश्तों की गर्माहट को। संवाद की स्थिति से अगर देखें तो यह साइट्स सच में अद्भुत हैं। आजकल तो पुलिस भी साक्ष्य के रूप में इन साइट्स के कंटेंट का उपयोग करने लगी है। जाहिर है सोशल साइट्स का महत्व तो बढ़ना ही था। सच कहा जाए तो आज की तेज दौड़ती जिंदगी में संप्रेषण का सबसे सशक्त माध्यम बनकर उभरी हैं सोशल साइट्स। विश्व की तीसरी दुनिया कहा जाने वाला फेसबुक युवाओं के दिल की धड़कन है। परंतु हर सिक्के के दो पहलू होते हैं, ठीक उसी तरह सोशल नेटवर्किंग साइट्स से लाभ के साथ-साथ नुकसान भी हैं। गौरतलब है इन साइट्स में किसी को पहचाना नहीं जा सकता। हम सभी जनाते भी हैं कि इंसान से बड़ा कोई जानवर नहीं है। इन्हीं सोशल नेटवर्किंग साइट्स के जरिए तमाम घिनौने किस्से अब तक सामने आ चुके हैं। वर्तमान हालात इन साइट्स पर दोस्त बनाने में जल्दबाजी नहीं करें। अंजान लोगों से कभी भी दोस्ती न करें। क्योंकि आजकल कई लोग अश्लीलता फैलाने, धार्मिक उन्माद को जन्म देने के लिए भी इन साइट्स का उपयोग कर रहे हैं, तो जरूरत है आपके सचेत रहने की।

फेसबुक पर दोस्त बनाते समय सावधानी बरतें, दोस्त बनने का आग्रह स्वीकारने से पहले करें पूरी छानबीन, क्योंकि सामने वाला व्यक्ति आपको कभी भी नुकसान पहुंचा

संजीवनी है गेहूं का ज्वार

आपको क्या को कोई असाध्य रोग है। बहुत दिनों से इलाज कराते-कराते परेशान हो चुके हैं। तो देव संस्कृति विश्वविद्यालय के श्रीराम स्मृति उपवन के जूस सेंटर पर मिलने वाला ज्वारे का रस आपकी आरोग्यता की पूर्ण गारंटी है।

प्रकृति ने हमें अनेक नेमतें दी हैं। उन्हीं में से एक है गेहूं के ज्वार। दिखने में घास के समान गेहूं के ज्वार को औषधि विज्ञानियों ने संजीवनी बूंटी की संज्ञा दी है।

इनकी माने तो गेहूं के ज्वारे में अनेक अनमोल तत्व व रोग निवारक गुण पाये जाते हैं, जिस कारण इसे अमृत का दर्जा जाता है। प्रसिद्ध आहार शास्त्री डॉ. बशर के अनुसार क्लोरोफिल, गेहूं के ज्वारों में पाया जाने वाला प्रमुख तत्व है को इसे सूर्य शक्ति कहा जा सकता है।

गेहूं के ज्वारे रक्त संबंधी रोगों, सर्दी, अस्थमा, ब्रोंकाइटिस, स्थायी सर्दी, साइनस पाचन संबंधी रोग, पेट में छाले, कैंसर, आतों की सूजन, दांत सम्बंधी समस्याओं, दांत का हिलना, मसूडों से खून आना, चर्म रोग, एक्जिमा, किडनी सम्बधी रोग, गुप्त रोग, कान के रोग, थायराइड ग्रंथि के रोग व अनेक ऐसे रोगों का निदान करने में सहायक है जिनका इलाज आसानी से संभव नहीं हो पाता। इसलिए वर्तमान में चल रही चिकित्सा पद्धति के साथ-साथ इसका प्रयोग कर आशातीत लाभ प्राप्त किया जा सकता है। ज्वारे के मुख्य तत्व क्लोरोफिल तथा हिमोग्लोबिन में काफी समानता पाई जाती है इसीलिए गेहूं के ज्वारों को हरा रक्त कहा जाता है। कई आहार शास्त्री इसे रक्त बनाने वाला प्राकृतिक परमाणु कहते हैं। इनकी प्रकृति क्षारीय होती है। ये पाचन संस्थान व रक्त द्वारा आसानी से अवशोषित हो जंाते हैं।

अतः कहा जा सकता है मानवीय जीवन में ज्वारे का उपयोग स्वास्थ्यवर्धक है। साथ ही यदि कोई स्वस्थ व्यक्ति इसका सेवन करता है तो उसकी जीवनी शक्ति में अपार वृद्धि होती है। इस हरी संजीवनी से असाध्य से असाध्य रोग का इलाज किया जा सकता है।

विदेशी मेहमानों से गुलजार पावन गंगा तट

इन दिनों हरिद्वार नगर के गंगातट पर प्रवासी पंछियों का जमवाड़ा देखा जा सकता है। प्रकृति एवं पक्षी प्रेमी पर्यटक इसका खूब लुत्फ उठा रहे हैं।

गंगा में इन दिनों जलस्तर घटने के कारण असंख्य छोटे-बड़े टापू उभर आये हैं। इन्हीं सभी टापूओं को विदेशी परिदों ने अपना बसेरा बना लिया हैं। गंगा से सटे राजाजी राष्ट्रीय पार्क और खादर क्षेत्र की गंगा तटीय जंगलों में भी इन पक्षियों का कलरव सुनाई दे रहा है। हांलाकि अब तक पक्षियों की करीब 64 प्रजातियां ही गंगा में सर्दियों का प्रवास करने के लिए आई हैं, लेकिन ज्यों-ज्यों ठंड बढेगी त्यों-त्यों इन मेहमान पक्षियों की संख्या और प्रजातियों में बढ़ोत्तरी की संभावना हैं। विगत वर्ष में नवबंर से मार्च तक हरिद्वार जनपद में गंगा क्षेत्र में आनेवाले परिदों की 100 से अधिक प्रजातियों की गणना की गई थी। इन आने वाले विदेशी परिदों में उच्च हिमालयी क्षेत्रों, तिब्बत, चीन साइबेरिया, रूस और अन्य यूरोपीय देशों के पक्षी शामिल हैं। यूरोपीय पिनटेल, ब्लैक स्पोटेड बर्ड, डकैटल, पोचार्ड, लंबिग और टील जैसे पक्षी लोगों को खूब आकर्षित करते हैं। कशमीर के मलाई, तिब्बत, महिसंग, मध्य एशिया के सफेद काले रंग के आईबिस और साइबेरियन स्वान भी इन दिनों अपने कलरव की मधुर ध्वनि संगीत वातावरण में फैला रहे हैं। वहीं स्टार्क, पेटिक की गुंज, ब्राह्मी डक और सोलबर्स आदि चिड़ियों की चहचहाअट देखते ही बन रही है। सूर्योदय से सूर्यास्त तक इन पक्षियों का दीदार करने के लिए इन दिनों भीमगोड़ा बैराज और घड़ क्षेत्र में लोगों का तांता लगा रहता हैं।

इस क्षेत्र में विदेशी पक्षियों की बढ़ती संख्या को देखते हुए अगर इस इलाके को बर्ड वाचिंग केंद्र के रूप में विकसित किया जाए तो प्रकृति के रहस्य में रूचि रखने वाले लोगों के लिए गंगा तट कई अजूबों से पर्दा उठाने वाला हो सकता हैं। वैसे शासन द्वारा इस इलाके को पर्यटन के रूप में विकसित करने की कारवाई चल रही हैं। परंतु लाख टके का सवाल यह है कि इन प्रवासी मेहमानों के प्रति हमारा भी कोई उत्तरदायित्व है या नहीं। गंगा में बढ़ता प्रदूषण, वनों की अंधाधुन कटाई, गंगा का सूखता जल स्त्रोत- यदि ऐसे बदस्तूर जारी रहा तो वो दिन दूर नहीं जब न सिर्फ ये प्रवासी पंक्षी बल्कि गंगा भी हमसे दूर-बहुत दूर चली जाएगी। अतः आवश्यकता दायित्व बोध की है। हम गंगा की पवित्रता, वनों की अंधाधुन कटाई रोककर पर्यावरण एवं गंगा की गरिमा बनाए रखने में सफल होंगे, बल्कि आनेवाली पीढ़ियां भी धन्य-धन्य होंगी और गंगा की पावन कल-कल धारा एवं प्रवासी पंछियों के मधुर कलरव से हम यो हीं आनंदित एवं गुलजार होते रहेंगे। हालांकि इसके अलावा यहां विकासनगर के पास स्थित आसान बैराज में भी साइबेरियन पक्षियों का आगमन है। जिसे देखने बड़ी संख्या में देशी एवं विदेशी पर्यटकभी आते रहते हैं।

स्वामी, मुद्रक एवं प्रकाशक डॉ. प्रणव पंड्या, देव संस्कृति विश्वविद्यालय हरिद्वार द्वारा प्रकाशित त्रैमासिक समाचार पत्र। प्रधान संपादक : डॉ. प्रणव पंड्या। संपादक : डॉ. चिन्मय पंड्या।
कार्यकारी संपादक : डा. सुखनंदन सिंह। संपादन : अजय निराला। इनपुट हेड : दीपक कुमार, आउटपुट हेड : आदित्य शुक्ला। फोटो : जयकिशन । पेज संयोजन : उमा शंकर तिवारी Email: sanskritisanchar@gmail.com